अनन्तश्रीसाकेताधीशदाम्पत्यपादपद्माभ्यांनमः ।

अथ परेशसम्बन्धाभरण ।

दो०-बंदौंश्रीसतगुरुसुखद, बचन प्रभाकर रूप ।
लहैंजीव जिनकेउदय, निज अव्यक्तस्वरूप १
श्रीगुरुचरणसरोज निज, हृदय सुप्रेमतड़ाग ।
तामें सेवे सविधि नित, पावे त्रिविधि पराग २

(अथ त्रिविधि सेव्य स्वरूप सेवा)

दो०-सेव्यस्वरूप अनूपनिज, सेवा सरस सुदेश ।
एते त्रिधा प्रसिद्ध पर, सतचित आनँद शेश ३
अव्यक्तात्म सुप्रतिनिधी, संस्कार सम्बन्ध ।
पावै जीव प्रयत्न करि, सदगुरु मिलनप्रबन्ध ४
निज सुख तजि सेवै सदा, सदगुरुचरण सुदेश ।
तब पावे आनंद निधि, दंपति महल प्रवेश ५
गुरु सेये सतगुरु मिलैं, सतगुरु सेये लाल ।
लालमिले विलसत हियो, सखा सुकौशलपाल ६

इति बन्दना ।

अथोद्देश्यपुनः ।

दो०-नामरूप लीला गुणरु, धामब्रह्मश्रुतिशीश ।
सो तारक बर मंत्र युग, बीज जपत गौरीश ७

श्री साकेताधीश प्रभु, दम्पति सुन्दरश्याम ।
नाम सुधारस सुखदश्री, सीताराम ललाम ८

अथ बिधेय ।

दो०—नामरूपबिनुबस्तुनहिं, सदसद्उभयप्रकार ।
मर्म विपश्चित जानिहैं, जिनके बिमलबिचार ९
नामरूप जगजीवकों, जीव करावत लक्ष ।
नामरूप बिनु होत नहिं, जीवहिं जीवप्रत्यक्ष १०
जीवरूप युग जानिये, नित्यानित्य विशेष ।
संसृति मान अनित्यहै सुखमय नित्य अशेष ११
ईश रूप नहिं द्विधाविधि, एक अनूप अभेद ।
नित्य सच्चिदानन्दघन, जाको गावत वेद १२
प्रथम ईश अरु जीव दोउ, रहे एकही सङ्ग ।
भये अगोचर जीवको, ईश प्रपञ्च प्रसङ्ग १३

अथ श्रीसीतापतिबचनप्रति ।

दो०—प्रथमईशमहराजने, जीवहिंअतिप्रियजान ।
भेज्यो साधन देशनिज, देइ प्रबुद्धि महान १४
जाइ जीव कीजिय सबिधि, साधनममसुखलागि ।
करिदृढ़प्रीतिप्रतीतिप्रण, सतगुरुपदअनुरागि १५
सतगुरुसे सम्बन्धलहि, द्रुत आओ ममपास ।

देहौं नित्य निकेत सुख, निज समीप बरबास १६
करि प्रणाम आयो तुरत, जीव सुसाधनभूमि ।
नर शरीर नाते असत, तिनमें पड्यो जुघूमि १७
असतहिं मान्यो सत्यकरि, यो प्रपंच की रेख ।
निजउरमं निज हस्ततें, लिखिलीन्हीं हठिएख १८
मलिन रेख परदा भई, प्रभुको लखत न जीव ।
तातें नाना योनि भ्रमि, पावत दुःख अतीव १९
ऐसी भ्रम तम रेखकों, सतगुरु देत मिटाय ।
होसिशिष्यदृढ़ बिशद मति, निरसैवैसतभाय २०
नित्य महल रस भेदके, भेदी भाव उदार ।
ऐसे सतगुरु खोजिये, उरधरि सरसबिचार २१
ऐसे सतगुरु कपट तजि, सेवे शिष्य सुजान ।
तनमनधन अर्पैसविधि, रहै न निजतनभान २२
सविधि सुखद सद शिष्यकी, सेवा सरस निहारि ।
उर प्रकटै रघुबंशमणि, देत पदारथ चारि २३
नित्यानित्य स्वरूपके, गुप्त प्रगट जे भेद ।
तवक्रमते प्रकटैं सकल, मिटै रेख भव खेद २४
अरु बाढ़ै अतिप्रीति शुचि, निज स्वरूपकीचाह ।
पर स्वरूप आनंदनिधि, सेवा सुधाप्रबाह २५
तब सतगुरु प्रभु शिष्यपर, कृपाकरत ततकाल ।
दै परेश सम्बन्धरस, क्षणमें करत निहाल २६

जो चाहे सम्बन्ध रस, पर स्वरूप निजरूप।
प्रथम संप्रदा रीति गहु, बहिरन्तर अनुरूप २७
शुभाचार देहिक सविधि, आतम करमपुनीत।
सुरति सुखमनासरस करि. प्रकटैरहसविनीत २८
प्राणायाम विविक्त श्रुति, कीजिय बीजबिचार।
अर्थसहित नित पर मिलन, तबप्रगटैसुखसार २९
वैधी विधि रागाऽनुगा पराऽनुरक्ति विधान।
क्रम ते होत उदोत उर, विस्तृत परा प्रधान ३०
परा सुपरम स्वतन्त्रहै, उर उपजावत चाह।
दै अनन्यगतिकी सुमति, टेक एक निजनाह ३१
तब परेश सम्बन्धकी, रति उपजै रस रूप।
बढ़ै सु उर अवकाश लहि, पराऽनुरक्तिअनूप ३२
बहुविधि पराऽनुरक्तिके, भेद अनूप अनन्त।
प्रभुकी परा समृद्धितेहि, वेद वदै किमि अंत ३३
ज्यों ज्यों पराऽनुरक्तिके, भेद खुलैं समुदाय।
त्यों त्यों प्रभु संबंधकी, रति सनेह सरसाय ३४
सब भेदनकी मूल दृढ़, सेवा त्रिविधि प्रकार।
सतगुरु प्रभु परिकर साविधि, सेवे परमउदार ३५
इनकी सेवासे खुलैं, सकल भेद अनुकूल।
यथा वृक्ष गति देखिये, संप्राति करगत मूल ३६
सदासङ्ग इनके रहै, सब सुख तजिमतिधीर।

यथा भाव सेवै सविधि, मुदित उदार गँभीर ३७
बिनुआज्ञा नहिं जाय कहुँ, निज इच्छा अनुकूल।
सेवै श्री सतगुरुचरण, देवराज सुखमूल ३८
श्रीसद्गुरु अपमानकों, मानै मान अनूप।
ऐसे शिष्य सुजानकी, बढ़ै प्रीति अनुरूप ३९
ज्यों कुलाल घटको गढ़ै, अन्तर करुणारीति।
त्यों सद्गुरुनिजशिष्यकों, अपमानैकरिप्रीति४०
ज्योंज्योंश्रीसद्गुरु करैं, सरस शिष्यअपमान।
त्यों त्यों तेज सुशिष्यमें, बाढ़ै सुमतिप्रमान ४१
होइ न सुबश स्वतन्त्र शिष, करै न अणु अपराध।
सेवै नित अनुतापयुत, लहै सुरहस अगाध ४२
षटरहस्य अनुरक्तिकी, बाढ़ै विहित विवेक।
उठत उमङ्ग प्रमोद उर, सुमति भावकी टेक ४३
उत्कण्ठा अनुताप नति, कार बिरामुत्साह।
शुचि उदार षटरहस ये, परखत प्रभुमनचाह४४
ये रहस्य प्रभुकी कृपा, आकर्षै सुखमूल।
जो अधिकारी एकरस, रहै सदाअनुकूल ४५
मर्म भेद अनुरक्तिके, अनुदिन करै बिचार।
अमद सकलमत त्यागिमत, अद्वैतादिबिकार४६
कुमति कौल मत दुष्टजे, असद बिजाती कोय।
तजैसुबुधकरिग्लानिप्रिय.निजकुटुंबकिनहोय४७

स्नान पान नहिं कीजिये, कबहुँ बिजाती संग ।
पंक्ति दोष तिनसे लगै, होय भजन ब्रतभंग ४८ ।
ऐसे यत्न अनेक हैं, इनकी गति उरधारि ।
तब सेवै अनुरक्ति पद, निज सिद्धान्तविचारि ४९ ।
बढ़ै लगन निज भावकी, इमिप्रयत्न उपचार ।
पर परेश सम्बन्धरस, कब मिलिहैं सुखसार ५० ।
निज स्वरूपके रङ्गभरि, पर परेश के संग ।
कब चलिहौं आनन्दयुत, भरिउर सरस उमंग ५१ ।
इमि अधिकारीके हृदय, बाढ़ै प्रीति अपार ।
क्षण २ बीतैं कल्पसम प्रभु सम्बन्ध बिचार ५२ ।
देखि सुजन अनुरागप्रभु, द्रवै तासु रुचिजानि ।
वत्सलसख्य शृंगारनत, देत भाव निजमानि ५३ ।
प्रभु प्रेरित सद्गुरु हृदय, उमगी कृपा अनूप ।
देउँसविधिशुचिशिष्यतोहिं, परसम्बंधस्वरूप ५४ ।
करो प्रथम उत्सव सरस, तद्गुणगान प्रधान ।
नृत्य पवित्रसुयंत्रबहु, सुरगति ताल बिधान ५५ ।
वेदी विधिवत् कल्पिये, मंगल द्रव्य अनेक ।
उपबर्हण शय्या सुखद, वसन एकते एक ५६ ।
भूषण सबिधि सुदेशसब, युत परिकरप्रभुकाज ।
हाटक नग मुक्तानके, सजे सुपानिप साज ५७ ।
हाटक घट द्वादश बिशद, पल्लव दीपविशाल ।

पट उपहित पहिराइये ,सुमनसुगन्धितमाल ५८
फल अनेक मेवा विविधि, सुमन सुसौरभ जाल ।
सघृत दीप बहु जालिका, तोरणवृन्दरसाल ५९
चित्रित लंकृत यूप शुभ, कदली भवसुखसार ।
रचो वितान प्रधान कल, चित्र अनेक प्रकार ६०
अद्भुत अरुण अबीर अरु, रोचन केशरि राग ।
इनते चित्रित कीजिये, वेदी युत अनुराग ६१
स्वर्ण रत्न रजतादि के, पात्र अनेक प्रकार ।
विविधि खिलौना केलिविधि,कंदुकादिसुखसार ६२
नानाविधि आसन सुखद, रचो अनेक प्रकार ।
बैठे तिनपर मुदित मन, रघुकुल राजकुमार ६३
स्वर्णसूत्रसम वायुपट, ध्वज पताक सुखरासि ।
बांधो हाटक दंड रचि, शुचिसुगन्ध वरवासि ६४
हाटक नग मुक्तन जटित, सिंहासन अनुकूल ।
चमरछत्र छदविजनबहु, स्वर्णदंडसुखमूल ६५॥
षटरस व्यंजन भांतिबहु, भरि भरि थार अनेक ।
सौरभ मिश्रितक्षीर दधि, समधिहव्यसविवेक ६६
औरो मंगल द्रव्यबहु, प्रीति समेत सुजान ।
सकल सजाओ सारवित, वहिरन्तर सविधान ६७
यथाशक्ति वितते करो, तथा भावना रीति ।
यह उत्सव आनन्दयुत, उरभरि प्रीतिसुरीति ६८

यह निदेश सुनि शिष्यबर, परमानन्द समेत ।
उत्सबसौं जसम्हारिस निरखि सुबिधि सुखलेत ६९
तब सतगुरु निजशिष्यको, पर परेश सम्बन्ध ।
देत भये हर्षित हृदय, रस रतिभाव प्रबन्ध ७०
सनमाने परिकर सबिधि, राघवीय अनुरागि ।
सात्वकीयशुचिद्विजनको, दियेदान सुखपागि ७१
श्रीसतगुरु ते पाइकै, पर परेश सम्बन्ध ।
बाढ़ी रति अद्भुत अकथ, सरस प्रमोद प्रबन्ध ७२

श्रीमत्सद्गुरुर्जयतितमाम् ।

श्रीसाकेतनिकुंज

अनन्तश्रीसीतारामभद्र

केलिकादंबिनीग्रंथप्रारम्भः ।

दो०—श्रीसतगुरुवरबचनरवि, रबिकुलप्रभुश्रीराम ।
जयश्रीजानकिजानिजय, मिथिलाअवधललाम १
नाम रूप लीला ललित, गुन समूह रस संच ।
शान्त दास्य शृंगारवर, वत्सलसख्य सुपंच २
आश्रित अधिकृत पारषद, कुलउद्भव प्रभुसंग ।
सखा सुहृद प्रिय नर्मनव, रँगे युगल रसरंग ३
गौणमुख्य इनमें बिबिधि, भेदभाव रस ज्ञात ।
पै श्री रघुबर मिलनहित, सबहि वसीलाख्यात ४
परतम परमपरेश पर, श्री साकेत पुरेश ।
श्री सीता श्री राम बिबि, रूप अशेष रसेश ५
नैमित्तिक अरुनित्यरस, केलि अखण्डअनन्त ।
रमत नित्य रघुबंशमणि, दक्ष मैथिलीकन्त ६
सख्या षोड़शशंख श्रुति, योजनकहतप्रमान ।
श्री साकेत निकेत बर, अगमअगोचर जान ७
तीनि आवरण तीनिपुर, परिषा पंच तमारि ।

मध्य सुखद साकेतपुर, चहुंदिशिगोपुरचारि ८
प्रथम आवरण एकपुर, जो प्रसिद्धगोलोक ।
तदुपरि शान्तानक कहत, तदुपरिअवधअशोक ९
तीनि आवरण मध्यमय, ताते त्रैपुर नाम ।
परमरम्य साकेत के, चहुंदिशिलसतललाम १०
द्वै परिषा हैं प्रथम पुनि, क्रमते तीनि प्रमान ।
चिन्तामणिचन्द्रार्कमणि, निर्मितभूमिविधान ११
मध्य मध्य मङ्गल मयी, पुरट प्रभूत अनूप ।
महलपंक्तिमरकतखचित, मनहुलसतनभभूप १२
त्रिगुण तीत ये तीन पुर, तिनके मध्य ललाम ।
कामद श्री साकेतपुर, मिथिलाअवधसुनाम १३
श्रीसाकेतांतर अमित, महल महारस रूप ।
युगलललनलीलाललित, केलिस्थलअनुरूप १४
पुनि सहस्र द्वादश विशद, महानिकुञ्जविनोद ।
सब महलनमें मुख्यतम, जहँरसरहतप्रमोद १५
नित्य एकरस लाल दोउ, बिहरत भरे उमङ्ग ।
नवलनेह प्रियपरस्पर, बाढ़त नितनवरङ्ग १६
सो०-लालनकीसुखमूल, कुँवरिकिशोरीलाड़िले ।
ललीसर्बसुखमूल, श्रीरघुकुलमणिलाड़िली १७
दो०-कुँवरकुँवरिदोउकेलिकल, बिहरतअवधकिशोर ।
करकञ्जनकंदूक लसत, युगलललनचितचोर १८

चोपभरे चौपड़चतुर, जनक लली रघुलाल ।
केलिकुतूहलरसभरे, चहुंदिशिनिरखहिंबाल १९
गञ्जीफा शतरञ्ज प्रति, बाजी बदि बदि लाल ।
हार जीत निजभक्त प्रभु, देतलेत सुखजाल २०
कबहुँकि सरयूसरि निरखि, मंदस्मितदोउलाल ।
चलिये २ बदत प्रभु, हरषि चढ़े सुखपाल २१
सुखद चारुशीला स्वबश, सर्वेश्वरी सुजान ।
दंपतिरुचिलखिललकि उर, दीन्हीरजाप्रमान २२
सो सुनि डङ्कापर्वते, अर्वत हने निशान ।
खर्बन विश्वा बसुतिया, नटनलगींकरिगान २३
नाक नटी अरु नर्तकी, अमित विदूषक बाम ।
चोपदार सीमंतिनी, सङ्ग चलींअभिराम २४
वंशी बीन मृदङ्ग रव, देश देशके यन्त्र ।
बजन लगे धुनि संकुलित, मनहु वेद वर मंत्र २५
रोशनचौकी चौघड़ा, जलतुरङ्ग बहुरङ्ग ।
सजिसजिगजसावकनपर, बजनलगेइकसङ्ग २६
देव यक्ष गन्धर्ब नर, नाग नागरी वृन्द ।
सौभागिनितिनकी सुता, मनहु शिषाश्रुतिछंद २७
सो०-सकलमौज करधार, भरीं परस्पर नेहनव ।
शुभ गुन रूपउदार, ललीलाल सँगसाजिचलीं २८
दो०-ललीलाल रघुबंशमणि, जेहिसुखपालबिराज ।

चलींसङ्गमिलिरङ्गभरि, चहुँदिशिसबिधिसमाज ॥
स्वेत सुमन कलिकानके, तत्वत्रिविधिमनिसींव ।
शीतलमंदसुगन्धशुचि, नित्यानंद अतीव ३०
तिन तत्वनके चमरबर, दुहुँदिशिप्रभाप्रसारि ।
चन्द्रचन्द्रिकाचमक चकि, रहतनबनतनिहारि ३१
श्वेत छत्र मङ्गलमयी, घन घुमरण्ड नवरङ्ग ।
दुहुँदिशिअलीअलोलचित, करगहिचलतउमङ्ग ॥
झालरि जाल सुहावने, मणि मुक्ता बहुरङ्ग ।
छत्रनके चहुँओर कल, कहकबि भौमप्रसङ्ग ३३
सो०-षोड़श रबि समतूल, छत्र लड़ैती लालके ।
झुकिझुकिझालरिकूल, मिलितमंजुउज्वललसनि
दो०-विविधिब्यजनबहुरङ्गके, नागरिकरनउदोत ।
लघुदीरघशोभितसबिधि, धौंशशिसबितागोत ३५
चन्द्रमुखीरबिकिरनिमुख, दुहुँदिशिध्वजकचनार
पृथकपृथकदोउदलनके, अमितराजउपचार ३६
हाटक मुक्तामंजुमणि, खचित दंडकर धारि ।
दुहुँदिशिसखी नकीबनव, बोलहिंबिरदप्रचारि ३७
कुन्दनमणि कल्पितसजीं, फुलवारी चहुँओर ।
कल्पवृक्षलतिकाकलित, कलिकाकुमुदमरोर ३८
माणिक मंडित पुरट घट, दीपावली बिनोद ।
चहुँदिशिमङ्गलद्रब्यसजि, अलीचलींभरिमोद ३९

देशदेशकी भामिनी गजगामिनी सुदेश।
सद्विद्यालंकृतलसहि, दम्पित जान प्रदेश ४०
उपवर्हण गादी सुखद, हीरक मणिमय साथ।
चौकी चित्रविचित्रवर, किमि कहिबरनौंगाथ ४१
कुरसी सहजासन विविधि, हाटक जटितकितान।
चलीं किंकरी करनगहि, सज्जितसुरँगवितान४२
पुरुष स्त्री गत चिन्ह गज, अश्वादिक बहुसङ्ग।
चतुर अली तिनपर लसहिं,रँगीसख्यरसरङ्ग४३
अमित वरार्ध परार्धविधि, युत्थयुत्थ सुखमूल।
अश्वगामिनी नागरी, चलीं ललनदोउकूल४४
अस्त्रशस्त्र असिचर्मशुचि, सुरुचिभक्तिकरधारि।
अनीव्यूह रचिविविधिविधि,चलिरसवीरप्रचारि॥
अमितअनी अध्वातटन, दुहुँदिशि पंक्तिविधान।
रत्तणहित गज अश्वचढ़ि, ठाढ़ीसखीमहान४६॥
आगे पदचर नागरी, गुन आगरी अनीक।
तिनपीछे अश्वावली, तिनपीछे गजलीक ॥४७॥
या प्रकार नौरँग अनी, भूषण बसन अलोल।
कौस्तुभ कंठाग्रीवलर, अंगद कटकअमोल ४८॥
श्रीनिमिकुलमणिलाड़िली,श्रीरघुकुलमणिलाल।
युगुलललनपरिकरअमित, किमिबरणौंछविमाल
श्रीकामदेंदुमणि कुँवरवर, श्रीरघुबर हितकाज।

युगललनसँगनितरहतशोभितसुहृदसमाज ॥
ललीलाल मुद देनहित, खग अनेक बहुजाति ।
पालितसखी पढ़ावहीं, बोलहिं नानाभांति ॥५१॥
बोलहिं द्विज शिचकनकसे, शुकपिक हंसचकोर ।
जैमिथिलापतिलाड़िली, जैश्रीअवधकिशोर ५२॥
प्राणनाथ रघुबंशमणि, युगललन चितचोर ।
वारैं लखि सुखपालमें, रबिशशि अमितकरोर ५३
प्रभुराजत सुखपाल में, छैल छबीले लाल ।
अस्तुतिकरैं नकीब कबि, सूतपुराणिकबाल ॥५४॥
अमित अस्तवक फूल फल, मेवा सुमन सुवस्तु ।
डालिन भरि २ संगमें, चलीं सुखद शुभरस्तु ॥५५॥
जेहि सुखपाल बिराजहीं, श्रीरघुकुलमणिलाल ।
शोभाकिमि बरणनकरौं, मनहुँ उदयरबिबाल ५६
अष्ट अष्ट दुहुँदिशि जटित, दंडपरम गम्भीर ।
कलपवृक्ष सम्भूत कल, कुडमल उदितसमीर ५७
जाम्बूनद जालीजटित, कटित कटाव अनीक ।
चुन्नीमानिक इंदुमनि, बिंदु सयुक्त सलीक ॥५८॥
बिच २ मुक्तन की मिलित, लहरी तरल तरंग ।
सबिधि सुदेश प्रदेशनग, नानाबिधि बहुरंग ॥५९॥
अष्ट अष्ट सुखपाल के, दण्डराज सुखचन्द ।
मन्दप्रभा नभचंद है, ये नितप्रभा अमन्द ॥६०॥

प्रभु सुखपाल कृपाल के, अष्ट अष्ट भुजदण्ड।
धनुषबाण तिनपरलसत, अंकितपुरटअखंड६१॥
बलयाङ्गदपहुंची बलित, कलित कुशल कुलधौत।
नूतनबित चिन्मयविसद, अनउपमेयउदौत६२॥
शुभगशिरनशोभितसबिधि, चारुचन्द्रिकाचिन्ह।
तिमिमुद्रिकाउदोतअति, दुहुँदिशिभालनभिन्न॥
कंठीग्रीव अतीवछबि, लसति तुलसिका तेज।
निर्मितयुगुलअनादिअज, सबकहँबिंदासेज ६४॥
सतचितघन आनन्दनिधि, प्रभुसुखपाल सुदंड।
बहुरबिशशि उपमारहित, अद्भुतप्रभाप्रचण्ड६५॥
सो०-शीशनपुरटउसीर, चिंतामणि मरकतखचित
पद्मराग भवनीर, किंजल्कन कलँगीकलित६६।
सजे सबिधिशिरबन्धु, तुर्रालटकनिहलनिहिय।
हीरनजटितसुगंध, ध्यानगम्यपैअगमअति६७

इतिश्रीसाकेताधीश अनन्तश्रीजनकनन्दिनीकान्तकृपालअनंतश्रीरामलाल ज्येष्ठबंधु श्रीमदुत्तरकोशलाधिपराजराजेंद्र भ्राताात्मजश्रीरघुबंशकुमारलाल श्रीकामदेंदुमणिदेवजी सुहृद श्रीराघवेंद्रसखाजीकृत श्रीसाकेतनिकुंज श्री सीतारामकेलिकादम्बिनीग्रंथ श्रीसरयूसरिविहार र्थागमनविनोद बर्णनोनाम प्रथमोमेघः ॥१॥

दो०-अबसुखपालशृंगारकिमि कहौंअवदश्रुतिशेश
बहिरन्तरप्रतिसुछबिफबिकिमिरबिकाविराकेश

बनीबनिककिंजल्कमय, केलिबिबिधिबिधिजाल ।
छत्र्योपरिसुखपालके, बिलुलितप्रभाबिशाल २॥
पद्मराग मानिके बने, बिच बिच बिंदु मगोत ।
जटितजवाहिरपोतनन, चहुँदिशिइंदुउदोत ॥ ३॥
अमितरङ्ग मुक्तानकी, खचित किनारी कोर ।
महराबैं जंत्रित जटित, लखिबिधितजीमरोर४॥
जाली झालरिकर्णिका, चहुँदिश मंगलरूप ।
मिलित सुमुक्तनकीलड़ी, जड़ीबड़ी अनुरूप५॥
मणि निर्मित कुसुमस्तवक, पद्मराग रसराज ।
हरितपीततोरणबिबिधिचहुँदिशिललितसमाज
स्वर्णतंत्व मणितंत्वमैं, पाट परमरमनीय ।
परदाअतिझीने सुखद, कसे कांतिकमनीय॥७॥
सो०-मध्यमधुर पर्यङ्क, कुसुमसारसंचितसजी ।
पूरणप्रभा मयङ्क, लखिअतिमतिशारदलजी ८॥
कोर कोर पचरङ्ग, सुमन सबिधि सुरतरु लसे ।
कलिकनकुमुद सुढंग, मृदुमाधुरी उदोअति९॥
दो०अतिरमनीयरसेशकर, रचितकलितकमनीय
सेजसुमनसुखपालकीत्रिभुवनछबिदमनीय१०
उपवर्हण उन्नतलसहिं, युग्मसुपृष्ठ प्रदेश ।
सखीस्वरूप बनायबिधि, जनु मुद्रित राकेश११॥
मधुर ललित लंबित लसैं, दुहुँदिशितकियाओर ।

दक्षिण बाम ललाम छबि, जनु संपति शिरमौर १२
उप तकिया अति मधुर पुनि, चहुं दीशि प्रभा प्रकाश ।
जनु उरगणा तिय रूप धरि, राजत सहिं चहुं पास १३
अंतर पट चहुं दिशिन तत, शुचि सौरभ सुखरूप ।
चित्रित मणिन विचित्र बर, सज्जित सबिधि अनूप ॥
बनानि सुप्रभु सुखपालकी, मैं किमि कहौं बनाय ।
शेष शारदा विष्णु विधि, कहत न रहत लजाय १५
बाहक प्रभु सुखपालकी, अली अनंत अपार ।
तिन पदरज बंदन करौं, बंदनीय सुखसार १६
जिनकी शुभपद रेणुको, भव विधि विष्णु सुरेश ।
सकुच सहित बंदन करत, अंतापुर न प्रवेश १७
जै सुखपाल प्रबाहनी, अली सुखद सब काल ।
जिनके बश साकेत पति, सदा लड़ैती लाल १८
हे सतचित आनन्द घन, आप सर्व रसरूप ।
निज प्रभु अग्रज जानि मोहिं, कृपा करिय अनुरूप १९
युगल ललन रघुबंशमणि, मेरे प्राण अधार ।
तद्यपि परिकर की कृपा, बिनु न होइ निस्तार २०
जै जै जै सुखपालकी, अधिदेबी सर्बज्ञ ।
गुप्त केलि सिय लालकी, देहु जानि मोहिं अज्ञ २१
अति प्रसन्न गौरांग तन, दण्ड दण्ड प्रति युत्थ ।
यौवन धरि गुन आगरी, चलैं सुचाल अस्वत्थ २२

समयसमय स्वरराग युत, युगुलनाम रघुचन्द ।
जै श्रीरघुबंशेश्वरी, बदति चलीं सुखकन्द २३
यान प्रवाहक अलिनके, सुनिसुनि स्वरसङ्केत ।
वाद्य प्रवादक सखीगण, तिमिथम्भनगतिलेत२४
कबहुँकि लखिरघुलालछबि, यान प्रवाहकबाल ।
प्रेमविवश नहिं अङ्गसुधि, नृत्य करहिंदैताल २५
अब इनके शृङ्गार मित, कहि रसरीति प्रमान ।
बिनु सतगुरु कर प्राति प्रभु, शरन न लेत सुमान२६
स्वर्णसूत्र सम्पादिका, साटी विविधि प्रकार ।
कोरन जड़ी जवाहिरी, छोरन मुक्ताधार २७
चामीकर रसभीनकी, बिचबिच लहर सुदेश ।
हरित अरुणसूक्ष्म विशद, कहं द्युतिचंद्रप्रदेश२८
उन्नत अंशन भुजनपर, कलित कंचुकी तेज ।
निजनिजरुचि रङ्गन रँगीं, रसशृँगार रँगरेज २९
बने कंचुकिनमें विविधि, स्वर्णसूत्र नय पान ।
किसलय बूटे बेलि बल, कल अवरेब कितान३०
को कहिसके जड़ाव बहु, सूक्ष्म गौरव नाहिं ।
जड़ित कंचुकी जाल युत, सबकेअङ्गसोहाहिं ३१
लहँगा लोहित बरणबर, चुनन अलौकिक घेर ।
सबके अङ्ग प्रदेश निधि, मणिन गोखुरू फेर ३२
सो०--तेहिनीचे युग रेख, स्वर्ण तेजमयएकरस ।

पुनिबिबिलहरिअशेष, मध्यमध्यमाणिकजटित॥
अंगुल अष्ट प्रमान, पाट पुरट मणियोगअति।
लहँगन चहुंदिशि जान,लसतमनहुकबिभौमभलि
जहँलगि अद्भुत तेज, है चितशक्तिस्वरूपसब।
जानि नपुंसक भेद, पुं स्त्री गत चिन्ह सब ३५
दो०—ताते प्रभु परिकर विषे, है उपमाके योग।
भोक्ता श्रीरघुकुलतिलक,सकल वस्तु जगभोग३६
औरहु नानाजातिके, गोटा गोट सुरङ्ग।
चित्रितलहँगनमेंललित,जानु सुभामिनिअङ्ग ३७
तरु ऊपर कोरन लगी, नवरँग मुक्तनधार।
छबिसमुद्र लहँगा लसहि, तिय अङ्गनसुखसार ३८
जड़ित जवाहिर जगमगत, छड़े कड़ेके सङ्ग।
पायजेब पगपान पुट, चुटकी चित्रित रङ्ग ३९
अनवट बिछिया काकली,शुक पिक हंसन बाल।
जनुकिलकतकलकंठलखि, बहुपरिकरासियलाल
चुनिन जड़ित जञ्जीरपग, काकुनिकनिकप्रसङ्ग।
अँगुरिन ऊपरपटलरी,चहुँदिशि युग्मउमङ्ग ४१
जड़ित जवाहिर तासुपर, पद्मराग कृत फूल।
अतिसुंदर सूक्ष्म विशद,मध्य सुपगसमतूल ४२
सो०मध्यललितपगपान, चहुँदिशि जालीमणिनमय
मुक्ता ललितललाम, बिच२ कलिकाकामधुक॥

दो०-जेहरि नूपुर मालती, तोड़ा जटित जँजीर ।
जान नागरिनके पगन, लसतसुखद गम्भीर ४४

सो०-प्रभु परिकरकीबात, अगमअगोचरजानिये ।
पग भूषण बहुब्रात, किमिबरणौंएहिकप्रगट ४५

दो०-कनककरधनिनकीलरी, क्षुद्रघंटिकालीक ।
करिकिंकिणिमणिजालयुत, जनुद्विजबालअनीक

कटिप्रदेश मुक्तन जटित, पट पुनीत पचरङ्ग ।
स्वगत मेखलामोदघन, लहँगामिलितप्रसङ्ग ४७

नख पुट पर्वप्रदेशिनी, छल्ला मुँदरी भीन ।
हस्तजाल अरु आरसी, मिलितघूँघुरूभीन ४८

कङ्कन पहुँची माधवी, मङ्गलमुखी मरोर ।
नवलनागरी नील मणि, जटितजवाहिरकोर ४९

बकुल जाल अरु बङ्गली, कर कठुलारसरासि ।
कलाजालकलिकावली, अष्टवलयअलिभासि ५०

अग्र पछेला कटकबर, चूड़ी विविध सुदेश ।
यान नागरिनके लसत, सौभागिनी रसेश ५१

भुजदंडनअङ्गदलसत, पूरित प्रभा प्रकाश ।
बाजूबंद सुनीलमणि, कञ्चन जटितसुभास ५२

ग्रीव ललित चम्पाकली, चन्द्रहार मणिहार ।
तोड़ा गुंज गँभीर जव, जड़ित जवाहिरदार ५३

हेकल हसुली दाड़िमी, कंठ पोत पचरंग ।

दुलड़ी तिलड़ी पचलड़ी, कठुला रङ्ग प्रसङ्ग ५४
गुलूबन्द कण्ठाकलित, पुरट प्रणीत हुमेल।
मुक्ताजाल मरोरमा, चोखूटिका समेल ५५
बहुविधि यन्त्र बिशालमणि, जटितलालभवनीर।
सबकेउर शोभितबिबिधि, बखशे सियरघुबीर॥
ढार दामिनी झूमका, कर्णफूल रसरूप।
चामीकर बनिजन मिलित, वाले परमअनूप ५७
कर्ण किरनि कचजाल प्रिय, हाटक तंत्वप्रयोग।
पद्मरागललितादिमनि, निर्मितकुसुम सँयोग ५८
प्रभुप्रसन्न हित चिन्हजे, प्रथम कहे समुभाय।
युगुल नामअङ्कितलसत, सबके अङ्ग सुभाय ५९
ललित चंद्रिका चिन्हकरि, चिन्हित सबकेभाल।
दुहूँदिशि मुद्रित मुद्रिका, युगुलनामसियलाल ६०
श्रीसाकेत पुरेश कर, धनुर्बान सुखरूप।
भुजदंडन सबके लसत, अङ्कित परमअनूप ६१
कंठीग्रीव प्रसन्न द्विति, मनि तुलसिका सुदेश।
परिकर पंच बिरञ्चि भव, जेहि ध्यावतश्रीकेश ६२
जे परमेश परेश पर, युगुल मन्त्र तद्रूप।
महाशंभुपर विष्णु बिधि, सबके सत्यस्वरूप ६३
तिलकश्वेत श्रीयुत सुखद, प्रातिनिधिप्रभुपदजानि।
श्रीसीतापति प्रभुशरण, परिकर नामप्रमानि ६४

संस्कार ये पंचपर, प्रभु सन्निधी सुभान।
परिकर विष्णु बिरंचि भव, इन बिनु काहु न मान ६५
संस्कार ये पंचपर, जिनके चाह अतीव।
ते पावें साकेतपद, प्राकृत जीवकि सीव ६६
ये सतगुरु उपदेशबिनु, बिनु सेवा नर मूढ़।
संस्कार धारैं यदपि, प्रभुपद लहैं न मूढ़ ६७
मित सङ्केत जनाय यह, पुनि बरणौं सोइ केलि।
प्रभुसुखपाल सहेलिका, सजीं स्वरूप नवेलि ६८
प्रतिदण्डन बिकसित चलीं, अलीसततसुखपाल।
उचरत जै रघुलाल प्रभु, जै निमिललीकृपाल ६९
अग्रभाग सुखपालमें, दुहुँदिशि परमकृपाल।
प्रथित चारुशीला प्रमुख, चारुशीलमनिलाल ७०
मधुर बिजन तांबूल कृत, बीरी बिबिधिप्रकार।
लिये परस्पर दोउ करन, अमितराज उपचार ७१
सो०चारु शीलमनिलाल, आज्ञासबशिरपरधरी।
हनुमत बपुख बिशाल, चारु शिला यूथेश्वरी ७२
दो०—युगल ललन सुखपालमें, मध्या बरण अनूप।
अष्टकोन अद्भुत अकथ, तेहि मधि रघुकुलभूप ७३
युगुल सभासनसे कछुक, नीचे मिलित निवास।
तहां चारुशीला सुथिति, चारुशीलमनिभास ७४
यहि बिधि चले सुखेन साजि, अवधलालदोउभूप।

बजे निशान बिजेंद्ररव, श्रुति प्रतोपरसरूप ७५
रघुबंशिनके कुँवरबर, सजि २ सबिधि स्वसेन ।
प्रभु हित करन जोहारमग, दुहु दिशिखड़े सुखेन ॥
कछु समीप सुखपाललखि, आतुरअधिकसभीत ।
पाणिअग्रकरि भुकितबपु, बिह्वलबिनयबिनीत ७७
सो०-जै २ परम कृपाल, श्रीमदरघुबंशेश्वरी ।
जै रघुकुल मणिलाल, युगुलरूपआनंदघन ७८
दो०-बारबार अस्तुति प्रथुति, करत जोहारिसुबाद ।
प्रभुदिशि निरखि नक़ीबगण, उचरतशुभअनुबाद
अटन झरोखनमें लगीं, नवल बधुनकी भीर ।
जयति युगुलरघुबीरकहि, निरखहिंसुधिनशरीर ॥
सो०-यहिबिधि श्रीरघुनाथ, जात चले मगमोदप्रद ।
सबकहँ करतसनाथ, पुष्पवृष्टि नभसंकुलित ८१
बहुबिधि ब्योमबिमान, सजि २ सबसुरनागरी ।
बरषहिं पुष्प महान, अति सूक्ष्मसौरभबिशद ८२
चलेजात मग युगुलप्रभु, नाना कौतुक होत ।
महल२ प्रति आरती, अस्तुतिभोग सँजोत ८३
इन्द्राणी बरनागरी, अन्य बाम तिय साथ ।
रचि समाज अध्वा बिषे, मग जोहत रघुनाथ ८४
क्षीरसागरी विष्णुते, भो बामन अवतार ।
बामन अंगुलकी तिया, तिनको ललित उदार ८५

अतिवक्ता सर्वज्ञ पुनि, श्रीसियबर पर प्रीति ।
ललित मधुर लीला रसिक, परानन्य पथरीति ८६
युगुलकेलिकादम्बिनी, श्री साकेत निकुञ्ज ।
कथा सुथल बांचत सुनै, बैठीं सुरतियपुञ्ज ८७
इंद्र तिया बामन बधू, प्रभु नीराजन हेत ।
इज्ज सौंज प्रथमहिं रचैं, सौरभ सुछबिनिकेत ८८
सो०-हाटकमणिमयपुंज, चौकी योजन षोड़शी ।
प्रभु पूजनहित संजु, तदुपर रची महानछबि ८९
दो०-तापीछे चौकी द्वितिय, ता पर कथाप्रकाश ।
सुर सुन्दरी सप्रेम अति, सुनैं छोड़िसबआश ९०
परमरसिक बामनबधू, प्रभु हित साजियुगथार ।
श्रीफल शुचि उपवीत दल, मङ्गल द्रब्य अपार ९१
यहिबिधि सब सुर नागरीं, इन्द्रबधू सिरदार ।
निज२कर सौंजनलिये, नजरि भेंट उपचार ९२
नाक बधुन बहुबिधिरची, युगललखनहितकेलि ।
सजिसुदेश लाई सकल, त्रिभुवनबस्तुनवेलि ९३
कोटिन किश्ती मधुर फल, डाली हस्त अनेक ।
मेवा मनि मुक्तन सजीं, सुर नवलन सविवेक ९४
सो०-प्रभु बिरमावन हेत, कथा सबिधिसुरनागरी ।
सुनहिं सप्रेम सचेत, श्रीसाकेत पुरेशगुन ९५
दो०-सबअवतारनकी त्रिया, आईं महलसुसङ्ग ।

अतिहर्षित प्रभु गमन सुनि, सरयू भवनप्रसंग ९६
ब्रह्मोद्भव अवतार जो, हंसनाम बिख्यात।
तिनकी पत्नी प्रेमनिधि, प्रभु सेवा सज्ञात ९७
श्रीसीतापति युगलप्रभु, ध्यावति उर अतिनेह।
एकांतिक उज्वल रहस, मिथिलाअवधस्वगेह ९८
बामन भामिनिके निकट, सन्मुख अध्वा तीर।
श्रीमद्रामायन कथा, कहन लगीं मतिधीर ९९
श्रोता सावित्री सुतिय, बैठी लसहिं अनेक।
मणिमयपुरटअगार थल, सुनहिंकथासविवेक॥
प्रभु आगमन बिचारि उर, बहुबिधिसौंजसवांर।
हंस बधू हर्षित सन्निधि, सकल धरीं सजिद्वार॥
पूजा सम्पति [illegible]शी, नजर भेट बहुभांति।
सावित्री युत सकल तिय, करगहि उर न अंबाति॥
निकट २ अध्वा विषे, दोहुदिशि कथा सुखेन।
सब अवतारनकी तिया कहहिं सुनहिंवरबैन॥
श्रीसीतापति पद रसिक, सब अवतार सबाम।
उज्वल सख्य उमंग उर, मुख उचरतिसियराम॥
कच्छप और न्रसिंह तिय, सन्मुख मारग तीर।
श्रवण कथन श्रोतन सहित, कथा सुसिय रघुबीर॥
मत्स्य बधूटी कृष्णतिय, धन्वन्तरि बलि बाम।
परशु धरन मनिकी तिया, सब अवतारनभाम॥

आई श्रीसाकेत पुर, निज २ युत्थ सँवारि ।
प्रभु दर्शन उत्सुक सबै, गावहिं बिरदप्रचारि ॥
जिनकी जहां निवासते, तहां रहीं मनमार ।
चहुँदिशिपरिकरसंकुलित, किमिकहिसकविस्तार ॥

इति श्रीसाकेताधीश श्रीमज्जनकनन्दिनीकान्तकृपाल अनंत श्रीरामलाल ज्येष्ठ बंधु श्रीमदुत्तरकोशलाधिपराजराजेंद्र भ्रातास्मज श्रीरघुवंश कुमारलाल श्रीकामदेंदु मणिदेवजी सुहृद श्रीराघवेंद्र सखाजीकृत श्रीसाकेत निकुंज अनंत श्रीसीताराम केलिकादम्बिनी ग्रंथ श्रीसर सरि विहारार्थगमनविनोदवर्णनोनाम द्वितीयोमेघः ॥ २

चौपाई ॥

सब अवतारनकी तिय सुन्दर । [illegible] परमरसिक प्रभुपदरतिमन्दर ॥
सबकेमस्तक तिलक सुखदवर । [illegible] श्रीरघुवर पदचिन्हशुभगतर ॥
श्री साकेत राज पटरानी । [illegible] परतरतम जानी ॥
तिनके श्रीकर रम्य मुद्रिका । [illegible] मस्तक भूषण भातिचन्द्रिका ॥
श्रीसाकेत राज आयुधदोउ । धनुर्बाण शिरकीट भास सोउ ॥
त्रैभूषणयुत मंत्र प्रकाशित । आयुध युग्ममंत्र सहभासित ॥
सब अंकित प्रभुनाम मनोहर । श्रीयुत सीताराम युगल पर ॥
मुद्रा पंच चिन्ह चिन्हितते । अवतारनतिय अपरव्यक्तिजे ॥
मस्तक कीट चन्द्रिका राजत । दुहुं दिशिमालमुद्रिकाभ्राजत ॥
बाहमूल अंकित आयुध वर । धनुर्बाण रघुकुलमणिप्रभुकर ॥

दो०-मंत्रराज राजेन्द्रवर, श्रीसीता श्रीराम ।
युगलमंत्र विविषट बरण, सबके उर अभिराम ॥ १
तुलसी मनिमय मधुरकल, कंठी ग्रीव प्रदेश ।

श्रीसीतापति नामयुत शोभित बदन सुदेश ॥२॥
गावहिंसो सब युगुल केलिनव । श्रीसाकेत पुरेश मधुर रव ॥
दो०-जिन अवतारनकीतिया, ते सबप्रभुकेसंग ।
तेजपुंज सुखपालके, चहुँदिशि चढ़े तुरंग ३॥
अष्टदशाब्द वयससबकीशुचि । नित्य सख्यरस रतिउमंगरुचि॥
नित्य अपर नैमित्तिक लीला । खेलत संग सप्रेम सुशीला ॥
कहुं अवतार रूप अवतरैं । कहुं रघुवंश कुंवर अनुसरैं ॥
चतुर्विंश अवतार भेद युत । सेवत श्रीसीतापति इतउत ॥
उत साकेत नित्य रसलीला । इत श्रीअवध निमित्तवसीला॥
वत्सल सख्य शृंगारदास्यरति । इन पुरुषारथ रतिसबकीअति॥
श्रीसीतापति प्रभुकीजुमरुचि । सोइसबकरैंप्रीतिपालितशुचि॥
सब अवतारनित्यचितश्रुतिबद । सेवत पर सीतापति प्रभुपद ॥
औरहु कछुक भेद बिलगाई । अवतारनकी रीतिजनाई ॥
इक २ नित्य रूप सब सुन्दर । ते सेवत साकेत पुरन्दर ॥
पुनि नैमित्तिक रूप अपारा । बहु निज लोकनबहुसंसारा ॥
जो साकेत रामसँग सेलै । उज्वल सख्य रूप रसकेलै ॥
राजकुमारकिशोर द्विभुजतन । राघवीयसतचित आनँदघन ॥
उज्वलरसिकसकलइनकीतिय।द्विभुजकिशोरीयुगललनपिय
रूपराशि चितशक्ति सुभायक । नित्यएकरसअमलअमायक ॥
इनहूके नैमित्तिक रूपा । निज २ पतिन संग अनुरूपा॥
राधिकादि सर्वज्ञ सुन्दरी । श्रीसीतापति भक्ति कन्दरी ॥
बद्धजीव जो यह रस पावे । तनमन धन करिसतगुरुध्यावे॥

लौकिक विधिसब नातत्यागे । तब निज दिव्यरूपअनुरागे ॥
विधिनिषेध बहुकर्म्म न भर्मै । तीरथ ब्रत तप योग न सर्मै ॥
है अनन्य सीतापति पदरति । सोपि पाव यहिपरिकरमें गति ॥
नित्यरूप जे कुंवर छबीले । अनुगत प्रभुसुखपालरसीले ॥
जे प्रभु संग कुँवर वर प्यारे । आविर्भाव भेद नहिं न्यारे ॥
उज्वल वत्सल दास्य शांतवर । जिमिकर्णिकाकमलदललघुवर ॥
पूरब परन सरोज संगधर । तिमिउद्धवप्रभुसंगसबपरिकर ॥
चढ़ि २ अश्व गजन रसभीने । चहुंदिशिप्रभुसुखपालनवीने ॥
बहु अनीक आनन्द प्रबाहक । रची सुखन सेन्य सुखचाहक ॥
अस्त्र शस्त्र शृंगार सुहावन । किमिवरणैं सबप्रभुमनभावन ॥
कंठी तिलक कीट धनुशायक । सबके अंगन चिन्ह अमायक ॥
द्वादशयहस्रसंख्य रघुकुलभव । राजकुमार संग सबके नव ॥
षोड़शसहअसंख्यसंख्या तिन । सखी अंगजा ललीअंगगिन ॥
द्वादशअयुत वेदश्रुतिप्रभुसँग । अगुनसगुनवदबिरदछंदअँग ॥
गज अश्वादि सवार पयादे । गने न जाहिं असंख्यप्रभादे ॥
चलेजात प्रभु यहिविधिराजत । दुहुंदिशिसुखदनकीबप्रचादत ॥
करन दंड कंचन मणि मंडित । बदनि नकीब शेषसम पंडित ॥
श्रीरघुवंशकुमार कोटिशत । दुहुदिशिखड़े सुखदमारगगत ॥
सुनिनकीबधुनियंत्रअवाजन । आयप्रभुहिंकरनअभिवादन ॥
विविधि राज कौशेय अलंकृत । परा भक्ति आसव उन्नतिधृत ॥
नभमें चहुँदिशि सौरभ छाये । सबके गृह वर बजत बधाये ॥
चलेलाल सुखपाल बिराजे । वजे निशान नकीबगराजे ॥
सुनि नकीबरवउत्कर्षितधुनि । उठीं सहर्ष समीप स्वप्रभुगुनि ॥

अति समीप सुखपाल निहारी। बर्षहिं कुसुम जाहिं बलिहारी॥
जयतियुगुलरघुकुलमनिनायक। जय सर्वज्ञ सुखद सब लायक॥
जय रघुनाथ अनाथनकी गति। सबके मित्र सुसेब्यप्राणपति॥

दो०–बहुबिधिबिनयविवेकयुत, प्रभुहिंसमर्पिसप्रेम।
पूजन नीराजन सुमन, वन्दन विधि युगनेम॥

यहिप्रकारप्रभुदोउरघुकुलमनि। जातसुखेनबिबिधिमंगलधुनि
चढ़ीं अटारिन रघुकुलनागरि। वर्षहिं कुसुम दामगुनआगरि॥
करहिं आरती दम्पति वारहिं। जय सीतापतिसुमुखउचारहिं॥
बामन बाम हर्षि भइ ठाढ़ी। युग करजोरि प्रेमरस बाढ़ी॥
दूरहिं ते प्रभु लखि सुखरूपा। पूंछी यह तिय कौन अनूपा॥
सर्वेश्वरी चारुशीला तब। दोउकर जोरि बिनयकीन्हींसब॥
प्रभु सर्वज्ञजानसबकी गति। तदपिसाबिधिजिनकीतवपदरति।
बामन शुचिप्रभुसखा मनोहर। यहतिनतियाभक्तिभाजनवर॥
जिमिबामन अंगुलपतिसुन्दर। तिमि पत्नी अनुरूपरूपधर॥
मैं जानौं यहि कर रस भेवा। करत निरन्तर प्रभुपदसेवा॥
यहिको नाम जानि निजदासी। कीजय कृपा सर्व सुखरासी॥
याको प्रथम कृतारथ कीजे। फेरि अपर भक्तनसुख दीजे॥
सुनि वर बिनय प्रेम रससानी। मनक्रमवचनभक्त निजजानी॥
तब पूंछी प्रभु निज पटरानी। तेहिकरिकृपा आपाकिमिमानी॥
तब साकेत राज राजेश्वरि। हर्षि कहैं बचनामृतसुखभरि॥
प्राणनाथ यह मम किंकरी। तवपद प्रीति ललित रसभरी॥
जिमि यह रहस सम्प्रदापूरी। तिमि सब अवतारनतियभूरी॥
कच्छप मत्स्य नृसिंहहंसतिय। सब उज्वल रस मग्ननित्यहिय॥

सबको सविधि नाथ सुखदीजै । सबकी इज्यसमर्पित लीजै ॥
कृपा सहितसुनि श्रीमुखबानी । परमप्रसन्न प्रिया निजजानी ॥
सुनि सहहर्ष लाल तब बोले । आप कथित वर बचनअमोले॥
जाको आपजानि निजमाने । ताको हम निज सुयशबखानै ॥
जो नहिं प्रिया आपपदसेवी । सो ममकृपा पावनहिं देवी ॥
आप नाम बिनु नाम हमारा । जपै सो जाय महेशअगारा ॥
आप विगत मम नाम घनेरो । यदपि जपै प्रियसोपि न मेरो॥

दो०—आपरहितमम नाम जपि, तेनर शिवपुरजाहिं ।
युगल मंत्र उपदेशिभव, फिरि पठवैं भवमाहिं ॥

फिरिसतगुरुमुख युगुलमंत्र वर । हर्ष सहित जब लेहिं बिदुषनर॥
तन मन धन करिसतगुरुपूजा । करैं सप्रीति देव तजिदूजा ॥
छिन२ सतगुरु चरण निहारैं । जग नाते शिर भार उतारैं ॥
गुरु माता गुरु पिताबन्धुगुरु । गुरुरघुबीर समुझि सेवैंनर ॥
युगुल मंत्र दाता प्रभुसतगुरु । मनुज न जानौतिन्हैंभूलिनर॥
रौरव नर्क कोटि जन्मनलगि । भाड़ौदुखगुरुमनुजमानिआगि॥
सतगुरु सन्मुख अपर बड़ाई । करै न यदपिईश सम भाई ॥
कर जोरे बिनु सतगुरु सन्मुख । कहै न बैनअदब तजिमनमुख॥
सतगुरु सन्मुख बाद प्रचारै । ते नर दंडलहैं यम द्वारै ॥
कोटिजन्म लगि श्वानशरीरा । पावै मरै अंग कृमिपीरा ॥
जब सतगुरु सेवा मन लागा । तब जानौ संसृति दुखभागा ॥
असतशिष्यसंसार निरतरति । हरि गुरुबिमुखतरनकीयहगति॥
तन धन गुरु सेवा नहिं भावै । मन सेवाकरिध्यान लगावै ॥
सहअतिकृपाभक्ति पदबाधक । याहित्यागे प्रभु रदरातिसाधक ॥

जो गुरु सन्मुख मिथ्या बोलै । त्रिजग योनि बहु जन्म निडोलै ॥
गुरुतजि भजन करै निजघरमैं । सो नर अज्ञ सन्धि शठ भरमैं ॥
जो गुरु धान्य चोराइ खाय कोइ । बहुत जन्म नर्क नं खसह मोइ ॥
जो गुरु वस्तु चोराइ छिपावे । कोटि जन्म शूकर तन पावे ॥
सब सुधर्म तजि सतगुरु सेवा । करै सप्रीति रीति रस भेवा ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु बखानै । गुरु शिव परब्रह्म श्रुति मानै ॥
ईशोद्भव अवतार जहांलगि । रहे सकल सतगुरु सेवापगि ॥
प्रभुसे अधिक जानि सतगुरु पद । सेवै छांडि जगत सम्भव हद ॥
युगुल मंत्ररस धुनि प्रगटावे । तब मम धाम आइ सुख पावे ॥
श्रीमिथिलेश नन्दिनी देवी । आप नाम बिनु जो मम सेवी ॥
ताको निज अपराधी जानौं । प्रणति प्रपत्ति तासु नहिं मानौं ॥
आप नाम युत जो मम नामा । जपत ईश पावै परधामा ॥
प्रथम करै प्रिय रौरी सेवा । तब मम सेवन पाव अछेवा ॥
जाको आप तनक आदर किय । ताको हम आपन सर्वसु दिय ॥
आप पवावै तब मैं पाऊं । आप बिना नहिं ग्रास उठाऊं ॥
प्रथम आपको आतम समर्पण । करि पाछे हमको रस अर्पण ॥
आपरूप ममरूप अभेदा । श्रुतिवद विरद अतर्क अखेदा ॥
तदपि युगुल सेवा मन लावे । तब माधुर्य महल सुख पावे ॥
परमधन्य वर बामन बामा । आपकृपा पालित अभिरामा ॥
आज्ञा होय इज्य तेहिं लीजे । सर्वप्रकार ताहि सुख दीजे ॥
हंस वंश सम्पति सर्वेश्वरि । बोली सहित सनेह कृपा करि ॥
प्रभु यहि के घर चलि सुख दीजै । जो यह अर्पै सो सब लीजे ॥
छोटे कर पद बधू बामनी । छोटे कद हद प्रीति पावनी ॥

पूज्य नाथ पूजकबामनतिय । लखि हँसिहैंपरिकरानि जशहिय ।
अतिछोटी करपुट सुअंगुली । विविधिसौंज समात नकुली ॥
सापि नाथ पूजन अनुसरिहैं । प्रभु उर अधिकहास्यरस भरिहैं ॥
मन्दस्मित रघुकुल मनिप्यारे । चलिये प्रिया बचन अनुसारे ॥

दो०-प्रभुअनुशासनसुखदसुनि,बाजेबिबिधिनिशान ।
कुसुम वृष्टि मङ्गलमयी, जय जय शब्दमहान ॥

प्रभु समेत सुख यान सुहाये । बामन भामिनि सन्मुखआये ॥

दो०-जयति युगुल रघुबंशमनि,सुनिनकोबधुनिकान ।
साजिकर कलश उपेंद्रतिय, खड़ीनसुधितनप्रान ॥

तथा सकलस इन्द नागरिवर । तदपित्र तुगनिजकलशभूमिधर ॥
अति आतुर उपेंद्रतियकरते । लीनउतारि कलशनि जढरते ॥
श्रीफल मंगल द्रव्य थारवर । दियउपेन्द्रतिय करनिजकरधर ॥
पुनि आरती परम सुखकारी । सुनाशीर तियकरन बिचारी ॥
इतनेमें उपेंद्र नागरि नव । प्रेम समाधि सचेत भई तव ॥
आगे प्रभुहिं देखि सकुचानी । करिघूंघुटपट अधिकलजानी ॥
अद्भुत रस उद्भवक नागरी । घूंघुटलटकानि लटक आगरी ॥
बारबार कह शत मख भामा । घूंघट खोलिलखिय अभिरामा ॥
तदपि सकुचवश खोलति नाहीं । प्रभुपद दरश चाह मनमाहीं ॥
तब साकेत राज महरानी । मंदस्मितअतिसुखदसुबानी ॥
बामन बधू सबिधि सुख लीजे । महाराज पूजन मन दीजे ॥
तुम सब बिधि किंकिरी हमारी । पुनि ममप्राण नाथ सुखकारी ॥
सुनिनिजस्वामिनिश्रीसुखबानी । बामनबधू अधिकसकुचानी ॥
करि घूंघट पट दूरि भामिनी । गहे युगुलपद सुरति गामिनी ॥

श्रीफलमंगलद्रव्यथारयुग । प्रति प्रति प्रभुहिंसमर्पिसुमतिभुग ॥
पुनिपूजन प्रकाररसरूपा । नजरभेट सतकार अनूपा ॥
सुनासीरगेहनी अदितितिय । करनलगीं पूजन सहर्षहिय ॥
प्रथम अर्घद्वादश सुखकारी । दुहुँदिशि कलशदीपअनुसारी ॥
पुनिश्रीपदशुचिपाथप्रक्षालन । पुनिपादुकाअर्पिसियलालन ॥
लैपट शुभ्र अंगौछिसुखदपद । ऋतु अनुकूलअर्पिसौरभमद ॥
चारिआचमन नीरपरमशुचि । प्रभुहिंसमर्पितयथाकालरुचि ॥
काश्मीरिकाचारु चन्दनद्रव । बहुसौरभ कर्पूर कुसुमनव ॥
मिश्रितमधुर प्रसन्न नीरकल । प्रभुहिंअर्पि स्नानशुभगथल ॥
सौरभमिलित शुभ्रपट सौंक्षा । युगुललललनहितअंगअँगौछा ॥
कोमल ललितपीत प्रियगोती । परमरम्य दोउप्रभुहितधोती ॥
सुमनासवसम्पादिकतम्प्रति । कामदप्रियकौशेय बिबिधिगति ॥
हाटक तत्व अनेक प्रकारन । लगेसबिधिसूक्ष्ममृदु धारन ॥
छबि श्रृंगार रूपपटधारे । सजिसुखेन दोउराजदुलारे ॥
मुक्तनकी छहरनिछोरनमें । मनिमयकनी कलितकोरनमें ॥
पुनिसुगन्ध पुटपट उपचारी । यथाकाल दम्पति रुचिकारी ॥
अलंकार आनन्द प्रभूनक । मणिमुक्तामानिककलधूतक ॥
क्रीटचन्द्रिकादिक सुखरासी । बहुतप्रकार बिचित्रबिभासी ॥
अलंकार नानाप्रकारनव । प्रभुहिसमर्पि रत्नहाटकभव ॥
पुनिअर्पेहाटक मनिमन्दिर । प्रभुरुचिसरस शुभासनसुन्दर ॥
सरसदान हाटक थारनभर । अर्पिसत्रछांह निरखिदम्पतिबर ॥
मनिमुक्तामानिक रत्नाकर । अन्नराशि उपवीत पुरटधर ॥
रबिराकेश पुरटमनि निर्मित । अम्बर उडगन सरससरिपर्बत ॥

रजत स्वर्णमय पात्रअपारा । लघुदीरघ समदान प्रकारा ॥
विविधिवस्त्रकौशेयकितानिक । अलंकारबहुअगमनिआनिक ॥
सय्यासबिधि सुखासननाना । अश्वनागपट हर्मिबिताना ॥
छत्रचमरबिजनादि बिशाला । बहुपक्कवान समृद्धिरसाला ॥
विविधिदान साकेत राजप्रभु । सम्पति युतदम्पतिदीन्हेंविभु ॥
जयति २ रघुबंश उज्यारे । जै निमिराज ललीप्रिय प्यारे ॥
मंगलद्रव्य अनेक प्रकारा । इष्टभोग को गिनैअपारा ॥
चहुँदिशिप्रभुकेसौंज अनेका । लोकालोक सुबस्तु प्रतेका ॥
छत्रयुगुल दुहुँदिशि सुखसरसैं । युगुलचौंर दंपति छबिपरसैं ॥
द्वैद्वै बिजन दोऊदिशिरूरे । बिविधिभाति सम्पातिसुखपूरे ॥
खड़े अमित चहुंओर नवीने । चोबदार करदंड प्रवीने ॥
सुखनकीब भीरकोबिदवर । उचरहिंजय रघुवंशप्रभाकर ॥
जय रघुबंशईश सर्बेश्वरि । प्रणतपाल शुभदृष्टिकृपाभरि ॥
बिरदप्रबीन सूतबन्दीजन । हैं सबसख्यरूप नागरिगन ॥
वृष्णिगर्भ तिय इंद्रनागरी । यहछबि लखिभंई रूपबावरी ॥
रहीनकछुसुधिपूजक पनकी । तनमनधन अर्चनसौजनकी ॥
निरखियुगुलछबिआनंदभरहीं । बिह्वलसुखहि निछावरिकरहीं ॥
धरिउरधीर स्वसमय निहारी । करनलगीं पूजन सुकुमारी ॥
शुचिसअग्निसौरभसुखकारी । बिगतधूम्रप्रियसबिधिसम्हारी ॥
धूपअर्पि पुनिदीप सुहावन । दुहुँदिशियुगुलललनमनभावन
राई लोनचहूंदिशि नागरि । लगीं उतारन रूपउजागरि ॥
मंत्र शास्त्र सम्पन्न चतुरतिय । तंत्रकार श्रुतिसारजानहिय ॥
ठाढ़ी चहुँदिशि पुभुहिं निहारैं । युगुलललनलखितननवारैं ॥

जरीजाल कौशेय कुसुमजटि । चहुँदिशिपरदापरे भूमिसटि ॥
कोटिचन्द्र निन्दक सिंहासन । तेहिपरसविधिसुदेशशुभासन ॥
प्रियसौरभ सम्पन्न अनूपा । उपवर्हण दम्पति अनुरूपा ॥
पद्मराग मनिमंजु प्रभाधर । चौकीचारु युग्महाटक तर ॥
चहुँदिशिमनिमुक्तनकीझालरि। लगींसुदेश कुसुमसंचितलर ॥
कछु उन्नत सिंहासनते प्रिय । चौकीकिधौं समस्तराजाश्रिय ॥
हरित मनिनमय हाटक थारा । कलित कटोराचषक अपारा ॥
षटरस भोजन सुधा सुधारे । बहु मेवापकवान अपारे ॥
सूपशास्त्रसम्यकअद्भुतरस । वरणिनजायविविधिभोजनजस ॥
श्रीरघुबंश महा मनिप्यारे । निमिनन्दिनीनियुतराजदुलारे ॥
भक्तनअर्पित भोग सुहावन । जेंवतयुगुललल्लनमनभावन ॥
मिलितयन्त्रबहुप्रियस्वरगारी । देहिंसप्रेम अमित सुकुमारी ॥
सर्वेश्वरी चारुशीलान्युत । चारुशीलमनिपरऽऽनुरक्तियुत ॥
दुहुँदिशिविजनशुभ्रपटकरगहि। सेवतप्रभुहिविनीतबचनकहि॥
चहुँदिशिसुमन सरोजसम्हारे । कलिकाकलितअनेकप्रकारे ॥
मंगल द्रव्य अशेष अपारा । पूरब कथित प्रसंग प्रकारा ॥
हार अनेक सुमन पचरंगी । बैजन्ती वनमाल प्रसंगी ॥
पुष्पमाल श्रृंखला सुहावन । अलंकारकुसुमनछबिछावन ॥
चामीकर चौकिनपर सज्जित । हाटकथारनिरखिकविलज्जित॥
प्रथमहिप्रिय परियंक सम्हारी । विविधिबिछौनासुमननिवारी ॥
सेज सुखद पय फेन लजावन । अतिकोमलदम्पतिमनभावन ॥
परिमलरुचिर सेज सुखकारी । उपवरहण सौरभितसम्हारी ॥

दो०—नानासौरभसम्मिलित, शीतलरुचिरसुवास ।

हाटकझारिनमेंमधुर, श्रीसरयूजलभास ८॥

पंचग्रास करि रघुकुल नायक । ललीसहितभोजनसुखदायक ॥
करिप्रसन्न भोजन सुखरासी । बामनतियहिंजानिनिजदासी ॥
तुरितउठे दोउ थार अनन्दित । परमप्रसादविष्णुविधिबंदित ॥
पुनिचामीकर चारुचिलमची । निजकरचौकिनधारिसमसची ॥
युगललल्लन आगे मनहारी । शोभितदोउचितचन्द्रउज्यारी ॥
मृदुमनितत्वअधिककोपलतर । खरिकाप्रभुहिअर्पिदम्पतिकर ॥
बामनतियअरु शची परस्पर । लैझारीदोहुदिशिनिज २ कर ॥
प्राणनाथ दम्पति रुख जानी । देत आचमन अम्बुसयानी ॥
कुसुमतत्वपट शुभ्रसुहावन । मुखअँगौछिदोउप्रभुमनभावन ॥
सौरभ सम्पादित पटसुन्दर । युगलललनप्रभुपदसुपोंछिकर ॥
बसु २ खास खवासिन प्यारी । युगल ललनकी रूप उज्यारी ॥
शुभगा शान्ता श्यामा गोरी । सौरभमुखी इन्दिरा सेरी ॥
चन्द्रप्रभा पद्माबसु नागरि । ये रघुलालखवासि उजागरि ॥

दो०--भद्रा विशदाकोमला, कीरतिप्रभासुसंग ।
मुकुन्ददाअरुमाधवी, विरजाशुभदाअंग ९ ॥
कौशलेन्द्रसर्वेश्वरी, कांतियुगलइकरूप ।
तदपिखवासिनिमुख्यवसु, सियकिंकिरीअनूप १० ॥

बीरी बिबिधिसुगंधसुदेशिनि । सुखदाललितअनूपप्रदेशिनि ॥
आरोगीं प्रभुनिज २ करकरि । सबकेउर प्रमोद मंगल भरि ॥
पारिजात कुसुमोद्भव आसव । दम्पतिप्रभुहिंसमर्पिसुरभिनव ॥
पुनियुग नवचौकीकंचनकृत । मनिनखचितबिबिपुरटथारधृत ॥

पुनिदोउ थारन में रस रूपा। रचित सुअष्टावरण अनूपा॥
कोटि चन्द्रसम कांति बिराजी। तिन दोउथारनआरतिसाजी॥
प्रथम आबरणदोउ थालनमय। कुमुदकिरणकंचनजातनमय॥
चित्र २ कलकुसुमन कीक्यारी। मधुरललित मंगलमयप्यारी॥
सप्तआबरण मणिमुक्तन के। तेजस्वरूपकहहि कोतिनके॥
मध्य २ बेदिका मनोरम। कौस्तुभचिंतामनिप्रभूतसम॥
अष्टकोन उन्नत उमंगभर। दोउथारन बेदिका रम्यतर॥
द्वै द्वै पद्माकार पात्रवर। हरितमनिनमय शोभित तिनपर॥
अकथ अनूपम थार वेदिका। चारिपात्रजनु वेद भेदिका॥
ताते पद्मरूप श्रुतिचारी। इहां गुप्तरस रसिक बिचारी॥
त्रिविध सुगन्धमिलतमंजुलवर। अमित रंग कर्पूर रागधर॥
युग्म २ ज्वलज्योति प्रभाकर। लघुउपमाशतकोटिदिवाकर॥

दो॰ दोउमिलिइन्द्रउपेन्द्रातिय, रघुकुलमण्डनलाल
दम्पतिप्रभुकीआरती, करनलगींशुभमाल ११॥

प्रथम मधुर झारी दोउकरलै। द्वादशअर्घ दिये मंगलमै॥
भीजे हरित गुलाब बारिके। झीनेपट सादर विचारिके॥
लम्बे चौड़े इक उमान के। छः २ हस्तक दोउ प्रमानके॥
द्वै द्वै अली लियेकरठाढ़ीं। दम्पतिदुहुँदिशिआनँदबाढ़ीं॥

दो॰—प्रभुसिंहासनसोंमिलित, अग्रसुबस्त्रप्रमान।
दुहुँदिशिलियठाढीं अली, शीतलपटउपधान॥
आगे के छोरनमिलित तहँआरतीउदोत।
गुप्तभेदलहिआरती, करैंरसिकमिलिगोत १२॥

गुप्तभेदकछुहैनहीं, प्रथमहिदियोजनाय ।
गुप्तभेदकछुहैनहीं, करैंआरतीआय ॥१४॥
अतिसमीपप्रभुकेनहीं, करैंआरतीआय ॥१४॥
प्रथम आरती द्वादश कीनी । युगल मंत्र प्रभु रँग रस भीनी ॥
दो०--चारिआरती कीजिये, चरण सरोज निहार ।
पुनिदुहुंदिशिकरिअंगलखि,दुइआरतीउतारि१५
श्रीमुख प्रभाअपार छबि, को बरणै रसरूप ।
युगलललनप्रभुआरती, द्वै द्वै करिय अनूप१६॥
श्रीसाकेताधीश प्रभु, दम्पति प्राण अधार ।
सप्त २ प्रभु आरती, सजि रसरीति सुधार॥१७॥
यहिबिधि इन्द्र उपेन्द्र तिय, करिआरती अनंद ।
पुनिदैअर्घअलोलचित,निरखहिंप्रभुसुखकंद१८
प्रथक २ दोउ प्रभुनहित, नजर भेट उपचार ।
मणिसमूहभूषणाबिबिधि, मंगल द्रब्य अपार१९
इन्द्र उपेन्द्र नागरिन दोउकर । पुष्पांजुलि लीनी युतपरिकर ॥
अस्तुति करनलगी रसरूपा । दोउमिलि प्रीतिप्रणीतिअनूपा॥
जयतियुगल रघुकुल मणिसुंदर। जय दम्पति अनूप गुणमंदिर ॥
जय सर्बज्ञ श्याम सुंदर नव । बन्दनीय पदकंज विष्णुभव ॥
श्रीसीतापद पद्म अनन्दित । उमारमा सशक्ति श्रुतिवंदित॥
वास्तव एकरूप प्रभु धारक । युगुलरूपकृत भक्त उधारक ॥
आदिअनादि अचिन्त्य अभेदा। धामादिक अतर्क गुणवेदा॥
सुरन सुखद अवतार नियन्ता ।जयमिथिलेशलली प्रियकंता॥
दम्पति प्रभु हम सब उरगामी । रहिये नित्य निरंतरस्वामी ॥

परम प्रकाशराशि अजजेते । महाशम्भु पर विष्णु समेते ॥
सबके गति सबके प्रभु पालक।परमस्वतंत्रस्ववश सबकालक॥
लघु किंकरी नाथ हम दोऊ । इन्द्र उपेन्द्रदास प्रभ सोऊ ॥
यदपि युगल सेवा अज्ञानी । तदपिदीनप्रिय विरद स्वजानी॥
ताते ढीठ भई हम बोलैं । अति समीप निज प्रभुकेडोलैं॥
क्षमिय नाथ अपराध हमारे । त्राहि २ रघुकुल मणि प्यारे ॥
उमारमा पालन सुखकारी । जय रघुबंश लाल सुकुमारी ॥
जयति युगुल पदपद्म प्रभाकर ।हमसबलहेछोड़ि श्रम तमडर ॥
सर्बशक्ति पर तरतम स्वामिनि ।हमसबश्रीपदरजअनुगामिनि॥

दो०–अब श्रीपद सेवासुरति, परानुरक्ति रसरूप ।
हमसबकोप्रभुदीजये,दो उरघुकुलमणिभूप२०
पुष्पांजुली प्रवर्षिदोउ, करिदंडवत अधीर ।
नैननीरपुलकितपरम,लखिद्वविसुधिनशरीर॥

प्रभु निजभक्त परमप्रिय जानी। बचन सुकहे हर्षि सुखदानी ॥
जानहुममस्वभावदोउभामिनि।मोहिभक्तप्रियजिमिशशियामिनि।
जो निजभक्त दुखी हम देखें । उर संकोच अधिकतर लेखें ॥
तबतक मोहिं नहिं कछु सुहावे।जबतक भक्त न ममपुर आवे ॥
रहे जहांतहँ सुर दुर्लभ सुख।देहुंसबिधिलखिनिजभक्तनरुख
प्रिय अनन्य जाके न औरगति ।सबभरोसतजितहिममगतिरति।
परम अनन्य मोहिं प्रिय सोई । यक्षनाग नर सुरवर कोई ॥
सब अवतारन सम मोहि जानै।अन्यदेव गतिमति रति मानै॥
सो जन मोहिं भावै नहिं कबहूं। महाविष्णु सदृशहु ह्वै तबहूं ॥
तुम अनन्य सबविधि ममदासी। सुनासीर बामन उपमासी ॥

परम अभीष्ट तुम्हैं वर सोई। सदा बसहु ममपुर प्रियदोई॥
उज्वल रस रमणीय भक्तिनुम। बसहु सदा उर रूपयुगुलमम॥
सो०-निजअभीष्टवरपाय,जयतिररघुकुलतिलक
युगललालनगुणगाय,अतिहर्षितदोउनागरी॥

इतिश्रीसाकेताधीश श्रीमज्जनकनन्दिनीकांतकृपालअनंत श्रीरामलाल ज्येष्ठ बंधु श्रीमदुत्तरकोशलाधिपराजराजेंद्र भ्रातात्मज श्रीरघुवंश कुमारलाल श्रीकामदेंदु मणिदेवजी सुहृद श्रीराघवेंद्र सखाजांकृत श्रीसाकेत निकुंज अनंत श्रीसीतारामभद्रकेलिकादम्बिनी ग्रंथ श्रीसरयू सरि विहारार्थागमनविनोदवर्णनोनाम तृतीयोमेघः॥३॥

जब प्रभुसंध्यादिशि रुखजानी। दियेअर्घ पामड़े सयानी॥
करहिनछावर मणिगण चीरा। वर्षहिं कुड़मल कुसुम सुधीरा॥
सर्वेश्वरी चारुशीला युत। चारुशील मणि सब सुवनान्युत॥
मंगलरूप प्रभुन के दुहुंदिशि। श्रीहनुमंतलाल युगवपु असि॥
उज्वलरस कदम्ब अधिदेवी। नाम चारुशीला प्रभु सेवी॥
सख्य वलय विश्वेश्वरि जानो। चारुशील मणि नामाभिधानो॥
श्रीहनुमन्त लाल रसरूपा। प्रगट नाम सुखधामअनूपा॥
कृपारूप त्रयलली लालके। सुखसम्पति तिहुँलोक भालके॥
बानररूप प्रकट जग जानै। हेतुबात नहिं भेद पिछानै॥
आदिअन्तआखिर लिखिदीजै। नवासपष्ट अर्थ करिलीजै॥
श्रीरकार प्रभुरूप उजागर। बानरपद प्रसिद्ध अर्थाकर॥
बानरकार उभय पद कीजै। प्रभुरकार कर बान धरीजै॥
बानर अर्थ बान रघुनायक। त्रिगुणातीतिअतर्क अमायक॥
बानर ते अरनव करिलीजै। निज प्रभु गुणसागर मनदीजै॥
बानर शब्द अर्थ बहुलहिये। रसिकअनन्यनसों सुनिपइये॥

आगे श्री हनुमन्त दुलारे। दुहुँदिशिकुमरकुमरिप्रभुप्यारे॥
इहां न बानररूप बिचारो। सतचितघननृपकुमरनिहारो॥
नवकिशोर नृपराज दुलारे। कोटिचन्द्र निन्दकद्युतिवारे॥
तीनरूप त्रयपाद नियन्ता। सबके परमपूज्य हनुमन्ता॥
आगे ह्वै प्रभु सेज निहारी। सैनसौंज निजकरनसम्हारी॥
जब प्रभु सेज निकट पगुधारे। बजे निशान नकीब पुकारे॥
पुनि दम्पति प्रभुसेज पधारे। परदाचहुँदिशिसुखदसम्हारे॥
द्वादश अयुत मंजरी आईं। अन्तरप्रविशि चहूँदिशिछाईं॥
सिरदारिनी समस्तशुभगतन। षोड़शार्द्धवयधृतसत्चित्घन॥
सेवहिं प्रभु दम्पतिपद प्यारे। चहुंदिशिसविधिसौंजकरधारे॥
अमितकोटि मंजरी युत्थवर। तिनमेंषोड़शअधिपमुख्यतर॥
रस मंजरी छत्र सेवा पर। ललित मंजरी चँवरशुभ्रकर॥
गुन मंजरी बिजन करधारी। रतिमंजरी पान रुचिकारी॥
चिकुर चित्रकर मोद मंजरी। रूपमंजरी मुकुर उपकरी॥
अलङ्कार श्रृङ्गार मंजरी। दुतिमंजरी सुबसन संचरी॥
कृपामंजरी बिबिध सौंजपर। पुष्पमंजरी कुसुम सेजकर॥
चित्र प्रभा मंजरी चरण रति। चारुप्रभा मंजरी बिरदनति॥
पद्ममंजरी अँग चन्दनवर। रङ्गमंजरी गान सुनागर॥
कृपामंजरी भोजन नाना। केलिमंजरी यन्त्र विधाना॥
ये षोड़श मंजरी मुख्यवर। युगललननप्रभुकोअतिप्रियतर॥
महानिकुंजनिकुंजनिलैनित। नवलभावनिरखहिंप्रभुनतहित॥
इनसम धन्य औरको कहिये। इनकीकृपा महलसुखलहिये॥
दम्पतिसैननिरखि दोउनागरि। गईंजहांप्रभु भुक्तशेषधरि॥

यूथेश्वरी युत्थपति जेते । सबपरिकरयुतमिलिप्रियतेते ॥
गावतप्रभुगुनगन अतिपावन । उचरतयुगल नाममनभावन ॥
विविधिपंक्तिकरनिज २ आसन । बैठेसब प्रभु भुक्तउपासन ॥
श्री हनुमन्त लाल त्रयरूपा । पूजेसबहिं सविधि अनुरूपा ॥
इन्द्र उपेन्द्र तिया नतिधारे । पूजे श्री हनुमन्त दुलारे ॥
प्रभु सुखपाल यान अधिदेवी । जयतिनित्य दम्पतिउपसेवी ॥
बिबिध विचित्र कदम्बआपके । मनहुंकोष यशप्रभुप्रतापके ॥
यहिप्रकार अस्तुतिकरिप्यारी । इन्द्र उपेन्द्रतिया सुकुमारी ॥
पुनिपूजनकरि बिबिध प्रकारा । लैगइँ प्रमुद प्रसाद अगारा ॥
आसनसबहिंबिबिधबिधिदीन्हे । हाटक थार चषकरसभीने ॥
त्रयमंगल बपु हनुमत प्यारे । प्रथम प्रसाद थार रुचिकारे ॥
मणिन जटित चौकिनपरनीके । धरे थार उपहार अमीके ॥
पुनि सुखपाल नागरिन आगे । धरे थार प्रभु भुक्त सुभागे ॥
प्रभुप्रसाद रुचि अति सुखकरी । परसैं अमित अनूप सुआरी ॥
ललनायान प्रदेशिन जेती । करिनसकैं संख्या श्रुतितेती ॥
तिनमें षोड़श मुख्य प्रधाना । रहैं महल प्रभु प्रेरिक याना ॥

दो०-भद्रसुधा भद्रासना, नीलप्रभा रतिकेश ।
शुचिरूपाश्यामालका, श्रोत्रमुदाशुभदेश १
चित्रवती गतवेगदा, चित्रप्रभा शुभशील ।
मृदुलतिकामंदाकिनी, पद्मप्रभारतिशील २
ये षोड़श मुख्यामहा, इनके संग अपार ।
एक २ की किंकरी, कैक हजार हजार ३

प्रभु प्रसाद लीन्हेउ सब परिकर । उठीं सहस्र युगल प्रभु उरधर ॥
बीरी बिविधि सुगन्ध सुहाई । लिये सबहिं दम्पतिपदछाई ॥
पुनिसबहिंनँश्रृंगार निजकीने । नाना बसन बिचित्र नवीने ॥
अलङ्कार अद्भुत उपमा के । सजे सबहिं चितचोर रमाके ॥
यूथेश्वरी चारुशीला सँग । चारुशील मनि रँगे युगलरँग ॥
श्रीहनुमत रघुवर्य लाड़िले । शशिसवितानिजरूपताड़िले ॥
त्रिधारूप मंगल मय आगे । चलेयुगल प्रभुपद अनुरागे ॥
पाछे सब परिकर सुख राशी । युगलललन रघुवर्य उपासी ॥
नानारंग सुमन स्त्रग लीने । बहुप्रकार कल केलि नवीने ॥
प्रभुनिकुंज चहुंदिशिसुखराशी ।विविधिद्वारगसिमहलप्रकाशी॥
तहँ समस्त परिकर इकठोरी । बैठे अति सशंक चहुँओरी ॥
परिहर बचन उग्र बैननते । प्रकटहिं अर्थ नैन सैनन ते ॥

दो०-बामनतियशत मघबधू, करिशृंगार अनूप ।
एकयामदिन शेषलखि, सहसमाजअनुरूप २

प्रभु दरशन लालसा उमंगन । भरीयुगल पद प्रीति सुरंगन ॥
विविधि यंत्रसुर सुबिधि सँवारी । गानअलापअमितसुखकारी ॥
उत्तरादिशि निकुंज दरवाजे । गावनलगीं यंत्र सुरसाजे ॥
गानयंत्र धुनिरुचि उपजाई ।प्रविशिनिकुंज चहूंदिशिछाई ॥
सो सुनि प्रिय षोड़श सुमंजरी । उठीं सकल दम्पति रँगभरी ॥
चहुंदिशि खड़ीं युगल रुखदेखें । प्रभु उत्थान काल सबलेखें ॥
नैन सरोज संकुचित प्यारे । मंदस्मित दोउ राजदुलारे ॥
लखिप्रियप्राणनाथ निजजागे । युगल परस्पर अति अनुरागे ॥
प्रथमहिं सकलसौंज सुखकारी । लियेकरन चहुंदिशि सुकुमारी॥

चन्द्रप्रभा आदिक अतिप्यारी। युगाचिलमची रुचिर करधारी॥
दुहुँदिशिबिबि सरयूजल झारी। कोटिचंद्र निंदक छबिकारी॥
प्रभुहिंनिवेदि आचमन नागरि। मुखअंगौछिपटसुरभिगुनागरि॥
बिबिधि भोग पकवान सुनीके। षटप्रकार शुभस्वाद अमीके॥
मेवा अमित मधुर रुचिवारी। दधिचिहुरा उपरस हितकारी॥
सुधासुरुचि दम्पति मनभावन। पाक प्रत्येक शास्त्रवितपावन॥
उत्थापन प्रभु भोग विधाना। सबिधिप्रकारनश्रुतिसबजाना॥
थार कटोरा चषक सुहाए। हाटकमणि निर्मित श्रुतिगाये॥
तिनमें सविधि रुचिर सुखदाई। साजिसुगन्धितबिबिधमिठाई॥

दो०-प्रथमहिंसिंहासनसुखद, उत्तरदिशिसुखराखि।
तहँपुनिभोगबिधानप्रिय, साजिसुखेनइमिभाखि ३॥

जयति युगल रघुबंश उज्यारे। प्राणनाथ सर्वज्ञ हमारे॥
चरणसरोज धारि सुखदीजै। जोरुचिभोजनदिशिरुखकीजै॥
विनयनिवेदि युगलरुचिजानी। दिये पांवड़े अर्घ सयानी॥

दो०-प्रभुउत्थापनभोगदिशि, उत्थितलखिनिजनाथ
चमरछत्रगहिबिजनकर, चलींसकलमिलिसाथ ४॥
कुसुमबृष्टिक्षणक्षणकरहिं, भरींप्रीतिरसरङ्ग।
चलींमंजरीललितनव, चहुंदिशिबढ़ीउमङ्ग॥४॥

सिंहासनसमीप प्रभु आये। भये सबिधि सबकेमनभाये॥
निज श्रीपद उत्थित चितदीजै। सिंहासन सनाथप्रभु कीजै॥
इतिबद सुखद नकीब मंजरी। अपरसप्रीति विनयअनुसरी॥
एकहि सिंहासन रघुनन्दन। युगलललनशोभितजगबन्दन॥
पद्मराग मणिजटित सुहाई। प्रियकंचन चौकी युगआई॥

तिनपै सुखद थार रसरासी। सजेसकल अव्यक्तप्रभासी॥

दो०-प्रभुउत्थापनभोगरुचि, लियेग्रासदोउलाल।
यहसुखसम्पातिसरससब, परिकरनिरखिनिहाल ६

नाना यन्त्र सुरनसज्जितनव। गावनलगीं मंजरीकलरव॥
मिथिला अवधसनेह सम्हारी। गारी देहिं मंजरी प्यारी॥

(मञ्जरीबलैनिवेदित निकुंजान्तर्गत गारी)

॥ अथगारी ॥

सुनिये लली लाल रघुनन्दन प्रीति रीति युतगारी जू।
आपश्याम स्वामिन् हमगोरी यहअचरज उरभारी जू॥
जोपै नाथ आपरुचिहोई तो हम भात बिचारी जू।
कछुककाल मिथिलाचलिबसिये ह्वैनागरिसुकुमारी जू॥
श्रीलक्ष्मीनिधि के महलनमें रहिये रूपउज्यारी जू।
मनभावती टहल प्रभु करिये श्रीसिधिके रुचिकारी जू॥
तबप्रभु गौरवरण तनपैहो सियस्वामिन्अनुहारी जू।
हँसि २ कहहिंबात यहसबबिधि सुखदसुखेनबिचारी जू॥
अबबिलम्ब जनिकरियलाड़िले जनकनगरपगधारीजू।
सुनि मुसक्यात परस्परदम्पति कामदेन्द्र बलिहारी जू॥

दो०-सबहिंसुखदआरोगिदोउ, प्रभुउत्थापनभोग।
दियेआचमनमंजरिन, सरयूजलउपयोग॥ ७॥
पानमसालेविबिधिबिधि, सौरभअकथप्रकार।
दम्पतिप्रभुहिंसमर्पिसब, मुदितभईइकबार॥ ८॥

॥ अतिआतुरप्रियमंजरिन, प्रभुपोशाकसम्हारि ।
प्रत्यङ्गनभूषणविबिध, दम्पतिरुचिअनुहारि॥ ९ ॥
जंत्रावालिकौस्तुभकलित, युगलललनप्रभुग्रीव ।
पहिरायेप्रियमंजरिन, छबिअभिरामअतीव १०
राईलोन अनेक बिधि, यंत्र मंत्रउपधान ।
वेदशिषरश्रुतिशृंखला, चहुंदिशितंत्रवितान ११

करिशृंगार निरखि छबिनीके । श्री मिथिलेशललीप्रियपीके ॥
उज्ज्वलमणि आदर्स सुहाये । दम्पति प्रभुसन्मुखयुगआये ॥
बदन प्रभूत प्रभा छबिकारी । श्यामगौरनिजमुकुरनिहारी ॥
पुनिबीटिका मंजरिन दीन्ही । युगलपरस्परकर मुखलीन्ही ॥
मन्दास्मित दोउ लालनप्यारे । छबि शृङ्गार रूप उजियारे ॥
मणिमंडितमुकुन्द सिंहासन । तापरसबिधिसुखदशुभआसन ॥
उपवरहणरबि छबि किमिएका । चहुंदिशिप्रियउपधानअनेका॥
मध्यसुखद रघुकुल मणिप्यारे । त्रिभुवनरूप राशिउजियारे ॥
श्रीमिथिलेशलली सुखरूपा । श्रीरघुकुलमणित्रिभुवनभूपा ॥
दम्पति सबके प्राण अधारा । जीव शंभुबिधिविश्नुअपारा ॥
सबके प्रभु सबके सुखदाता । सबकेवित सबके हितत्राता ॥
प्रभुआसीन निरखिछबिप्यारी । परमरुचिरआरती सम्हारी ॥
कलकंचन युगथारन साजी । पृथक २ शुभआरतिराजी ॥

दो०—अतिसहर्षदीन्हींसबिधि, सर्वेश्वरीस्वहस्त ।
करगृहीतलखिआरती, बजेनिशानप्रशस्त १२

सर्वेश्वरी चारु शीला हित । पृथम आरती करी ग्रीव नत॥

चारुशील मानि तथा पृथमकरि । प्रभु आरती सनेम प्रेमभरि ॥
जिमि निकुञ्जअन्तर रसरीती । करी आरती संबहिं सप्रीती ॥
अस्तुतिप्रणतिशास्त्रवितपावन । करिसबहिंप्रभुरुचिउपजावन ॥
महाभाव सम्मिलित नवेली । प्रभु संग करहिंकुतूहलकेली ॥
अबजो प्रथम प्रसंग अनूपा । इन्द्र उपेन्द्र तियनअनुरूपा ॥
प्रभुनिकुंजके द्वितियआवरण । बिबिधियुत्थवृन्दारकतियगण॥
नानाभांति सौंज सबलीने । कुसुमकेलिरतिकेलि प्रवीने ॥
देश देश की बस्तु अनूपा । सजे सविधि मंगल अनुरूपा ॥
लिये करन कलकेलिनथोरी । किलकंदुक कलचकई डोरी ॥
बिबिधि सुरंग पतंग सुहाई । चौपड़ गोट चित्र समुदाई ॥
गंजीफा सतरंज सुभावन । चित्रसभा पुत्रिका सुहावन ॥
कोकिलशुक पिक हंससुहाये । द्विजअनेकरसरीति सिखाये॥
दारुयोषिता बृन्द समाजै । पट योषिता ललीहितकाजै ॥
अपर अनेक केलि रससारा । लिए अमित बृन्दारक दारा ॥
मध्य विशद सिंहासन सोहै । उपमासमात्रिभुवन छबिकोहै ॥
दशसहस्र आवर्ण अनूपा । यूथेश्वरी मिलित अनुरूपा ॥
चहुँदिशि सिंहासनके ठाढ़ीं । बृत्त ब्यूह रचि आँनदबाढ़ीं ॥
इंद्र उपेन्द्र तिया सुकुमारी । उभय थार आरती सम्हारी ॥
ठाढ़ी प्रभु दंपति मग जोहैं । सुधि न शरीर कहां हमकोहैं ॥
बामनतिय सुधिकरिदोउप्यारे । द्वितियावर्ण चरण प्रभुधारे ॥

दो०--चमरछत्रसौरभसुखद, बिस्तृत वाह्यप्रदेश ।
जानेउप्रभुआगमनशुभ, वदनिनकीबसुदेश॥

चोबदार मंजरी अनेका । हर्षित प्रथम गई सबिवेका ॥

प्रथमजाइ तिन खबरि जनाई । प्रभु आगमन हर्ष समुदाई ॥
प्रभु आगे नकीब द्वै सुन्दर । दण्डपानि युगमनहु पुरंदर ॥
तिनकीधुनिसुनि उठीं सहर्षित । अतिआतुर सप्रेम रसबर्षित ॥
इमिसहर्षदिशि बिदिशिन देखैं । प्रभुदर्शन उत्सुकित विशेषैं ॥
इतने में दम्पति सर्वेश्वरि । द्वितियावर्ण भूमि दरशितपरि ॥
प्रभुहिं बिलोकि सुमन बहुवर्षीं । नैनलाहु सम्पति लहिहर्षीं ॥
कृत अंजली सशंकित एशा । ठाढ़ीभईं समस्त सुदेशा ॥
जयति २ चहुंदिशि धुनिहोई । प्रभुताजि अनतलखैनहिंकोई ॥
प्रभुहर्षित सिंहासन राजे । नवमंगल निशानशुभबाजे ॥
पुनि प्रभुपद बन्दन शुभकीन्हे । लोचनलाभसबिधि सुखलीन्हे ॥
इन्द्र उपेन्द्र नवल नागरिशुचि । करसम्पुट ठाढ़ीं लखि प्रभुरुचि ॥
यूथेश्वरी रजायसु पाई । नीराजन हित सैन जनाई ॥
सोलखि प्रथमनजरि न्योछावरि । दम्पतिप्रभुहिं समर्पिकरनकरि ॥
कुसुमावली अनेक प्रकारा । मणिमौक्तिकसृगवस्तुअपारा ॥
निज २ करनलिये सब शोभित । युगलललनपददृष्टि सुलोभित ॥
समयजानि आरती सम्हारी । इन्द्रउपेन्द्र वधुन करधारी ॥
प्रथम आरती चरणन मुदभरि । पुनिकटिदेश कछुकउन्नतकरि ॥
पुनिदम्पति श्रीमुख रँगभीनी । करी आरती सुरति प्रवीनी ॥
पुनि सर्वाङ्ग आरतीकीन्हीं । युगुलललन छबिनिरखिप्रवीनी ॥
यहिविधिकरि आरती अनूपा । निरखियुगलछबिमंगलरूपा ॥
पटपूसून विधिवत दरसाये । सरयूजल सअर्घ अर्पाये ॥
पुष्पांजली समर्पि सप्रीती । अस्तुतिसबिधिप्रणतिजसरीती ॥
पाय रजायसुनिज २ आसन । बैठीं प्रभुपद पद्म उपासन ॥

इन्द्र उपेन्द्र पाट महिषीकिल। बैठीं प्रभु सिंमासनतेमिल॥

सो॰-निज२अङ्कनधारि,युगलललनश्रीपदसुखद।
बोलींबचनसम्हारि, धन्य २ हमआजप्रभु॥

इतिश्रीसाकेताधीशश्रीमज्जनकनन्दिनीकान्तकृपालअनन्त श्रीरामलाल ज्येष्ठ बंधु श्रीमदुत्तरकौशलाधिपराजराजेन्द्रआतात्मज श्रीरघुवंशकुमारलाल श्रीकामदेंदुमणिदेवमीसुहृदश्रीराघवेंद्रसखाजीकृत श्रीसाकेतनिकुंज अनंत श्रीसीतारामभद्रकेलिकादम्बिनी ग्रंथश्रीसरयूसरिविहारार्थागमनविनोदवर्णनोनाम चतुर्थोमेघः॥४॥

चापाहिचरण लाय उर नीके। भरीनेह रघुलाल ललीके॥
शुचिसुगन्ध मलि मंगलरूपा। निरखहिंचरणसरोज अनूपा॥
नैनवारि भरि २ पुलकिततन। बोलींसकुचिजोरिकरप्रभुसन॥
हमसबभांति,अज्ञमतिनारी। पुनिप्रभुबिछुरनिअतिदुखकारी॥
प्राणनाथरघुकुल मणिस्वामी। युगल सरूप सर्व उरगामी॥
श्रुतिप्रतिपाद्यअनन्त अनूपा। हमनिरखहिंकौशलपतिभूपा॥
दम्पति प्राणनाथ छबि प्यारी। सदा रहैं हम नैन निहारी॥
क्षणबिछुरबप्रभु कल्पसमाना। हमहिं दीजिये यह बरदाना॥
युगल ललन देखे बिनुनाथा। प्राणजायबिछुरनिदुखसाथा॥
इन्द्र उपेन्द्र परमपद भारी। नाथनहम इनके अधिकारी॥
तदपि नाथ निज सेवकजानी। दीन्हेउहमहिं सर्वसुखदानी॥
ऐसहु पद लहि प्रभुसेवानित। करीनहमअर्पिततनमनवित॥
धिग २ सुनासीर सम्पतिसुख। प्रभुपदप्रीतिरहितसन्ततदुख॥
सो किमि प्रियरघुवंश उज्यारे। दम्पतिप्रभुबिनुकुगतिअगारे॥

दो॰-अबहमउरसंततबसिय, ललीलालप्रियधाम
श्रीरघुकुलमणिदम्पतिहिं,सेवैंनितनिष्काम १

यद्यपि प्रभु ऐश्वर्यते, जीव सीव त्रयपाद ।
पालितहितसन्ततसबिधि, किलभवविष्णुअजाद ।
परतर तम परमेशप्रभु, असससमर्थ रघुबीर ।
तद्यपिप्रियमाधुर्यरस, जिमिप्रियललनसमीर ३॥

तब प्रभुअनुकम्पा युत बानी । बोले श्री रघुकुल सुखदानी ॥
इन्द्र उपेन्द्र पाट महिषी तुम । जानहु गुप्तभेदसहप्रियमम ॥
जेहि पथ तुमबशहोहुँ सुखागी । सो माधुर्यभक्ति मोहिंप्यारी ॥
जे ऐश्वर्य भाव मोहिंध्यावें । ते नित अगमअगोचरगावें ॥
व्यापकअवपु ध्याननितकरहीं । नेति २ श्रुतिकहि इमिलरहीं ॥
अन्तर श्रुतिपथ मर्म न जानै । पढ़ि बहुबाद बृथाहठ ठानै ॥
बिन सतगुरु यहभेदनमिलिहै । रसमाधुर्यकमलकिमिखिलिहै ॥
पूरा सतगुरु जो कहुं पैहै । सो माधुर्य भेद दरसइहै ॥
युगलमंत्र दम्पति रघुनायक । द्विषटवर्णबरभिन्न बिभायक ॥
आयुधनामयुगुलकंठी प्रिय । ममपदचिन्हतिलकअंकितश्रिय ॥
इज्यसौंजबहुंदिशिसम्यकधरि । ये उप संस्कार प्रथमहिंकरि ॥
दक्षिणकर्णशीश निजकरधरि । देहि मंत्र सतगुरु नरबपुहरि ॥
शरणागत आयुध भूषणत्रय । देइसबिधिसतगुरुसम्भवश्रय ॥
पुनि श्रीसीताराम षडक्षर । युगुल मंत्र अर्पैसतगुरुवर ॥
पुनिसम्बन्ध पंच रसदायक । देइशिष्यकहँजानिअमायक ॥
वत्सल सख्यशृंगारदास्य जस । शांतगौण अव्यक्तपंचरस ॥
शुचि अधिकारशिष्यउरजानी । देइयथा रुचिरस सुखखानी ॥
सुनिसतगुरुमुखबचन सप्रीती । बिधिनिषेधतजिकैस्प्रतीती ॥
सतगुरु बचन सत्य सबसारै । योग्यायोग्य न मर्मविचारै ॥

निज सतगुरु मोहिंसम अनुसरै । नीच ऊंच सेवा सब करै ॥
सतगुरु धान्य चुराव न कबहूं । मरण अयन्त होहि दुखतबहूं ॥
जो सतगुरु सेवा मनलावै । सो परलोक लोकसुखपावै ॥
अविरर्जित तप यह जानौ । ममसम श्रीसद्गुरुनिजमानौ ॥
षोड़शविधि सद्गुरु पदपूजा । करै सप्रीति देवतजि दूजा ॥
अब सद्गुरु पहिंचान सुनीजै । प्रथम अनन्यदेशलखिलीजै ॥
श्री सीतापति चरण उपासी । अन्यदेवरति बिगत सुभासी ॥
नाम रूप लीलागुनधामा । दृढ़ परत्व षट्रसिकललामा ॥
ऐश्वर्ये माधुर्य बतावै । नित्यनिमित्य भेद दरसावै ॥
निजपर बिबि स्वरूप रसप्यावै । युगलनाम ममप्रीति दृढ़ावै ॥
रति श्रीसीताराम नामपर । रस धुनि उपजावे क्रम २ कर ॥
युगल निकुंज रहस्य नवलरस । सो सदगुरु उपदेशकरै अस ॥
नाना ईश मूढ़ नर जानै । यहअतिकुमतिसुसतगुरु भानै ॥
मम पद दृढ़ अनन्य रतिदायक । सो सतगुरु सर्वज्ञ अमायक ॥
सो सतगुरु निकुञ्ज दरसावे । महल टहल रस भेद बतावे ॥
अस सद्गुरु जब मिलै भागबस । तब पावे माधुर्य महारस ॥
ऐसे सतगुरु के पद पंकज । सेवे नित्य लोक नाते तज ॥
वित निज देह जनित पुरुषारथ । करिसेवे गुरु सबिधि यथारथ ॥
सविधिशिष्यजब गुरु अवराधा । प्रेरौं बिघ्न करौं तेहि बाधा ॥
बिबिधि दुःख लौकिक दरसाऊं । सतगुरुकर नित दगड कराऊं ॥
पुनिसतगुरुमुख अतिअपमाना । करवाऊं संतत विधि नाना ॥
लेहु परीक्षा बहुबिधि तासू । उर राखौं अतिकृपा हुलासू ॥
कछुककाल यहिबिधि कसिलेई । बिबिधि तृताप जनितदुखदेई ॥

जोपै शिष्य चतुर मति धीरा। गनै न निज मन वित्त शरीरा॥
ज्यों २ ताहि कसैं हम सुंदरि। त्यों २ गुरु सेवे नित हठकरि॥
जिमि सुशिष्यलौकिकदुखपावे। तिमि सतगुरुपदप्रीति बढ़ावे॥
तन मन धन गुरु ऊपर वारे। छन २ सतगुरु चरण निहारे॥
ऐसो शिष्य होय सुन्दरि तब। संतत मोमन बसै नेह नव॥
ऐसो सद्गुरु भक्त शिष्यवर। सोहमकोप्रियाजिमिविधिहरिहर॥
नित्य तासु पाछे हम डोलैं। यद्यपि वह बोल न हम बोलैं॥
तेहि अपने महलन हम राखैं। ताते भेद गुप्त निज भाखैं॥
ऐसे शिष्यहिं हठि अपनाऊं। तेहि माधुर्य भेद रस प्याऊं॥

दो०—ताकोतासु सरूप दे, नित राखौं निज पास।
जो पावै सतगुरु कृपा, रसमाधुर्य उपास।४॥

सुनि हर्षीं निज प्रभु मुखबानी। बामन तियाबिन मोलबिकानी॥
इन्द्रनागरी निरखि बदन छबि। बदतिजयतिदम्पातिरबिकुलरबि॥
जयति २ माधुर्य महारस। दम्पति प्रभु संतत जाकेबस॥
सो प्रभु कृपा बिना न मिलैरस। प्रकटकेलिऐश्वर्यमिलितजस॥
रसमाधुर्य महल अन्तर हित। महानिकुंजनिकुंजनिलयनित।
सुखद चार पुरुषारथ लसहीं। प्रभु उपमहल अगारन बसहीं॥
पंचम बहिर शांति जेहि नामा। सोजनपदबहुब्यक्ति ललामा॥
गौण मुख्य रसके अधिकारी। क्रमते पंचभाव रतिकारी॥
यद्यपि प्रजा शान्तिरसदायक। तद्यपि कछु माधुर्य स्वभायक॥
बिनु संबंध नहीं रस सरसैं। दम्पति महल केलि सुखतरसैं॥
अतिप्रिय इन्द्र बधू मुख बानी। सुनि हर्षे दम्पति रससानी॥
करि सुकृपा प्रभु ताहि प्रशंसी। श्रीमुख करे भेद रस अंसी॥

द्वै प्रकार ऐश्वर्य अनूपा । एक रुक्ष दूसर रसरूपा ॥
जो ऐश्वर्य कदाचित होई । रस माधुर्य लखै नहिं कोई ॥
यह तटस्थ उद्दीपन जानौ । यामें भेद कदापि न मानौ ॥
जो ऐश्वर्य अजादिक ध्यावैं । तेहि मदीय माधुर्य बनावैं ॥
यह ममभक्ति युक्ति करिजानै । महल टहल रस मर्म पिछानै ॥
जो ऐश्वर्य रुक्ष पथ बादी । तेहि मानत हठि शठ मतबादी ॥
निर्वपु भेद प्रथम वै ठानैं । अति अज्ञानन श्रुति मतजानैं ॥
सोहमस्मि निर्बयब न होई । सःअरुअहम् किमपिमतिखोई ॥
सःसर्बोपरि मोहि जो जानो । अहम्जीव आकृति अनुमानो ॥
जो श्रुति मर्म धर्म गत जानै । तौ न भूलि निर्बयब बखानै ॥
इमि ऐश्वर्य मिलितमतरूखा । जिमि पय पियै रहै पुनिभूखा ॥
सर्बब्रह्म खलु मिदं चारि पद । ये च्यारों साबयव अर्थ प्रद ॥
निश्चय सर्ब लोकपति स्वामी । इदंजीव के अन्तर्यामी ॥
तत्अव्यय विभक्तियोजितकरि । त्वंअसिसमुझिन वृथाबादलरि ।
तत्त्वमसी के अर्थ अनेका । सब साबयव प्रशस्त प्रत्येका ॥
पांच बिभक्ति पंच परमानिक । द्वैसंभ्रमअतिअबुधअयानिक ॥
जेहिते श्रुति निर्बयब बतावै । तासु मर्म सद्गुरु लहिपावै ॥
पर तरतम मम रूप सुधामी । नामराम मम अकथ अनामी ॥
सतचित आनंदघन ममरूपा । मंगल बपु दम्पति अनुरूपा ॥
सर्वोपरि मम धाम सुहावन । श्रीसाकेत अवधि अतिपावन ॥
जिमिसतचितघनहमविविरूपा । तिमिपरिकरममनित्यअनूपा ॥
जिमि ममपुर साकेत महलपर । तिमि श्रीअवधिअनूप केलिघर ॥
श्रीमिथिलेश राजपावनकल । कामद महल तथा सुकेलिथल ॥
मम सुधाम के भाग चारि पर । तिनमें बसैं पंच परिकर वर ॥

तीन मुख्य दुइ गौण अभेदा । निजसरूप लहि होहिं सभेदा ॥
दास्य शान्ति यावत तटस्थमति । महाभाव विभिचारी गतिरति ॥
महाभाव आशक्त दास जब । बिभिचारी प्रमाद हर्षिततब ॥
फिरि न तटस्थ शान्ति रस संगी । रहै दास निज स्वामि प्रसंगी ॥
ततसुख मधु प्रमत्त जब दासा । स्वमुखसंधितजिनिजप्रभुपासा ॥
बिबिधि रूप धरि नित ममसंगा । रहैन बिछुरनि छिनक प्रसंगा ॥
यदपिशान्तिरस मम परिकरगत । जो नहोय ऐश्वर्य रुक्ष रत ॥
यथा धाम ममपुर साकेता । तथा शान्ति रसराज निकेता ॥
यहि प्रकार प्रभु दीनदयाला । परितोषी सुरपति बिबिबाला ॥
घटिका चारि शेष दिनजानी । यूथेश्वरी सर्बगुनखानी ॥
प्रभु रुचि लखि सुखपाल मँगाये । सुनि निदेश हर्षित उठिधाये ॥
जानि सुसमय नकीब अनूपा । जय महेन्द्र मण्डन बिभुभूपा ॥
उच्चसुर प्रिय बिरद उचारी । सुनिप्रबसुमुखिजायँबलिहारी ॥
चहुंदिशिखड़ींसकलसुरभामिनिंतिन केमध्ययुगुलअनुगामिन ॥
प्रभु अन्योन्य सुगत रुचिपालन । उठे सहर्ष नवलदोउ लालन ॥
प्रभु उत्थान निरखि सब बाला । बर्षहिं कलित कुसुमम‍ृदुमाला ॥
बजे निशान नर्त्तकी नाचहिं । बिबिधिबिदूषककौतुकमाचहिं ॥
बिश्वावसुके कुणक कलोलें । जयतियुगलरघुकुलमणिबोलें ॥
यहिबिधि प्रभु सुखपाल बिराजे । चले सकल शुभमंगल साजे ॥
दोहुँ दिशि इंद्र उपेन्द्र नागरी । प्रभुसुखपालमिलितगुनआगरी ॥
चली संग रसराज रसीली । युगलललन छबिजालकसीली ॥
जेहि मारग प्रभु चले सुहावन । श्रुतिअतर्क छबि पुंजलजावन ॥
पंचमार्ग सम्मिलितमनोरम । जिनहिंनिरखिसंकितभ्रमश्रमतम ॥
योजन अयुत सहस्र अनूपा । चौड़े अतिप्रशस्त सुखरूपा ॥

शत २ योजन दुहुंदिशिपावन । सरयूनहर अमित छबिछावन ॥
पद्मरागमनि निर्मित राजैं । भूमि पुलिनतट ललिताविराजैं॥
विविधिरंगमणिमिलितसुमानिकदुहुंदिशिप्रियसोपानप्रमानिक
हाटकमिलितसविबिधिमणिमोती । बँधे घाट दुहुंदीश छबिगोती ॥
मध्य मध्य बेदिका सुढारन । बनी बिबिधि रसरूप हजारन ॥
तिनपरकलितललितफुलवारी।मणिनिर्मित विधिस्त्रकरसँवारी॥
दुहुँदीशि बनी मृजादसुहावन ।हाटकखचित मणिनमयपावन॥
जालिन कृत कटाव अति सुंदर ।उपमासम नहिं कीट पुरन्दर ॥
बूटाबेलि बिबिधि रंगन के ।मुक्तन खचित कांति अगनके॥
महल पंक्ति नहरन बिच सोहैं ।छबिबिलोकि रबिशशिमनमोहैं॥
तिनपर हर्मि २ हर्म्योपर । पुनः हर्मिपर हर्मि सुखद वर ॥
मध्य २ प्रभु महल सुहाये ।आन्हिकबिधिजसश्रुतिमुखगाये ॥
बिबिधिनिवास बने दम्पतिहित । महा निकुंज २ निलय कृत ॥
पंचमार्ग जे प्रथम कथितवर । तिनमें अति सुन्दर परतरपर ॥
मध्य मार्ग प्रभु दम्पतिहितकल । अतिकोमलशोभितरसेशथल॥
प्रभुहितमारगके दुहुंदिशशुचि । युग २ मारग अपरसुखदरुचि ॥
धनुष २ परमान पंक्ति खचि । जूप अलंकृत अद्भुतरसरचि ॥
योजनअयुत २ लंबित प्रिय ।अधःऊर्द्धबिथमित बिलुलिताश्रिय ॥
प्रभुमारग दुहुंदिशि छबिछाये । बिबिधि यंतयुत सुथल सजाये ॥
तिनमें मणि प्रदीप छबिकारी । मन्दहोत लखि चंद उज्यारी ॥
हाटकमणि किंजल्क सँवारि । यूपन मिलित कर्णिका ढारी ॥
तिनपरसुरँगबितानेतजनिधि। त्रिभुवनछबिजनुरुकीसहसबिधि
तदुपरि पुनि षोड़श बितानवर। बरतुल तने तमारि परापर ॥

तिनकृतभालरि दुहुदिशिझूले । उपमा न्यून कमलकुल फूले ॥
अति सूक्ष्म परदा छबिरासी । बांधे दुहुंदाशि अकथ प्रभासी ॥
नानारंग लहरि गुन गांसे । हाटक तंतु प्रभाद्युति फांसे ॥
मिलितबितानप्रक्तप्रभु मारग । खुले यथाबिधि जबद्याबिपारग ॥
तिन परदन की कोर किनारी । मुक्तन बँधी सबिधि अतिप्यारी ॥
जलकन किरने तंतुमयजाली । तनी दुहुनादिशि रंगप्रवाली ॥
बिचबिच पंचरंग रसरासी । अति अद्भुतकृत अंब शुभासी ॥
जलनिर्मितमुक्तामनिमानिकतिनकरिचहुंदािशजटितप्रमानिकं
तिनपीछे बाटिका मनोहर । दुहुंदिशिखिली कुसुमसींचतवर ॥
हरित मणिनमय परमसुहाये । बिच २ पादप बिबिध बनाये ॥
पनस रसाल ताल कदली कल । बेलिबितान अनेक सहितफल ॥
सुहृद नर्म प्रिय सखा सुहाये । तिनके चित्र चारु खिंचवाये ॥
मुग्ध मध्य प्रौढ़ा रुचिकारी । जे प्रिय सखी लली हितकारी ॥
तिनके चित्र अनूप लिखाये । श्रीमिथिलेश लली मनभाये ॥
उपमृजाद अति मधुर सुहाई । मारगके दुहुँ दिशि बनवाई ॥
तिनपर सबिधि चित्रखिंचवाये । पंक्ति विशिष्ट दुहूंदिशि भाये ॥
युगलललनसुखपाल बिराजित । चलेजात तेहिमारग राजित ॥
निज२परिकर चित्र सम्हारी । निरखहिं लली लालछबिप्यारी ॥
जासु चित्रदंपति अवलोकैं । ताहि बुलाइ जान निजरोकैं ॥
तासु बदनयुत चित्र मिलावें । करिप्रसन्न प्रभु ताहि खिलावें ॥
बखसैं बिबिधि बसन मणिमाला । कड़े गुंजगज अश्वदुशाला ॥
कृपावलोकनि कामद प्यारे । युगल ललन रघुबंश उज्यारे ॥
मृगशावक गजशावक नाना । जानत सब रसकेलिबिधाना ॥
पहिरे बिबिधि बसन बर नीके । अलङ्कार लखि उड़गणफीके ॥

साजि सजि युत्थ चले सबआगे ।प्रभुहिंविलोकि चहूंदिशिभागे ॥
कबहुँ बीररस करि २ कोपैं । लड़ैं सुखेन केलि मग रोपैं ॥
हंस चकोर मोर मदमाते । निरखियुगलछबि उर न समाते ॥
कहुँ बोलैं कहुँ नृत्य कराहीं । कहुँ प्रभुसंग बिबिधि बतराहीं ॥
औरहु अमित केलि रस रूपा । सुखद ललित कल भेद अनूपा ॥

दो०-यहिबिधिहोतअनंदमग,लखीलाल रघुनाथ ।
चलेजातसबकेसबिधि, लोचनकरत सनाथ ॥

इतिश्रीसाकेताधीशश्रीमज्जनकनन्दिनीकान्तकृपालअनन्त श्रीरामलाल ज्येष्ठ बंधु श्रीमदुत्तरकौशलाधिपराजराजेन्द्रभ्रातात्मज श्रीरघुवंशकुमारलाल श्रीकामदेंद्रमणिदेवजीसुहृदश्रीराघवेंद्रसखाजीकृत श्रीसाकेतनिकुंज अनंत श्रीसीतारामभद्रकेलिकादम्बिनी ग्रंथश्रीसरयूसरिविहारार्थगमनविनोदवर्णनोनाम पंचमोमेघः ॥५॥

नारायणी कला कल हंसा । जासु प्रथम हम कीन्ह प्रशंसा ॥
तिनकी त्रिया कृतज्ञ उदारा । प्रभु पद प्रीति प्रतीति अपारा ॥
नाम रूप लीला गुण धामा । पंचकेलि रस रसिक ललामा ॥
श्रीमद्रामायण रस भेदा । स्वगत सुजान अतर्कित वेदा ॥
प्रभु आगमन देखि हरषानी । चलीं लेन सजि वर्ग सयानी ॥
बिबिधि हंस युत बनितन भीरा ।चलींसंग सजि मणिगण चीरा ॥
सावित्री वेधा उपरानी । हर्षित चलीं लेन सुखदानी ॥
ब्रह्मलोक की नागरि जेती । परम उपासिक प्रभुपद नेती ॥
श्रीसीतापति नाम उच्चारैं । सुनैं परस्पर तनमन वारैं ॥
पल्लवदीप सहित कलसावलि । सजित सिरनचलीं प्रमोदपलि ॥
प्रभुसन्मुख पहुंची सब नागरि । श्रीसीतापति पदरति आगरि ॥
दोवि नकीब बिरद उच्चरीं । दीनबन्धु ए प्रभु किंकरीं ॥

जयति महेंद्र मुकुट मनि मंडक। कुमति प्रमत्त वलय बपुदंडक॥
इनपर कृपादृष्टि निज जानी। करिये नाथ सहित पटरानी॥
सुनिनकीबमुखअति प्रियबानी। सावधान सब भईं सयानी॥
निज २ करन नजरि करि आगें। निरखि २ प्रभु छबि अनुरागें॥
चारुशील मणि राजदुलारे। यूथेश्वरी सहित प्रभु प्यारे॥
दोउकरजोरिबिनयशुचिकीन्ही। हंसबधू बिधि तिय प्रभुचीन्ही॥
जयतियुगलदंपति मनभावन। इमिकहिप्रणतिकीन्हअतिपावन
प्रथम हंस भामिन कर धारी। नजरि निवेदि निछावरि वारी॥
पुनिबिधात्रिनिजपाणिनजरिधरिन्योछावरिप्रभुलखि सहर्षकरि॥
प्रभु सुखपाल संग दोउ लागीं। उभयओरअतिमिलितसभागीं॥
श्रीरघुबीर प्रणत जन स्वामी। युगल सर्व उर अन्तर्यामी॥
तदपि कुशलपूंछी निजजानी। हौ प्रसंन बिबि सुमुखिसयानी॥
दोउकर जोरि २ इमि भाखी। प्रभुकृत कृपा कुशल हमराखी॥
जहा जहां प्रभु कृपा निहोरें। सोइ सुख संपति ओर न भोरें॥
उर लालसा नाथ सब जानें। कहिन सकें हम अति डरमानें॥
मंदस्मित प्रभु रघुकुल नायक। बोले कृपा बचन सुखदायक॥
प्रीति प्रतीति रीति रस रासी। हौ अनन्य दोउ प्रिय ममदासी॥
तुम ममप्राण प्रिया पटरानी। आराधेउ नित हम समजानी॥
तुमअभिलासअधिकमोहिंप्यारी। नितबिधिहंसप्रिया सुकुमारी॥
तदपि बिनै कीजै निज काजै। आतिकृपाल तब स्वामिनिराजै॥
जेहि प्रकार आज्ञा इत होई। मोहिं अतिसुखद सदाप्रियसोई॥
सुनिप्रभुश्रीमुखअतिप्रियबानी हंसबधू बिन मोल बिकानी॥
सह बिधात्रि सरूयोज्वल भीरा। सुनिहर्षितअति सुधिन शरीरा॥

जयति २ रघुकुल मणि प्यारी। इमिकहिसकलजाहिं बलिहारी॥
श्रीसाकेत राज पटरानी। सदा आप वश प्रभु हमजानी॥
आपसदाप्रभुके बशस्वामिनि। अकथपरात्पर रतिअनुगामिनि॥
यहसोभाग्यअचलरसदिनदिन। हमानिरखैं दम्पतिसुखछिनछिन॥
अब जसरजा होइ महरानी। प्रणत जनन इच्छा सुखदानी॥
स्वगत विविक्त बिमोद बिहारी। लखि इंगित निज २ रुचिकारी॥
तब रघुबंश राज पटरानी। बोलीं अति कृपालु मृदुबानी॥
अवधनाथ ममनाथ प्राणपति। बिरद सदा निर्हेतु भक्तरति॥
येबिधि हंसपाट उपकारीं। सब सुखद प्रभुपद अनुचरीं॥
इनके उर अभिलाष सुहाई। प्रभु समर्थ सबके सुखदाई॥
प्रभु इनके आश्रम कछु काला। चलिसुख दीजियपरमकृपाला॥
मन्दस्मित कौशलपुर प्यारे। अति कोमल प्रिय बचनउचारे॥
यथा आप रुचि ममरुचि सोई। ममकृत तथा आप रुचिहोई॥
जयति राज राजेन्द्र दुलारी। जय ममप्रिया सर्व हितकारी॥
युग प्रभु रुचि यूथेश्वरि जानी। चारुशील मणि युतप्रियबानी॥
प्राणनाथ दम्पति अनुशासन। सबहिं सुनाई सहित हुलासन॥
सो सुनि सिरदारिनी अनेका। आगे चलीं सहर्ष प्रत्येका॥
सहजासन गादी उपधाना। राज सौंज प्रिय सेज बिधाना॥
अमितकोटि किंकरी प्रवीना। लियेसबबिधि सुख बस्तु नवीना॥
प्रथम जाइ दरबार मिहारी। जहँ जसउचित बरासन धारी॥
जहँ जसतस मृजाद अवलोकी। करि प्रबन्ध प्रिय भई बिशोकी॥
खड़ीसकल संनद्ध चहूंदिसि। प्रभु आगमन प्रहर्ष मोदमिसि॥
पाणि दण्ड दारिका नवेलीं। बिचरहिं मग अनंत अलबेलीं॥

दण्डअधिकछबिकबिकिमितारा। कहनभ कह साकेत अगारा ॥
यहि प्रकार प्राकृत उपमा सब। देत न बनै प्रमोद न उरभव॥
सिरदारिनी अनेकन डोलैं। करैं प्रयत्न परस्पर बोलैं॥
बिबिधिसुगन्ध अमित उपचारा। बहु अस्तवक अनेकप्रकारा॥
चषकन सजे चहूंदिशि सोहैं। लघु दीरघ युत पंक्ति रिझोहैं॥
आलबाल वेदिका सुहाई। पुरट जटित मुक्तन बहुताई॥
तिनपर कल्प वृक्ष बहुभांती। गुल्म अधिक कृत नानाजाती॥
लतिकन कृत जंगम कलजालीं। कनक तंतु पाटन प्रतिपालीं॥
चहुँदिशिसज्जींसुदेश सुहावनि। सफलससुमनससौरभपावनि॥
पारिजात मन्दार प्रगाती। मोद प्रभादिक पादप जाती॥
चामीकर थल पात्रन सोहैं। मणि वेदिकन सजेमनमोहैं॥
नाना जाति वृक्ष जग जेते। लता सुमन थल जंगम तेते॥
जिमिअराम पद्धतिश्रुतिगाई। सब जंगम प्रभु संग सुहाई॥
सुथल पात्र बेदिका बिधाना। स्वर्णरत्नमणिभवविधिनाना॥
सकल सुदेश सपंक्ति सजाए। बिबिधिरंगजसश्रुतिकिलगाये॥
चहुं दिशिप्रियआराम बिधाना। मध्य सभा वेदिका प्रधाना॥
कोटिन चन्द्र प्रभा उपहारी। बिछी चांदनीकलितकिनारी॥
मुक्तनकी मरोर मिहरावैं। कोरन लगींललितछविछावैं॥
बिच बिच फूल बेलि बहुभांती। कल चित्रामन हृदय समाती॥
रचे मणिन मय रंग अनेका। स्वर्ण तंतु मिश्रित सविवेका॥
तिन रंगन मय मंगल रूपा। खैंचैं चहुंदिशि चित्र अनूपा॥
छोरन कोरन कुंज किनारी। कुड्मलप्रचुर चहूंदिशि प्यारी॥
त्रिगुनातीत पुनीत चांदनी। निजप्रभावविधिबुद्धिफांदनी॥

तेहिपरचहुँदिशिगिलिमबिछाये। अति कोमलजसबेदनगाये ॥
चुन्नी मानिक चारु पिरोजन। सजीं कोरकृतकनकसरोजन ॥
ऋतु अनुकूल सपर्सित सोहैं। बिछे मोद प्रद रतिमनमोहैं ॥
तिनके मध्य राज सिंहासन। तापर प्रभुहितसुरुचिशुभासन ॥
उपवरहण अनूप उपमाके। ललीलाल प्रिय पर सुखमाके ॥
पृष्ठ प्रदेश परम रुचिकारी। शोभाकहतथकितश्रुतिचारी ॥
ललितलिहाफलोकउपमाकिमि। रबिसन्मुख खद्योततेजजिमि ॥
कसींडोरिमनि घुंडिन तानी। दुहुँदिशिप्रभासउमगिथिरानी ॥
शुचि सौरभ सम्पादक प्यारे। लसैं युगुल छबि कोषअगारे ॥
उपतकियादुहुं दिशिसुखमूला। युगलललनप्रभुरुचिअनुकूला ॥
किमि बरणौं तिनकीछबिप्यारी। निरखि, अतर्कबुद्धिश्रुतिचारी ॥
अति बरतुलमहराबदार प्रिय। निरखिसुछबिलज्जितसंततश्रिय
उमगे छबि अपार सुख साजे। मुक्तन जटित घुंडिकनराजे ॥
सौरभ शील सुतंत्र एक रस। बिधिहरिहरसंतत जिनकेबस ॥
हैं सताचित आनन्द दिव्य वपु। प्रभुदम्पति तकियातमारिजपु ॥
सिंहासनमहिमा सुखमा जिमि। सुन्दरताउपमान कहौं किमि ॥
जेहिप्रकार प्रभु मारग आवत। सो प्रसंगसुखउर न समावत ॥
हंसात्रिया शुचि प्रज्ञा नामा। सह बिधात्रिप्रभुसंगसुभामा ॥
अति समीप निजआश्रमदेखी। सबिधियुग्म उर हर्ष विशेषी ॥
द्वारभूमि चहुंदिशिसिरदारिनि। खड़ींअमितसजिसौंजहजारनि ॥
नृप कुमार सिरदार छबीले। चहुँदिशि खड़े गुनन गरबीले ॥
सजे नकीब असंखिन डोलैं। स्वर्णदण्डकर गहिशुभबोलैं ॥
अमित प्रकार अश्वगज पांती। खड़ीं चहूंदिशि प्रभु छबिमाती ॥

धनु टँकोर चतुर नृप वारे। प्रभु बन्दन हित खड़े दुवारे॥
नृप कुमार जब चाप चढ़ावैं। कर्ण प्रयन्त खैंचि तेहि ल्यावैं॥
छोड़त रव नभ मण्डल नापैं। चौदाभुवन घोरधुनि व्यापैं॥
धनुषशब्द जब यहिविधि होई। प्रभु बन्दन जानै सबकोई॥
सह परिकर बिस्वाबसु भामा। करै सुनृत्य द्वार अभिरामा॥
द्वादश कोटि दारिका आई। बिस्वाबसु कुलजन्म सुहाई॥
कोटिन नर्त्य सभा रसरासी। महारास रस रसिक उपासी॥
सब सन्नद्ध खड़ीं सजि द्वारैं। प्रभु आगमन सुसमय निहारैं॥
अमित अश्व गज सजे अँबारी। जीन जवाहिर जरकस कारी॥
बहु कोतल सवार बहु सोहैं। खड़े चतुर्दिग प्रभु मग जोहैं॥
धौंसा अश्व गजन सजि गाजैं। बिबिधि यंत्र मनमोहन बाजैं॥
शस्त्री सबिधि सजे बहु सोहैं। करैं बीररस नृत्य रिझोहैं॥
सखा रूप जे सखी सयानी। अश्व अनीक प्रमुख्य प्रधानी॥
गज सवार जे राजकुमारी। सखारूप दम्पतिहिं पियारी॥
निज २ अनी अनूपम साजी। बिबिधि व्यूह रचि २ गजबाजी॥
बीर नृत्य पटु परमप्रबीनी। अस्त्रशस्त्र कृत कला नवीनी॥
करैं वीर रस नृत्य सम्हारी। भ्रमसम विषम शस्त्र गतिधारी॥
जे धनु कला प्रवीन सुहाये। राजकुमार अनीक बनाये॥
तिनमें नृपकुमार प्रभु प्यारे। जे सिरदार वंश उजियारे॥
शोभितचहुंदिशि सेन सम्हारी। कर कोदण्ड अधिक छबिकारी॥
रचि २ बिबिधि व्यूह सुकुमारे। सजे सुखेन अश्व असवारे॥
बीर नृत्य कोदण्ड कलावित। प्रभुहिं समर्पन चाहभरेहित॥
करि २ प्रभुहिं जुहारि सुशीले। खड़े चहुंदिशि छैल छबीले॥

कोटिन सजे निशान दुवारे। तिमिरभान जनु भानुकतारे॥
दधि रोचन फल फूल प्रधाना। मंगलमूल बस्तु सजिनाना॥
भरि २ भामिनि कंचन थारा। खड़ीं अमित सजि गोपुरद्वारा॥
गावहिं गीत पुनीत अनूपा। जयदम्पति रघुकुल मणिभूपा॥
यहिप्रकार प्रभु मारग आवत। श्रीललनादिनिरखिगुनगावत॥
प्रभु सुखपाल बाल छबि प्यारी। निरखहिं सकल जायँबलिहारी॥
जयति २ प्रभु यान नागरी। मुक्ति भुक्ति बरदान आगरी॥
इनकी कृपा सहज प्रभु पावै। श्रीरघुराज युगलपद ध्यावै॥
प्रभु सुखपाल चलत सुकुमारी। बर्षहिं मृदुमुक्तामनिप्यारी॥
लूटहिंचहुंदिशिसुख अधिकारी। निन्दि इन्द्रपद मोदप्रचारी॥
यहिविधियुगुलललनछबिअंशी श्रीमिथिलेश कुमरि रघुवंशी॥
यहि प्रकार प्रभु गोपुर द्वारे। आवत भये युगुल सुकुमारे॥
प्रभु बंदन धनु शब्द अपारा। लगे होन बहु मंगल चारा॥
श्रीललना भव भामिनिजेती। बरषहिं कुसुम कलितनवतेती॥
मंगल देव बधू मिलिगावहिं। विविधि रंग कौतुकदरसावहिं॥
विविधि कुतूहल कोबिद माचैं। हास्य बिदुषकरिइंगित नाचैं॥
जय जय शब्द सुखदसब करहीं। प्रभुदम्पतिछबिलखिमुद भरहीं॥
वर्षहिं रंग सुगंध अपारा। रहैगगन मिलि श्रवै न धारा॥
उन्नत योजन एक उंचाई। सुरँग बितान द्वारछबिछाई॥
नव सौरभ सुघटित चहुँओरी। वरणिकहौंकिमिममतिथोरी॥
तेहितेपूरब दिशि मुख शोभित। जेहिलखिभवविरंचिमनलोभित॥
सौरभरंग बितान करोरी। तेहि नीचेजनु तनित सरोरी॥
श्रगन मिलित अस्तवकअपारा। चहुंदिशिमिलितबितानसधारा॥

माणि मुक्तन निर्मित महरावैं । बनी चहूँदिशिअतिछवि पावैं ॥
कोटिन कनकदंड चहुँओरी । तिनपर तनित बितानबहोरी ॥
ते छबिदंड अखंड प्रभा मय । जिनहिंनिरखितमतोमहोतलय ॥
बिबिधि मणिनमंडितसुखरासी । मुक्तन जटिन प्रभाउपभासी ॥
दंड प्रत्येक इन्दु उपमा किमि । सबहिंतेजप्रद कोटिचंदजिमि ॥
तेहि नीचे चांदनी बिछाई । कोटिचंद निंदक छबिछाई ॥
हंस बधू आश्रम गोपुर कर । उत्तर दिशि वर द्वार तेजपर ॥
कंचनमञ्चजटितमनिमानिक । चहुंदिशियोजनपंचप्रमानिक ॥
तेहिपर अतिअनूप सिंहासन । लसत ससौरभ मध्यबरासन ॥
कछुककालतहंरघुकुलनायक ।सहितप्रियानिजजनसुखदायक ॥
परम कृपा करि सहज बिराजे । प्रभुबिछुरनि दुखसबकेभाजे ॥
उज्ज्वल सखा भीर रस रासी । प्रभुहिंबिलोकहिंरूपउपासी ॥
जे नृप कुमर अनीकप प्यारे । तिनसादर प्रभु आइ जुहारे ॥
करि २ युगल जुहार अनन्दे । युगल ललनसरसिजपदबंदे ॥
खड़े जोरि कर कोटिन सुन्दर । नहिं उपमा सम रंच पुरंदर ॥
वीर नृत्य हित बिनय सुनाई । हर्षे सुनि प्रभु रजा सुहाई ॥
करि२ प्रभुहिं जुहार सप्रीती । निज२ सेन गये जस नीती ॥
प्रथम यंत्र धुनि आयसुदीन्ही । निज२निकटअनीसमकीन्ही ॥
सबके बसन लसनि अवलोकी ।शस्त्रकसनिलखि भयेअशोकी ॥
निज अश्व । चढ़ि२ सुकुमारे । बीर नृत्य हित बचन उचारे ॥
सोसुनिप्रभुछबिनिरखिनैनभरि । करिबन्दन उर युगलरूपधरि ॥
बीर नृत्य कोबिद नृप लाला । दश२ वर्ष बयस सुख माला ॥
सजे सकल नृप बसन सुहाये । भूषणललितअमितछविछाये ॥

शुचि उपान सब पदन सुहाये । कोटिधनदसम्पति लजाये ॥
सरही सजनि सुखद सबकेरी । सुन्दरचित्र बिचित्रघनेरी ॥
हाटक जटित रत्न नूपुर वर । सबके पगन लसतसुन्दरतर ॥
कनक कलितकृतप्रभाअखंडित । चमकनिचतुरतड़ितकहपंडित ॥
कमरबन्द कलकलितं कलाके । स्वर्णसूत्रपट झलकझलाके ॥
कोठा कौस्तुभ पदिक अनूपा । सबके श्रीवलसनिअनुरूपा ॥
बाहुदण्ड मण्डित छबिप्यारे । अंगदादि भूषणछबिप्यारे ॥
पद्मराग मुक्तन मानिकजर । चामीकरकृत कड़े सबनिकर ॥
मिलितत्रिबिधितावीजमनोहर । पहुचिनलसे सुकसे अग्रकर ॥
सबके कटि किंकिनी सुहावैं । ललितमधुर छबिपुंजलजावैं ॥

दो०-मिलिदक्षिण स्कन्धते, बाम भागकटितीर ।
छालैंछबिजालैंजटित, जरकसकनकजँजीर ॥
पुरटकिरणमुक्तनमिलित, रचितकुसुममणिहीर ।
कटिप्रदेश अस्तवकवर, सजेसकलशुभबीर ॥

सो०-जटित जवाहिररङ्ग, कुन्दन जाल सुहावने ॥
अस्त्रन मिलितप्रसङ्ग, सबकेअलउदोतछबि ॥

दो०-रत्नमाल मुक्तनमिलित, नानारङ्ग सुदेश ।
कंचनगुन जालन जटित, सबकेकंठ सुदेश ॥
वरतुल कुंडलमिलितमृदु, मञ्जुकर्णिकाकार ।
सबकेश्रवननिलसनियुत, कसमिसुमुक्तनजार ॥
शुभगशिरन मंडीलमृदु, पेंचनमिलितमरोर ।
बंधीजरकसी मनहुँरबि, उदैभये बहुभोर ॥

कलँगी कलितमंजुछबि प्यारी । सबकेशिरन कनकद्युतिकारी ॥

दो॰-मिलितमुदितमण्डीलते,लटकनिअजबबहार।
तुर्राहिलनि कपोललगि,लसेसकलसुकुमार॥

नाक बुलाकअधिकद्युतिकारी । सबकेबदन मिलितछबिप्यारी॥

दो॰-बस्त्राभूषण शस्त्रगति, सँजे समस्त प्रवीन ।
मिलित बीर शृंगारजनु,रसबशयुगलअधीन॥

यहि प्रकार सबराजदुलारे । प्रभुहित सुखद बीररस धारे ॥

दो॰-चढ़े तुरङ्गनरङ्ग भरि, अङ्गन सजानिअनूप ।
वीर नृत्य कोबिदसकल, करनलँगे अनुरूप॥

नानारंग तुरंग छबीले । सच्चिदघन गुनगन गर्बीले ॥

जीननलसे कसे कटि पेटी । छबि शोभाजनु मिलितलपेटी ॥

दो॰-जेरबन्द सुखकन्द लखि, मंदभईछबिरासि ।
कहँमयङ्ककाबिमदनमद,तड़ितछिनकइकभासि॥

मोहरीं मंजु मुखन मृदुराजैं । द्वै प्रकार शुशिरुचिर बिराजैं ॥

हरित मनिन के फूलन साजी । चामीकर उपरास्मि बिराजी ॥

दूसर पद्मराग मनि मानिक । कनकबेलिबलजटितप्रमानिक॥

मुक्तनलड़ी जड़ी महरावैं । यथारंग जहंजसछबि फावैं ॥

चन्द्रपाट टीका रसरासी । कौस्तुभमनि उपमुक्तनगांसी ॥

सबके मस्तक अतिछबिकारी । होहि सहरशशितेज निहारी ॥

लघु दीरघ मुक्तन के गुच्छा । सजनिशीशसबके रँगसुच्छा॥

कलँगी महामोद छबिमाती । हलकझलकछबि छिटकिप्रमाती

लसनिकरणपुञ्जवसनिबिभासी । मुक्तन जटितबिगतउपमासी ॥

सबके श्रवननिशोभितप्यारी । चहुंदिशि पुरटकिरणद्युतिकारी ॥
मुक्तन जटित ग्रीवकचजाली । बिबिधिरंगरचिस्वर्णप्रणाली ॥
गुलूबन्द चिन्तामणि साजे । सबके ग्रीवन मिलित बिराजे ॥
पुरट जंजीरजटितमणिमाला । सजीं तुरंगनकण्ठ बिशाला ॥
मुक्तनलड़ीं पड़ीं बहुभांती । राकाशशिजनु मिलितजमाती ॥
है कलकंठ पेंच बहुजाती । सकल अश्व प्रति ग्रीवसुहाती ॥
पंचप्रकार हुमेल सुहाई । हरितमणिन आदिक छबिछाई ॥
बीजजाल अरु बेलि बहारैं । कुन्दन जटित अश्वसबधारैं ॥
पूंछप्रणीत पाट पचरंगी । मुक्तन जटित तेज तमभंगी ॥
कनक कुसुममनिपुष्पपिरोजा । तिनपरजटित सुरचितसरोजा ॥
कांकुनिजालनि तम्बनभ्राजे । स्वर्णरचित मणिमुक्तनसाजे ॥
रँगी सुरंग पूंछ रस रूपा । सहसअश्वर छबि मनहुअनूपा ॥
रचित क्षोम कौशेय सुजाली । कनकसूत्रउपमिलितबिशाली ॥
सब अश्वन प्रति अंगनसोहैं । इनछबिसमउपमा जगकोहैं ॥
जीनपोस मृदुमंजु सुहाये । सबके पृष्टदेश छबिछाये ॥
कोमलललितलगाम ललामा । अश्वमुखनशोभितअभिरामा ॥
बनी बिचित्रपुरट गुनजाती । मोहरीमृदुकृत पाट सुहाती ॥
शीतल सुरभि सुगन्ध प्रमाती । जटितबिबिधिमुक्तानगपांती ॥
प्रिय रस्मिन प्रणीत छबिमाती । मिलितबन्दप्रतिबन्दसुहाती ॥
जंघजानु पदनिकट सुप्यारी । बिबिधिपैंजनीसबिधिसवारी ॥
टापन जटित मंजुमणिमोती । चहुंदिशिसुखदछिटकछबिहोती
जीनन मिलित चंवरअतिप्यारे। चारि २ चहुंओर सुवारे ॥
अधिक शुभ्र सौरभउपराते । बद्धमुष्ट मणिकुन्दनमाते ॥

यहि बिधि सजे तुरंग रसीले । भूषण बसन सुजीन कसीले ॥
हींसनिसुखदसुगतिमहिडोलनि ।युगुलनामयुतप्रियरवबोलनि॥
उच्चसुरन हींसनि अतिप्यारी । मिलित नामश्रीअवधविहारी॥
प्रभु रुचि लखि तुरंगरव बोलैं । स्वरमितअमितप्रमानकलोलैं॥
अश्वभृत्य अति चतुर प्रवीने । निज २ प्रभु समीपतिनकीने॥
भये सवार अमित नृपबालक ।कोटिनविष्णुसदृशजगपालक॥
सुरुचि लगामरश्मि करलीनी । यंत्रशब्दआज्ञा पुनि दीनी ॥
सावधान सब राजदुलारे । सोसुनिभयेसाविधि सुकुमारे ॥
पुष्पन छड़ी पानि पचरंगी । जटितकनकमनिमोदप्रसंगी॥
यहि प्रकार गज सावक साजे । महा मत्त गजराज बिराजे ॥
तिनपर राजकुमार अनेका । वीरनृत्य कोबिदसविबेका ॥
चहुँदिशि खड़ीं पाँतिउपपांती । सबप्रकार सज्जित बहुभांती ॥
सुखदतेजनिधि सजीं अँबारी । हाटकमणिकृतकलितसम्हारी॥
तिनपर लसे बितान कसेछवि । छिरव्योमबसिलखिमयङ्कछवि॥
अपर अनेक कुँवर रघुबंशी । फिरहिंचहूँदिशि रूपप्रशंसी ॥
सजिसरदार अनीकप डोलैं । नृत्यभेद वानीबहु बोलैं ॥
अतिप्रसन्न सब राजकुमारा । बीरनृत्य कृत कला अपारा ॥
बार २ निज नाथ निहारी ।प्रकटहिंविविधिकलाअतिप्यारी
सबतुरंग प्रभु रूप उपासी । भरे महामुद मंगलरासी ॥
प्रभु मनकी सब जाननिहारे । युगल ध्यानमधुमद मतवारे ॥
यंत्रन बीर रजा जिमि देही । तिमितुरंगसबशुचिगतिलेही॥
हंस मयूर नृत्य गति चातुर । मुरकनि द्रुत बलन्दपदआतुर॥
चढ़नि चतुर सब राजदुलारे । दृढ़ आसन कृपान करधारे ॥

विविधिव्यूहरचि ब्योमउड़ाहीं। पारावतगति नृत्य कराहीं॥
जे सपर्ण गरुड़ादि बेगअति। भये निरखिगतमानअश्वगति॥
निरखहिं सकल देवगण भारी। चढ़नि विलोकिजायँबलिहारी॥
युद्ध नृत्य तहँ रचहिं बहोरी। करहिं परस्पर भांति करोरी॥
अस्त्र शस्त्र बिद्या विधि नाना। शक्ति केलिप्रचलितधनुबाना॥
अश्वव्यूह विधि रचनिप्रत्येका। छम्बु अग्निअम्बरभुविनेका॥
अंडकटाह अनेक प्रकारा। रचहिं व्यूह पट राजकुमारा॥
निरखि सुखेन लालरघुनायक। दम्पतिप्रभु सबकेशुभदायक॥
दोउ प्रभु विविधिप्रशंसाकीन्हीं। भुविआगमनरजापुनिदीन्हीं
उतरे महि गत सब नृपवारे। प्रभु दम्पति छबि आयजुहारे॥
प्रभुरुचिलखि पुनिभियरणक्रीड़ा॥करन लगेसब अश्वगत ब्रीड़ा॥
प्रथम व्यूहरचना बहु कीन्हीं। विधि प्रपंचकृतअपरनवीनी॥
सरसरिता आराम तड़ागा।कुसुमकुमुदकलिकादिविभागा॥
पादपजाति गुल्म लघु नाना। रचेव्यूहकृत बेलि बिताना॥
शशि सविताउड़गणनभचारी। पशु पर्वत पट पत्र दिवारी॥
परिषा कोट आवरन नाना। सेन सदन नृप ऐन महाना॥
बूटे बेलि कटाव जहां लौं। रचे व्यूह कृत अश्वतहांलौं॥
अश्वव्यूह कृत गजबहुजाती। चीन्हनसकें चतुर बहुभांती॥
नाटक भेद विविध रस लीला। करत भये नृप कुँवर सुशीला॥
इमि नृप कुँवर अश्व असवारा। बीर नृत्यकरिविविधि प्रकारा॥
अति प्रसन्न निजनाथ निहारी। दम्पति प्रभु साकेतबिहारी॥
बीर नृत्य नाना विधि करहीं। दोउप्रभु निरखि हर्षउरभरहीं॥
तब प्रभु अमित जाननृपकारे। कृपायुक्त वर बचन उचारे॥

तजहु तात श्रम सब मम प्यारे । हम प्रसन्न लखिचरित तुम्हारे॥
तुम मम सखा सुखद सबकाला।निजस्वामिनिपद प्रीतिबिशाला
ताते तुम मोहिंअति प्रियलागे। निजस्वामिनि श्रीपदअनुरागे॥
सखासकलतुम दृढ़विश्वासिक। युगलरूप मम नाम उपासिक॥
बिनुमम प्रिया न हम तव प्यारे । हमहिं रहतमम प्रियपदन्यारे॥
जिमिममप्रियमिथिलेशदुलारी। तिमिहमतुमहिनकृतमतिन्यारी
तुम ममसखा सुखद सबकाला । सेन कुंजाजिमि भोजनशाला॥
सेन भुवसु रचित तुमताता ।तुमबिन भोजन मितनसुहाता॥
निज २ अश्व छोड़ि सुकुमारे । आवहु ममसमीप इतप्यारे ॥
प्रभु आज्ञा सुनि राजदुलारे । जे सरदार अनीकप प्यारे ॥
बिगत केलि संकेतिक बानी । बोले सुर प्रणीत सुखदानी ॥
रजा पाय प्रिय यंत्र प्रवादिक । केलितूष्नि संकेत स्वरादिक ॥
लगे बजावन सुनि सब आये । प्रभुसन्मुख युत व्यूहसुहाये ॥
बीर नृत्य संकेत प्रनामा । करी सहर्ष सबनि अभिरामा॥
अश्व छोड़ि निज २ सुकुमारे । पंक्ति प्रपंक्ति खड़े सबप्यारे ॥
पुनि संकेत यंत्र धुनि सुनि रव । मिलित पाद संनद्ध भयेसब॥
निज २ कर करि अग्र छबीले । परिकर बद्ध प्रवद्ध सुशीले ॥
भरे अनन्द अदां अलबेले । युगल रूप रस रसिक नवेले ॥
नृपवर बसन सजनि सब प्यारे। प्रभु कुल उद्भव राजदुलारे ॥
यहिप्रकार सब मिलित सुखारे। प्रभु पद पंकज जाय जुहारे॥
करि २ युगल जुहार सुहाये । दम्पति चरण शीश तिननाये॥
प्रभु परसे कर कमल मनोहर । सबके शीश सहर्ष कृपाकर ॥
पुनि साकेत राज पटरानी । बोलीं प्रभु सोदर सम जानी॥

वत्स कुमर मम परम दुलारे। प्रभुहि समस्त प्राणते प्यारे॥
तुम अवलम्ब हमहिं सबकाला। तबडर हम अनन्य नृपलाला॥
वहिरन्तर प्रभु तुमबिनु लालन। रहैन छिनक अन्य रतिपालन॥
तुमबिन कतहुं न प्रभु पदधारैं। अन्तःपुर तुम संग पधारैं॥
तुम बिन प्रभु हम कहैं अकेले। कहँ ममसखा कुमर अलबेले॥
तुमहिं बिगत जेवनार न भावै। बिनतीकरि कोउ कोटि रिझावै॥
तुम बिन सैन्य भवन नहिंभावै। तुमबिनुनिशिदिनकछुनसुहावै
अश्व प्रष्टि गजराज अंबारी। तुमबिन शस्त्रकेलि नहिंप्यारी॥
बिगत संग प्रभु तब सुखपाला। स्वबश बिहारन परम कृपाला॥
तुमहिं बिगत प्रभु बानिसुहाई। करैं न कतहुं प्रीति रस पाई॥
यदपि होय कोउ प्रीतिप्रवीना। तदपि नतुमबिनुतासुअधीना॥
तुमवितिरिक्त न प्रभु कहुँ बोलैं। वह निरखे प्रभु नैन न खोलैं॥
सुहृद सखा प्रभु अग्रज भाई। तिन वश रहैं नाथ हरषाई॥
सुहृद सखन की बिनु रुख पाये। कछु न करैं प्रभु कोटिउपाये॥
जब प्रिय नर्म सखा कछुमागैं। अग्रज कहिकहि प्रभुअनुरागैं॥
यदपि स्वतंत्र सर्ब पर स्वामी। तदपि रहैं अग्रज अनुगामी॥
मोहिं अधिक मम अग्रजप्यारे। जिनके बल हम सबिधिसुखारे॥
अग्रज २ नित प्रभु गावैं। अग्रज रति मति तुमहिंदृढ़ावैं॥
अग्रज मान मान निज मानैं। कहुं अग्रज अपमान न ठानैं॥
हम निज अग्रज नित्य दुलारे। इमि प्रभु सुखद वचनअनुसारे॥
हम निज अग्रज अङ्क पधारैं। छिननहिं उतरि कतहुंपगधारैं।
हम निज अग्रज संग सुहाये। भोजन एक थार परसाये॥
अग्रज सहित नित्य हम पावैं। बिनु अग्रज नहिंप्रियरसगावैं॥

अग्रज कर हम बसन सुहाये। पहिनि सहर्षअधिकप्रियभाये॥
मोहिं अग्रज भूषण रस रूपा। पहिनावैं प्रति अंग अनूपा॥
चारु चौतनी ममशिरधारी। उन्नत प्रियं जरकसीकिनारी॥
कानन कलित कनक कुंडलबर। अलिन कोषसंमिलितबनजधर॥
बरतुल श्रवण निचहुंदिशिप्यारे। हरित पीत सित मुक्तन वारे॥
नक मुक्ता छवि रस अवगाही। पानिप मद पूरित सु सुसाही॥
रुचिर कपोलन मद मतवारी। मकर पत्रिका मिलित सँवारी॥
श्यामबिंदु वर मध्य दिठोना। जंत्रित मृदकज्जलकृत लोना॥
चिबुक चारु चित्रित रंगगहरी। उठहिं प्रभिन्न प्रभाछबि लहरी॥
कंठमाल मृदुमंजु मणिन वर। पंचरंग छबिसार सीम पर॥
बिगत भार युग मुक्तन हारा। उर प्रदेश छविपुंज उदारा॥
कंठ ग्रीव सुवेष अनूपा। अग्रज करन मिलितअनुरूपा॥
बक्षस्थल प्रमध्य मम राजै। कौस्तुभमिलितपादिकछ्बितिभ्राजै॥
अंगद अति उदोत उपमागत। भुज सुदेश सुघटित सुप्रभारत॥
कांति कटक कल कीरतिकामद। अग्रजकरममकरनिसुछबिमद॥
कर भूषण अनेक सुखरासी। तेज ओज रत गत उपमासी॥
अग्रज मुदित सुममकर साजे। मिलित महामणि हाटकराजे॥
कटिकिंकिणीअनूप प्रमाणिक। कंचन लड़ीजड़ीमणिमाणिक॥
गौरव गत गुन पुरट प्रतोषे। नूपुर कड़े चित्र रस पोषे॥
मम श्रीपद शोभा अग्रजमम। निरखि होत भूषणयुतगतश्रम॥
पुनि अँगुष्ट पद युगल सुहाये। बरतुल मिलित स्वर्ण पुटभाये॥
श्रीपद तल युग अरुण प्रभामय। लोहित रसउपमाअमानमय॥
मम अग्रजन तदपि नख श्रेनी॥ ललित राग कृत निजमुदभेनी॥

छं०-श्रीपदसुखदसबभांतिभूषितपदिकहकनूपुरबसे
लावण्यललितबिशाललालप्रबालमणिमुक्तनकसे॥
बिकसित कनककलिकावलीमिवघूंघुरूमृदुगुनगसे।
प॰ पृष्टि तल पल २ बिलोकहिंसुहृदगणलच्छणलसे ॥

दो०-यहिप्रकारअग्रजसुखद, सखा सुहृदममसङ्ग।
बदत नित्य प्रभुसख्यरस, नूतन रंग प्रसङ्ग ॥ ।

अग्रज भोर संग मम भरी । सजि सहर्ष गमनैससुरारी ॥
अग्रज नित मम ब्याह करावैं। द्विरागमन करिअति सुखपावैं॥
राज तिलक मम अग्रज साजे । तब हम शुभगनृपासनराजे ॥
हमको महाराज करिजानैं । अग्रज ममअनुशासनमानैं ॥
कोष देश मम सन्तत सेवा । सब अग्रज अधिकारअछेवा ॥
जन पद शुद्ध महल मम गोपुर । अग्रज ममरच्छकसुतंत्र पर ॥

दो०-यहिप्रकार साकेतपति रघुकुलमणिममनाथ।
बदतनित्यआनन्दघन,सुहृदसुयशममगाथ ॥
तव अग्रजतुमवत्स नित,हमहिंसुखदप्रियतात ।
लेहुसकलबांछितबिबिधि,प्रभुकरपरसितगात ॥

यहसुखअकथ लाभअतिपाये । भये सबिधि सबके मन भाये॥
सुनिनिजस्वामिनिश्रीमुखबानी॥ प्रेमाविवश मतिहर्षसमानी ॥
सबके हर्ष निरत रति बाढ़ी । भईसुप्रीति युगल पद गाढ़ी॥
धन्य २ हम निज प्रभु प्यारे । कुल उद्भव सब राजदुलारे ॥
श्रीनिमिकुल मणि राजदुलारी । श्रीरघुवंश प्रभा प्रभु प्यारी ॥
श्रीमुख सुखद रजा अनुरूपा । आवैं भूषण बसन अनूपा ॥

सुनि निदेश अलि जहँ तहँ धाई । हुकुम प्रमान त्वरित लै आई ॥
अलंकार बहुबिधि छविरासी । कर प्रणीत उपमीवप्रकासी ॥
करणविभासिक उरपदबासिक । बनजमहामाणिपुरटप्रकाशिक ॥
बसन बिचित्र अनेक अपारा । नाम रूपश्रुति अकथप्रकारा ॥
गज तुरंग बहु भांति सुहाये । सुनिनिदेशसज्जित बरआये ॥
श्रीरघुबंश महामानि रानी । श्रीमनु बंश भानुछबिदानी ॥
करि सन्मान सखन पहिराये । भूषण बसन आपमनभाये ॥
नाग अनेक नवल मतवारे । बहुतुरंग रँग जीन सँवारे ॥
सबहि मिले निज २ मन भाये । पुनिनिजरुचिप्रभुअपरादिवाये
गज सवार नृप कुमर प्रवीना । यहिबिधिवीरनृत्यसुखदीना ॥
प्रभु दरबार मान तिनि पाये । सब प्रकार उर हर्ष बढ़ाये ॥
श्रुति प्रज्ञा श्रीबिद्या जानो । बामन हंस तिया पहिंचानो ॥
सम्पतिलखिमतिचाकितभुलानी । प्रभुकरदेनि निरखिहरषानी ॥

दो०—यहिमिसकछुदरबारकरि, दम्पतिपरमकृपाल ।
पुनिसुखपालसुपृष्टिप्रभु, गमनेसुखद मराल ॥
बजेनिशाननकीधुनि, नर्तक कबि अनुबाद ।
बिबिधियंत्रसंगीतस्वर, श्रुतिउपमिलितसुबाद ॥

इतिश्रीसाकेलाधीशश्रीमज्जनकनन्दिनीकान्तकृपाछअनन्तश्रीरामलालज्येष्ठ बंधु श्रीमदुत्तरकौशलाधिपराजराजेन्द्रभ्रातात्मज श्रीरघुबंशकुमारलाल श्रीकामदेंद्रमणिदेवजीसुहृदश्रीराघवेंद्रसखाजीकृत श्रीसाकेतनिकुंज अनंत श्रीसीतारामभद्रकेलिकादम्बिनी ग्रंथश्रीसरयूसरिविहारार्था गमनाबिनोद वर्णनोनामषष्ठोमेघः ॥६॥

हंसबधू वामनबटुभामिनि । दुहुंदिशिप्रभुसुखपालसुगामिनि॥
मृदुबतरात मुदितमगप्यारे। युगलललन यहिभांति पधारे ॥
हंसबधू बिश्राम अगारा । तहँ प्रिय सुखदसुथल दरबारा ॥
सो दरबार बिचित्र सुहावा । तासु सुयशअतिप्रथमहिंगावा ॥
प्रथम सुखेनमहलरसरूपा । मध्यस्वर्ण बेदिका अनूपा ॥
तेहिपरप्रभुसुखपाल बिराजे । उच्चनकीब यंत्र बहु बाजे ॥
जयति२धुनिचहुंदिशिप्यारी। उतरी ललीलाल असवारी ॥
भई निछावर बिबिध प्रकारा। मणिगण भूषण बसनअपारा॥
ताम झामयुग जटित बनाये । सुघटितकनकमणिनछबिछाये॥
कलितललितप्रियमध्यप्रदेशा। चित्रित मृदु जरतार सुवेशा ॥
दुहुं दिशि द्वैद्वै दंड सुहाये । कल्पबृक्ष संभव मनभाये ॥
बिबिध रंगमणिपुरटअलंकृत । मुक्तन बेलिकेलि बहुअंकित ॥
दम्पतितामझाम छबिखानी । उपमा अकथ शेषश्रुतिबानी ॥
प्रथमहिंमगसजायप्रभुसेबी । खड़ीं सुखेन यानअधि देवी ॥
दम्पतिप्रभुसन्मुख तिनकीने । तामझाम प्रिययान नबीने ॥
युग आकार एक बपुधारे । तामझाम त्रिभुवन उजियारे ॥
तिनपर प्राणनाथ रघुनायक । अतिप्रसन्नगमने सुखदायक ॥
मुदितयुगलतिनमध्याबिराजे । कुसुमवृष्टि नभमंगल साजे ॥
दंड दंड प्रति बसुबसु देवी । लगीं सहर्षयान उपसेवी ॥
कंठ सुदेश दंड छबिदेहीं । रस छबिसिंधु थाहजनुलेहीं ॥
परत पांवड़े मंगलरूपा । चलत युगलकौशलपतिभूपा ॥
यहिप्रकार प्रभुमारग राजे । चहुंदिशिउज्ज्वलसख्यसमाजे ॥
जेदरबार थम नृपवारे । निरखहिं प्रभुआगमनसुखारे ॥

खड़े सहर्ष जुहारन आगे । अस्त्रशस्त्रवित अतिअनुरागे ॥
पंक्ति प्रपंक्ति अनेकसुहाये । खड़ अग्रकर कमल उठाये ॥
सिरदारिनी प्रथम जे राजें । सख्य शृंगाररूप छबिछाजें ॥
साविधि सखेन समाशुभसाजें । खड़ीं सहर्ष अनेक समाजें ॥
सबके कर अंजुलि रस रूपा । कुसुम सार सौरभ अनुरूपा ॥
सावित्री अनुगत अतिप्यारी । ब्रह्मलोक सुरतिय सुकुमारी ॥
निजनिजपाणिपरमरुचिकारी । द्विद्रव्यकुसुमावलि धारी ॥
खड़ीं अनंतरूप गुणराशिनि । युगुल ललन रघुबीर उपासिनि ॥
सावित्री प्रसन्न चहुंओरी । रचे राज उपकर्ण करोरी ॥
प्रभु प्रसन्न हित केलिअनेका । चित्र बिचित्र एकते एका ॥
निजकररचीं युगल हितलागी । परमचतुर बिधि अङ्गसभागी ॥
यहिप्रकार रघुकुलमणिप्यारे । सभामध्य सब यान पधारे ॥
करहिं जुहार सु बच नृपवारे । प्रभु करकमल शीशतिनधारे ॥
यान शुभासन यान उतारे । बजे व्योम लखि हर्ष नगारे ॥
युगलललन श्रीपतिअधिदेवी । अधिकारिणी स्वतंत्रशुचिसेवी ॥
प्रभु श्रीपद सौरभ मदरानी । दान शील फल चारिप्रधानी ॥
युगलललनश्रीपदजगजानी । सब स्वतंत्र चारि पटरानी ॥
युगल ललन श्रीपद उपरानी । तिन सेवन प्रवीन महरानी ॥
करि२सुभग शृंगारसभागिनि । स्रग सौरभसमर्चिअनुरागिनि ॥
दुहुंदिशिखड़ींकरनसजिभामिनि । प्रभुपदबधुनकिंकिरीनामिनि ॥
प्रभुरुखनिरखहिंलघुगामिनि । रूपराशिकिमिउपमादामिनि ॥
निजश्रीपद सरोज कछु दूरी । गमन बिचारि युगलप्रभुभूरी ॥
चरणसरोज युगल प्रभुप्यारी । पहराईं मृदु रूप उज्यारी ॥

बिछे चित्र उपधान सुहाये। मृदु अभूत दंपति मनभाये॥
तिनपर चरण युगल प्रभुधारे। जन त्रिपाद जय जयतिपुकारे॥
सुमन सौंज रचना पटुप्यारी। कुसुम छड़ी युगजटितसँवारी॥
कोटिमयङ्क किरण समताकिमि। दिनमाणिसमखद्योतग्रामाजिमि॥
तेजपुंज कल मधुर रसीली। युगलललनकरकमलबसीली॥
कुसुम कला कोविद सुनागरी। उभय विविधि गुनरूपआगरी॥
दंपति दुहुँदिशि खड़ीं दवेली। प्रभुकर छड़ी देन अलबेली॥
रुख लखि अतिलाघव तिनदीनी। निजरकर सरोजप्रभुलीनी॥
परत पामड़े चित्रित प्यारे। तिनपर प्रभु मिलियुगलपधारे।
लोचन लाभ सविधिसबपावत। निरखियुगल छबिउरनसमावत॥
यहिप्रकार रघुकुल मणिप्यारे। सिंहासन समीप पगधारे॥
बोले उपनकीब शुभ जानी। बढ़ै उम्र दौलत प्रियबानी॥
श्रुति सुबाद सम्राज महामानी। जय महेंद्र मंडन प्रतापभानि॥
युगल नकीब परस्पर बोलैं। दंपति सम समृद्धि जनु तोलैं॥
श्रीपद प्रिया दिव्य पटरानी। सेवा हित किंकरी प्रधानी॥
खड़ीं चहूंदिशि रूप उज्यारी। पदगति निरखिजाहिंबलिहारी॥
सिंहासन उपमिलित सुहाई। कंचन पीढ़ सुछबि अमराई॥
तेहि ऊपर सुभ्रासन सुन्दर। उपबरहण जनु तेज पुरन्दर॥
प्रथम पीढ़ पद पङ्कज राजैं। चहुँदिशिझांकि किंकरीसमाजैं॥
प्रभुपदप्रिया तुरिततिनलीनी। युगलललन पद सौरभभीनी॥
सिंहासन प्रभु युगल बिराजे। भक्त सुजन करिकृपा निवाजे॥
कामदेवमणि अग्रज भ्राता। लली लाल अनुगतउपत्राता॥
छिननतजाहिंप्रभुयुगलदुलारे। बदनि परस्पर साथ हमारे॥

लाल कहैं हम अग्रजभाई। लली मुदित मम दादा भाई॥
कामदेंद्रमणि अग्रज प्यारे। सब अधिकार स्वतंत्र हमारे॥
लालन मुदित लली सुखपाई। कहैं सुखद मृदु बचन सुहाई॥
ललीकुमार इमि उत्तरदीन्हा। आप प्रथम यह हम सबकीन्हा॥
कोष महल मम गोपुर राई। करिस्वतंत्र निज दादा भाई॥
जे अधिकार अमित ठकुराई। सब स्वतंत्र सुख दादा भाई॥
इमिप्रभु बननि परस्पर प्यारी। अग्रज सुनत जाहिं बलिहारी॥
यहिप्रकार प्रभु संग हजूरी। कामदेंन्द्रमणि अग्रज भूरी॥
कौशलपति प्रभु दम्पति प्यारे। मध्यसिंहासन सुखद पधारे॥
यह छबि लखिअग्रज सुखरासी। युगलललनसँगनित्यबिलासी॥
कामदेंद्र मणि नाम सुहाये। श्रीअवधेंद्र अनुज सुत गाये॥
महाराज रघुबंश दिवाकर। जय श्रीबीरसिंह मम पितुवर॥
जय श्रीरत्न कला मम माता। शुभ्रसुखदयश श्रुति बिख्याता॥
तिनके ज्येष्ठ कुमार यथामति। कामदेंद्रमणियुगलललनगति॥
सिंहासनपर सविधि पधारे। युगलललन रघुबंश उज्यारे॥
युगलललन आगे रतिबाढ़े। कामदेंद्र मणि अग्रज ठाढ़े॥
बहु सरदार अनीकप आवैं। करत जुहार यथाथिति पावैं॥
हरिहर बिधि अवतार रसीले। अघट सख्य रस अंग वसीले॥
भिन्न २ प्रभु सन्मुख आवैं। करि जुहार बहुबिनय सुनावैं॥
प्रभु दरबार मान तिन पाये। खड़े जोरिकर हर्ष बढ़ाये॥
श्रीसाकेत पुरेश राज मनि। दम्पतिछबिअवलोकिभयेधनि॥
दृष्टि द्रव्य सब प्रभुहिं निवेदत। बदहिंजयतिदंपति कौशलपति॥
दंपति प्रभु हित नजरि कराहीं। पृथक २ सब आवहिं जाहीं॥

दो०-युत्थाधिप युत्थेश्वरी, खड़ी अग्र प्रभुपास।
मुख्यगौणदुहुँदिशिअमित,चारुशिलादिकखास॥
सबहिं मिलावत कृपायुत, दंपतिकौशलपाल।
चारुशिलायूथेश्वरी, चारुशीलमणिलाल २॥

नृत्यपरमपद नर्म नागरी। विश्वाबसु कुलरूप आगरी॥
नृत्यकार युग अवध स्वगेही। बर्दराज बुध वेद सनेही॥
वर्दराज बुध वेद स्वनारी। गुण किन्नरी रूप प्रियकारी॥
वर्दराज की गुण किन्नरी। रूप प्रियाहि वेद बुधवरी॥
ते दोउ निज २ तिय स्वधर्मरत। षष्ठि सहस्र २ भये सुत॥
तिनमें ज्येष्ठ पुत्र इक एका। बिश्वावसु अर्लर्चि गुननेका॥
तिनके पुत्र प्रपौत्र अनेका। अकथ प्रताप एकते एका॥
महाराज इच्वाकु राजमनि। अवधनरेशद्वितीयदिनमनिगनि
एकबार दरबार बिराजे। देश देश नृप सहित समाजे॥
जातिवर्ग मनुवंश सुहाये। बैठे सभा रजायसु पाये॥
महाराज हित नजर निवेदिक। इन्द्र उपेन्द्र धनद अवधिपादिक॥
तेहि दरबार समय सब आये। कौशलपुर गोपुर महि छाये॥
तब प्रतिहार समय शुभ पाई। जाइसबिधि सब खबरि जनाई॥
मही महेन्द्र महामणि ईशा। श्रीउत्तर कौशला महीशा॥
श्रीमुख रजा भई यहिभांती। आवैं ससुख इन्द्र उपजाती॥
सुनि श्रीमुख सुमन्त तब भाषी। ल्यावोसविधिनीति निजराखी॥
दशदिक ईश गये रुख पाई। द्वारदेश सँग नृप समुदाई॥
भई रजा अब चलिय बिशेषी। होय यथाथिति प्रभुपद देखी॥
सुनिशत मष सवर्ग सुखमाना। चले साजि मंगल बिधिनाना॥

पहुँचे इमि महेन्द्र दरबारा । परे लकुट इव प्रणति प्रकारा ॥
तब बोले नकीब वर बानी । जय महेंद्रमणि जन सुखदानी ।
सुनासीर धनदादिक देवा । आये करन नाथपद सेवा ॥
सुनि विज्ञप्ति कृपा अवलोके । किये धनद इन्द्रादि विशोके ॥
सानुकूल निज नाथ निहारी । दृष्टि द्रव्य निज २ करधारी ॥
विविधनिछावरसहितनिवेदित। करीनजरिभरि भक्ति अभेदित॥

दो०-बहुडालीजालीखचित, रत्न अनेकप्रकार ।
हरितमंजुमुक्तनजटित,कुसुमनपटितअपार २॥
बिशदमध्यदरबार के, बहुबिधि रचींसम्हारि।
डालींपालीं पीनपर,प्रीति प्रणीति अपार॥३॥

मिलित प्रतीति प्रीति रसरीती ।नजरिनिवेदिप्रभुहिं जसनीती॥
महाराज कौशल महेन्द्र मनि । पूंछीकुशल सबहिंसुतसमगनि॥
इन्द्र उपेन्द्र कुबेर वरुण प्रिय । रहे प्रसन्न कोसजन युतश्रिय।
देवराट वर वत्स हमारे । तुम सब सदा प्राण ते प्यारे ॥
श्रमगत होहु तात सबनीके । सबिधिसुखदआसनप्रियजीके॥
तब सुमन्त निज प्रभु रुखपाये। बिश्वाबसु अलर्चि बुलवाये ॥
तिन तुरन्त प्रभु आइ जुहारे । सबिधिसुयंत्र स्वकीय सिंगारे॥
बिबिधि कलाप अलाप सबेदा । नृत्य गान संभव सुरभेदा ॥
सुनासीर सुनि हर्ष सुमाना । लेहु नृत्यबित उर अनुमाना॥
सभा विसर्जन समय सभागा । दोउ करजोरि इन्द्र असमांगा॥
महाराज प्रभु कीरति गायक । विश्वाबसुअलर्चि सुखदायक॥
मैं प्रभुपद सेवक जगजानै । मोहिंनाथ निज सुतसममानै॥
नाथ मोहिं निज सेवक चीन्हा। स्वर्ग अलभ्य राजपद दीन्हा॥

और नाथ कछु मांगन चाऊं। कृपा दुलार प्यार युत पाऊं॥
प्रभु गायक स्वर्गवी अनेका। दीन्हेउ नाथ एकते एका॥
तदपि युगल रघुवंश दुलारे। प्राणनाथ तिहुँपुर उजियारे॥
युगलललन दम्पतिगुणगायक। विश्वाबसु अतर्क सबलायक॥
जब २ प्रभु अनुशासन पाऊं। विश्वाबसु समेत तब आऊं॥
नाथ मोहिं बिस्वाबसु दीजै। स्वर्ग पताल मही यशलीजै॥
इंद्र गदित निज बचन बिनीती। बिश्वावसु सुनिमानिअनीती॥
प्रभु संकोच न कछु कहिआवे। अतिसंताप न हृदय समावे॥
बिश्वाबसु तन चिते कृपाला। देत भये स्वकण्ठ मणिमाला॥
वत्स तात बिश्वाबसु लालन। जाहु व्योम मम आयसुपालन
इंद्र समीप निवसिकछु काला। पुनि श्रीअवध रह्योप्रियलाला॥
बिश्वाबसु उर प्रीति अपारा। कहँ प्रभु पद कहँ इंद्र बिचारा॥
तदपि उचित अस धर्महमारा। प्रभु आयसु सुख पुंजअपारा॥
दोउ करजोरि नैनभरि नीरा। परे दंड इव पुलक शरीरा॥
देश अनेक रत्न बहु कोषा। दीन्हे बिश्वाबसुहिं नरेशा॥
भूषण बसन अनेक बिधाना। रथ शिविका तुरंग गज नाना॥
रत्न जटित तख्त नामा बहु। ताम झाम हौदाअसंख्यकहु॥
चमर छत्र बहु बिजन अनेका। मुक्तन जटित एकते एका॥

दो०-चिंतामणि कौस्तुभजटित, कंचन मंचअपार।
बिश्वाबसुहिंमहेंद्रमणि, दिये राज उपचार॥

इंद्र उपेंद्र कुबेर बरुण इमि। बिदा भयेबिश्वाबसुसंगजिमि॥
पाये भूषण बसन प्रसादा। चले हर्षि उर अतिअहलादा॥
करिदंडवत प्रभुहिं सबनीके। चले भवन लहि भावतजीके॥

गोपुर वहिर्देश सब आये । पुर श्रीअवध पूजि सुखपाये ॥
अवधराज गोपुर पुर पूजे । मानिधन्य हमसम नहिं दूजे ॥
बहिरन्तः पुर पूजत भये । सबिधि सहर्ष अमित सुखलये ॥
पुनिश्रीबिश्वामित्र पूज्यबिसु। श्रीबशिष्ठ श्रीरंग देव प्रभु ॥
श्रीसरयू पूजन तिन कीन्हा । लोचनलाभ सबनिशुभलीन्हा ॥
बिश्वाबसुचढ़ि दिव्यबिमाना। चले संग इंद्रादिक नाना ॥
करिजुहारसुरनायक आदिक । बैठेमुदित सुखेन स्वजादिक ॥
अवधराज गन्धर्ब महाना । इंद्रसहित नभ कीन पयाना ॥
विश्वाबसु समृद्धि अवलोकी । लगैं भृत्य सम इंद्र बिशोकी ॥
गये इंद्रपुर बिश्वावसु जब । पूजतभये इंद्रयुत सुरसब ॥
अमरावती रहे निश्वर वस । परमस्वतंत्र न शत मखकेवस॥
अब प्रभु सेवन हित इत आईं । बिश्वाबसु दारिका सुहाईं ॥
इंद्र उपेन्द्र प्रिया युत प्यारी । इनते अधिकरूप उजियारी ॥
इनहिं देखिविधितिय सुखमाना। सभामध्य यह चरित बखाना ॥
हंस तिया सुनिअतिहरषानी । सविधि सार संभव सनमानी ॥
यूथेश्वरी नाथ रुचि जानी । दई रजा सुनि नृत्य प्रधानी ॥
बिश्वाबसु दारिका नवेली । नृत्य कलाहि कुशल अलबेली॥
उठीं सहर्षि जुहारि जुहारी । प्रभु दंपति पदकमल निहारी॥
ध्यान प्रमत्त अमितरुचिबाढ़ीं । नृत्य भेद जनु मूरति ठाढ़ीं॥
तब प्रभु रजा भई सब काऊ । बैठेअति प्रसन्न युत भाऊ ॥
तब नकीब प्रिय बचनसुनाये। बैठेसब प्रभु आयसु पाये॥
हंस तियावेधा बर भामिनि । प्रभु आगमन प्रेमपथगामिनि॥
चहुंदिशि फिरैयुगलप्रभुध्यावत।कृत सेवा सुख उर न समावत॥

विविधिसौंज पूजन दंपतिपद। रचैअतर्कवेद तिमिश्रिमिबद ॥
कबहुं हर्षि प्रभु सन्मुखआवैं। कबहुं जाइ कैंकर्य करावैं ॥
प्रभु सन्मुख बहु केलि अनूपा। नृत्यगान दंपति अनुरूपा ॥
अद्भुत रस अनन्त पथ चारी। होयँ कुतूहल प्रभु मनहारी ॥
नृत्य भेद नागरि बहु करहीं। दंपति रुचिर मायरस भरहीं ॥
बिश्वाबसु कुल कुँवरि नवेली। गुण महिभूपरूप अलबेली ॥
दंपति रुख लखि २ रसरूपा। करैं नृत्य युत भेद अनूपा ॥
हावभाव मूर्छा भ्रम क्रीड़ा। सम गम बिषम नर्म रतिब्रीड़ा॥
उन्नति धृति पदभ्रम समताली। नृत्य वेलि अवरेव मृनाली ॥
बपु संकोच बेग वल उन्नति। मधुरललितसंचरणबधूमति ॥
महाबेग लघु बेग लम्बकर। चित्रपाद लेखन सुरंग भर ॥
कटि विभाव उर कम्प अंग दृग। द्रवन अंग पुनि ग्रीवनैनरँग ॥
ग्रीव प्रमाद बिहार चिबुक बल। कम्पकपोल लोललोचनचल॥
कचप्रतोषप्रसरनि लटकनिघन। भौंह बंक पलकनबिहारबन ॥
अधर विमर्श प्रमर्श मन्दरव। मन्दस्मितिउत्थानसुअनुदव॥
करप्रलम्ब त्रुटलटक लुभावनि। अंगुलि पुट प्रदेशबतरावनि ॥
बपु संकोच वृद्धि सम शीता। द्रुतउच्छलनि उमंग उशीला ॥
गमनग्राम आगमनस्वमंडल। यंत्रबद्ध समरम स्वरमंडल ॥
नूपुर रव सब राग सुगायक। नूपुर शब्द सप्तस्वर दायक ॥
संप्रति लोम विलोम महीतल। हस्याहस्य प्रलोप प्रकटचल ॥
रसमेपला बद्ध पद नाटक। स्वर संगीत भेद उदघाटक ॥
लोक चतुर्दश भेद नृत्य के। अपर अपार सुउक्तिधृत्य के ।
साठिसहस्र दारिका जेती। विश्वाबसु कुल उद्भव तेती

करहिं नृत्य नाना प्रिय लीला । प्रभुहिं रिझावन पटुरतिशीला ॥
करिसुनृत्य दंपतिहिं रिझावें । राज कोष संपति शुभपावें ॥
शुचि बिदूषिका देश देशकी । गुण प्रसस्त बहुअमितवेषकी ॥
प्रभुहिं प्रसन्न करन सब ठाढ़ीं । करैं बिबिधि कौतुकरतिबाढ़ीं ॥
यंत्र अनेक पखावज वीना । जल तरंग स्वर मंडललीना ॥
रोशन नाल रबाब रबाची । सारंगी स्वर मोद सिलाबी ॥
रस मृदंग मुरचंग मँजीरा । मेघदूत अन्तरी समीरा ॥
पणव झांझ करताल तमूरा । ललित नगरियां कुंभ कनूरा ॥
बंशीतार कोष धुनि प्यारी । बहुदेशीय वाद्य गतिन्यारी ॥
अपर वाद्य प्रभु धाम अनेका । श्रुति वच अकथ एकतेएका ॥
खड़े कोटिशत वाद्य प्रवादक । सजे सयंत्र मनहु ब्रह्मादिक ॥
मध्य सभा रघुराज दुलारे । भानु कोटिशत राशिउज्यारे ॥
हर्षिहर्षि निज प्रभुहिं निहारी । लेहिं यंत्र गति मोदप्रचारी ॥
तेहि दरबार युगल प्रियकारी । नारायण त्रिपाद अधिकारी ॥
पुर बैकुंठ ईश अनुरूपा । शुचि सभाम प्रभुभक्तअनूपा ॥
चतुर्व्यूह रघुकुल मणि प्यारे । युगल ललन पद प्रीतिअगारे ॥
बिष्णु रमा बैकुंठ निवासी । परमभक्त रघुवर्य उपासी ॥
महाशंभु सम्मिलित सभामा । श्रीरघुकुलमणिभक्तललामा ॥
अपर उर्द्ध बैकुण्ठ अनेका । अर्चि समर्चि एकते एका ॥
उज्ज्वलमणि इव नाम अनूपा । गो लोकेश द्विभुजप्रियरूपा ॥
श्रीरघुवर्य भक्त मनबानी । अकथ सख्यरसदर्पअमानी ॥
ये सब उज्ज्वल सख्य रसीले । बत्सलदास्य समय समसीले ॥
चले संग सब निजस्थाना । भूषण बसन सबिधिसजिनाना ॥

निज २ सेन साजि सबभाती। जनअसंख्यजनु उडगनपांती॥
अस्त्र शस्त्रसम वद्धविशाला।अमितयुत्थसजि व्योमनृपाला॥
चतुर्व्यूह दिवि व्योम सभामा। अन्यदन्यजनललितललामा॥
दृष्टि द्रव्य मंगल बसु नाना।चलेसाजिशुभ अमितबिमाना॥
नारायण त्रिपाद नृपराई।दृष्टि द्रव्य बहुभांति सजाई॥
मणिगणविबिधि फूलफलमेवा। रचि २ सविधि स्वप्रभुहितसेवा॥
जे साकेत राज रघुनायक। युगलललनपदप्रीतिअमायक॥
महाशम्भु पर विष्णु सुनागरि। साजिबस्तु बहु संपति आगरि॥
युगललल‌नहितनजरिप्रमानिक। महादिव्यबसुमनिबहुखानिक
श्रीसाकेत महल पथ प्यारे। चलेसकल प्रभु रति मतवारे॥
यहिप्रकार गोपुर नियराने।निरखिमहाछबि अतिसुखमाने॥
श्रीसरयू वर पुलिन अनूपा। साम्राज्य, उपवन रसरूपा॥
पुरटावरण सकल सुखखानी। चिन्तामणि मय भूमिप्रधानी॥
उतरत अति अभूत सुख पाये। भूले निज २ धाम सुहाये॥
यदपि नित्यपुर परम सुहावन।प्रभुदरबार अमित छविछावन॥
चितवहिंचकित सराहि सुबानी। धन्य अवध नित मंगलखानी॥
श्रीसरयू द्रव रूप निहारी। भये प्रेम वश सब नरनारी॥
जोरि जोरि कर अस्तुति करहीं।छबिअवलोकिअमितसुखभरहीं
श्रीसरयू सुअम्ब सिरधारी। करिमज्जनसबसाबिधिसुखारी॥
द्वादश तिलक ग्रीव कंठाश्रित। मुद्रपंच अंग अँग निधृत॥

दो०-धनुर्बाण प्रभुपादुका, युगलललन रघुनाथ।
पूजनकरि निज २ पृथक, सबबिधि भयेसनाथ५

पुनि सरयू पूजन रुचिधारी। नारायण त्रिपाद अधिकारी॥

महाशम्भु पर विष्णु अपरगन। करि सभाम पूजन प्रविष्टमन॥
नारायण त्रिपाद पदराई। अति हर्षित निजप्रियाबुलाई॥
सुनि आयसु सप्रीति उठिआई। श्रीसरयू पूजन बिधिल्याई॥
तबत्रिपाद नायक सहभामिनि। श्रीसरयू सप्रेम पूजीतिनि॥
यहिप्रकार सब पूजनलागे। जेदिवि नृपयुत तियनसभागे॥
अनी अनेक अनीकन जेते। पूजनि श्रीसरयू सरितेते॥
पूजी श्रीसरयू सनेह युत। गोलोकेश सव्यूह वेदन्युत॥
निकटललिततटछबिअनूपअति। पूजहिंश्रीसरयू त्रिपादपति॥
चतुर्व्यूह निज २ भामिनि युत। श्रीसरयू पूजन कृत अद्भुत॥
चन्दन अग सुगन्ध बहुभांती। सौंज अनेक प्रीति उपराती॥
निज २ रुचि सब भोग प्रकारा। अर्पहिंअमितभांति श्रुतिसारा॥
नजरि भेंट बिधि वस्तु अनेका। सुमनजाति बहुरंग प्रत्येका॥
जान अनेक वसन बिधिनाना। भूषणअमित अभूत बिधाना॥
पुनि त्रिपाद भूपति सुखरासी। करी आरती अकथ विभासी॥
गोलोकेश आदि यहिभांती। करहिं आरती अमर प्रपांती॥
यहिबिधि अमरवृन्द रसरीती। करी आरती हर्षि सप्रीती॥
पुनिबिधिप्रणति दंडवत कीन्ही। पुष्पांजुलित्रिपादअधिदीन्ही॥
यहिप्रकार दंडवत किये सब। गोलोकेश सव्यूह विष्णुभव॥
करि पूजा अतिहर्ष समाने। श्रीसरयू दरशन सुखमाने॥
प्रभु दरबार समय शुभ जानी। तजिबिलम्बमतिगमनबिधानी॥
विविधि वसन भूषण तिनसाजे। प्रति अंगन जनु छबिउपराजे॥
चले समस्त जयति रघुनायक। उच्चसुधुनि उचरत शुभदायक॥
चले राखि उर रघुकुल स्वामी। श्रीसीतापति अन्तर्यामी॥

प्रभु रघुवर्य स्वभाव कृपाकर । बरणत चले सप्रीति परस्पर ॥
प्रभु दम्पति सौभाग्य सनेहित । नितनूतन जिमि पुण्यपुंजवित ॥
निजप्रियपुतत्रिपाद पदनायक। कहतसुनतप्रभुचरितअमायक ॥
श्रीसाकेत महल गोपुरवर । कोटिभानु सदृश समृद्धिपर ॥
दूरहिं ते विलोकि छबिरासी । करी प्रणाम त्रिपादबिलासी ॥
यहिप्रकार सब कीन प्रणामा । निरखि सेव्य गोपुर सुखधामा ॥
गये महल गोपुर महि सुन्दर । खड़े जहां शतकोटि पुरन्दर ॥
अमितकोटिविधिविष्णुबिहारी। खड़े असंख्य देव त्रिपुरारी ॥
देखि परस्पर मिले सुखेना । जय रघुबीर कहत मृदुबैना ॥
प्रति ब्रह्माण्ड देव त्रयभारी । अपर हिरण्यगर्भ अधिकारी ॥
प्रभु दरबार करन हितआये । नजरि सौंज नानाबिधि ल्याये ॥
खड़े महल ड्योढ़िन के आगे । मिले एक प्रति एक सभागे ॥
एक एकसन पूंछहिं आतुर । प्रभु दरबार रीति विधिचातुर ॥
मुदित अपर पर पूंछत आवैं । हमहिं सुखेन कहां प्रभुपावैं ॥
एक एक सन देहिं बताई । यहिक्षण प्रभु दरबार सुहाई ॥
जाइ सविधि लोचन फलपाई । निरखहु तात समय सुखदाई ॥
महाभीर प्रभु गोपुर द्वारे । चहुँदिशिसुर जयजयतिपुकारे ॥
श्रीसाकेत महल अनुरूपा । गोपुरेश षोड़श भट भूपा ॥
षोड़श २ प्रति गोपुर कहुँ । वीर धनुर्धर मुख्य अपरबहु ॥
उत्तर गोपुरेश विभु जेते । मुख्यनाम सुनिये शुभतेते ॥
युत महेन्द्रमणि अरु सुभद्रव । देव दिगोत्सवमणि सनेहनव ॥
बिजय भद्र अरु हिरण्य दर्पवर । ईसुवेग पुनि धनुर्वाह पर ॥
अलम् अचिन्त्यगर्भ सुखरूपा । सौरभांगमणि अंग अनूपा ॥

नामअमोघ पाणि अतिनागर। सारँग बपु प्रतापवित आगर॥
अजित कार्मुक पुनः दर्पवित। सुखदतेजनिधि सर्ब सत्वहित॥
चित्ररूप इति षोड़स सुन्दर। इनउपमा किमि कहियपुरंदर॥
विष्णु हिरण्यगर्भ अधिकारी। मिलित्रिपाद अधिपर त्रिपुरारी॥
षोड़ष गोपुरेश जहँ सोहैं। गये तहां मिलि सकल इकोहैं॥
अतिआदर करि मिले सुखारे। षोड़श गोपुरेश प्रभु द्वारे॥
बैठारे समेत आदर सब। उचरत युगलनाम मृदुमुखरव॥
हमअतिप्रभुदरशनअभिलाषी। तिन कर जोरि २ इमि भाषी॥
सुनि सप्रेम तिनके मुखबानी। चले सहर्ष समय शुभजानी॥
पहुँचे प्रभु दरबार सुहाये। करिजुहार मृदु बिनयसुनाये॥
जयति २ रघुबंश प्रभाकर। जयप्रतापवर व्योम दिवाकर॥
नाथमहल प्रभुगोपुरक्षितितल। खड़ेअसंख्यविष्णुभवाबीधिदल॥
प्रभुश्रीपद दरशन अभिलाषत। असह बिलम्ब दीन नतिभाषत॥
हिरण्यगर्भ नायक सुर नाना। महाशम्भु पर विष्णु सुजाना॥
बहु त्रिपाद गोलोक नियन्ता। चतुर्व्यूह सुरसेन अयन्ता॥
खड़े नाथ श्रीपद पंकज वर। नामितग्रीव उर अधिकआसधर॥
प्रभु दरबार मध्य तिमि जाई। इमि महेन्द्रमणि बिनयसुनाई॥
ललीसहितरघुकुलमणि लालन। मंदस्मित सहर्ष जनपालन॥
भई रजा नकीब रुख जानी। बोले उभय जोरि युगपानी॥
जय सर्बज्ञ सुरेन्द्र राज मनि। सर्ब ईशयुत प्रिया वेद भनि॥
तब महेन्द्रमणि गोपुर आये। भई रजा प्रभु बचन सुनाये॥
श्रीमंगल बपु दंपति प्रभुपर। श्रीमुख भई रजाय परस्पर॥
दश २ बर्ष बयस सब पावन। चले हर्षि प्रभु महल सुहावन॥

चलिये अब बिलंब तजिसादर प्रभु कीन्हेउ निजमुखतुम आदर ।
सुनिसमस्त उर हर्ष समाये । विविधिकोषमणि द्रव्य लुटाये ॥
श्रीसाकेत महल गोपुरवर । पूजि सबिधिकरिप्रणातिप्रेमपर ॥
पुनिषोड़श गोपुर आधिनायक । पूजिप्रणतियुतसौंजअमायक ॥
पुनिसजिदृष्टिद्रव्यप्रभुलायक ।श्रुतिप्रतिकथितसुदृष्टिसुभायक ॥
चौकीविविधिजटितमणिहाटक। शक्तिगर्भझालरि रसनाटक ॥
पंचरंग मुक्तन मन हारी । चित्रित चौकिन झालरिधारी ॥
मध्य २ तिमि ललित ललामा । कल किंजल्क सुकृतमणिग्रामा ॥
तिनपरसविधिबिबिधिआकारा। किश्ती कोपर पुरट प्रकारा ॥
तिनमेंविविधिसौंजशुभसाजी। डालीं ललित रमन रसराजी ॥
झीने पट तिन ऊपर डारे । अमित रंग जरकसी किनारे ॥
अपर सुबस्तु अगम मनबानी । जनु बसन्त ऋतु पंच प्रमानी ॥
चलेसाजि सुर सबिधि एकसँगा । युत्थ प्रयुत्थ प्रभिन्नबसन रँग ॥
बजैं अनेक यंत्र गोपुर थल । धनुषशाङ्गकोटिनशतधिङ्गल ॥
खड़े अश्व गज युत्थ अपारा । अघः घंः धुनि सुखप्रकारा ॥
महलद्वार गोपुर क्षितिनाना। सजे पुरट मणि मंजु विताना ॥
बिछे पाट तिन मध्य मनोहर । तेज पुंज चित्रित प्रमोदकर ॥
तिन माँध नटी नृत्य बहु करहीं । रघुपति सुयश गाय मनहरहीं ॥
कोउ बाहर कोउ भीतर ठाढ़े । आवत चलेजात कोउ बाढ़े ॥
यहिप्रकारसजिसबिबिसुजाना। चले हर्षि सुर युत्थप नाना ॥
षोड़श गोपुरेश युत नीके । चले लेन मुद भावत हीके ॥
उचरत युगल नाम रघुनायक। जय श्रीसीताराम अमायक ॥
दो०-प्रभुमहलन शोभालखत, चले जात सुरराज ।

पहुँचे उप दरबार सब, मनहुँ अमित उड़राज।

प्रभु दरबार निरखि सुख बाढ़े । चकितरहे चहुंदिशि सब ठाढ़े ॥
पुनि धीरज धरि समयनिहारी । करत भये प्रणाम सुरझारी ॥
नैन नीर भरि कंपित गाता । परे दंड इव भुवि वपु पाता ॥
पुनि२ हिरण्यगर्भ अधिकारी । करहिं दंडवत प्रभुहिंनिहारी ॥
गोलोकेश त्रिपाद नियन्ता । चतुर्व्यूहपर विष्णु प्रयन्ता ॥
करहिं दंडवत दंड पातसम । नैन वारि भरिभरि बिहायश्रम ॥
महाशंभु आदिक सुरत्राता । करहिं दंडवत पुलकितगाता ॥
यहिप्रकार सब देवदारसजि । पहुँची प्रभुदरबार युगलभजि ॥
मुग्ध मध्य सम वैस सुंदरी । जे त्रिपाद अधि इंद्र पुरंदरी ॥
हिरण्यगर्भ गोलोकविहारी । व्यूह विष्णु पर शिवसुकुमारी ॥
एक बयस सब सखी स्वरूपा । तथा सख्य रसपति अनुरूपा ॥
वत्सल दास्य शृंगार पंचरस । कोउ मिश्रित उर गुप्तरूपवस ॥
प्रभु दंपति दरबार गईं जब । निजस्वामिनिबलगर्भभरींसब ॥
भुवि पंचांग प्रणति सब करहीं । पुनि प्रभु पदसरोजशिरधरहीं ॥
बारबार पुलकावलि अङ्गनि । भरीं युगल रसरूप तरंगनि ॥
युगल युगल करिप्रणतिसुहाईं । खड़ीं हर्ष अति उरनसमाईं ॥
जोरिजोरिकर सुर सुर नागरि । खड़े मृजादिकभिन्नयुत्थकरि ॥
तबप्रभुछबिबिलोकिइंगितलखि । बोलेयुग नकीबमनमुदरखि ॥
जय अखण्ड ब्रह्मांड छत्रधर । श्रीसाकेत महेन्द्र ईश पर ॥
जयति राजराजे द्र युगल प्रभु । ईश समष्टि शरण्यसर्वविभु ॥
होहिं त्रिविधि नित नूतन नाना । हिरण्यगर्भ गोलोक बिधाना ॥
अमित त्रिपादव्यूह बिधिलोका । बसुबैकुंठ शम्भुपद ओका ॥

येदम्पति कटाक्ष उद्भव नित । पालतप्रभुसीतापतिसमहित ॥
प्रभु रक्षित हम रक्षि सदांते । युगलचरण पाये यहि नाते ॥
अंजुलि पुट सुर बिनय सुनावैं । कृपादृष्टि प्रभुयहिमिस पावैं ॥

दो०—सुनि नकीबभाषित बिनय, दंपतिपरमकृपाल ।
दयादृष्टिकरिजानिनिज, कीन्हेंसबहिंनिहाल ॥
प्रभुपूंछी सबसे कुशल, कुशलनाथपदपाय ।
लहेनाहिनिजअवधपति, अभयनिशानबजाय ॥
तबहिरएय गर्भाधिपति, दोउकरजोरिपुनीत ।
करनलगेअस्तुतिसुमति, गद्गद विनयसुनीत ॥

जय रबिबंश अमित रबिकेरबि । शक्तितेजदायक अतर्कछबि ॥
बामभाग प्रभुके अनुरूपा । गौर श्याम धृत तेज स्वरूपा ॥
युगलरूप रसराज राज मनि । होअभेदजिमिकुसुमगंधगनि ॥
अगमरूप दंपति दर्शितअसि । यह प्रयोग माधुर्य केलिलसि ॥
प्रभुअतर्क्याबाधिबिष्णुव्यूहभव । भावगम्यजानत प्रभाव सब ॥
नाम रूप लीला ललाम यश । युगलरूप मम हृदयधामबश ॥
यह बरदान एक रस पाऊं । नाम रूप लीला नित गाऊं ॥
सौलभ्यादि नाथ गुणग्रामा । लहौं सेइ पद सुख प्रभुधामा ॥
जपौं एक रस नाम निरन्तर । जय श्रीसीताराम युगल बर ॥
यहिप्रकार करि बिनय सुहाई । बारबार पुलकावलि छाई ॥
नैन नीर भरि पुलकितगाता । कीन्ह प्रणाम अंगभुविपाता ॥
तब कृपाल रघुकुलमणि नायक । अतिआदरित भक्तसुखदायक ॥
निजकरकमल शीश धरिसुंदर । बैठो प्रिय सुरराज पुरन्दर ॥

सुनि श्रीमुख प्रभु बचन सुहाये। अकथ हर्ष रससिंधु समाये ॥
बैठेमुदित न कछु कहि पारैं। छिन२चरण सरोज निहारैं ॥
दो॰—तब त्रिपाद गोलोकपति, शम्भु बिष्णुपरब्यूह।
करन लगे अस्तुति सुबच,मिलित सुरन्य समूह ॥
जयति नाथ साकेतपति, ईशन पति पति ईश।
मोहिं त्रिपाद बिभूति पद, दान शील बरदीश ॥
जयति अवधपति युगलप्रभु, नित्यअनीहअभेद।
तदपि द्विधा दरशित सुखद, सन्तत भेदनभेद ॥
प्रभुमाधुरी अचिंत्यछबि, उभय भूप रस रूप।
ललितपालित नवलरति,सुगति प्रभिन्नअनूप॥
पंचभूमि जनपद जिते, युग बिभागकरि नाथ।
युगल नृपासन राजिप्रभु, दंपति किय सनाथ ॥
दंपति मङ्गल मोदप्रद, हित रतरूप रशेश।
युगल केलिलावण्य निधि,रूप अगाधिअशेश।
प्रगट केलिअधिकृतलखहिं,आश्रितभावतटस्थ।
उज्ज्वल सख्य तरङ्गसम, दंपति सिंधु उपस्थ ॥
मणिमुक्ता माणिकअमित, तेजपुञ्ज सुखरूप।
सिंधु सुथल रघुबंशमणि, युगल केलि अनुरूप॥
यद्यपि सिंधु अथाह अति, लहै थाहयुत इष्ट।
दंपति नाम ललाम श्री, सीताराम स्वामिष्ट ॥
रसु क्रीड़ाके रमन युग, राज हंस रघुबीर।

॥ सिंधुरूप गुणते लहैं, नाना मणि मतिधीर ॥
तब बैजन्ती श्रग सुमति, पहिरिबसनरसपञ्च ॥
॥ दंपति नवल निकुञ्जप्रभु, सेवैं सम्प्रति सञ्च ॥
नाथकृपा करिदीजिये, अनपायनी सुसङ्ग ।
भक्ति नाम प्रद मधुर रति, भरी सख्यरसरङ्ग ॥
नित्य युगल कैंकर्य मति, वहिरन्तर बरदान ।
पाऊंप्रभुपूजनसविधि, नहिंचाहतकछुआन॥२२॥
बार २ पुलकित शिथिल, भरे बिलोचननीर ।
करिदंडवतत्रिपादअधि महिगतनिहितशरीर २३
अतिकृपालरघुबंशमणि, निजजनपालनबानि ।
मन्दस्मितसुंदरसुखद, बोलेअतिप्रियजानि २४॥
तुममम्प्रियअतिकथननित, पदत्रिपादपरमेश ।
लहोभक्तिममसरसरति, बहुरिहोहुबरदेश २५॥
स्वस्थहोहुआसनसविधि, श्रमबिहायप्रियतात।
बैठेश्रीमुखबचनसुनि, हर्षनहृदयसमात २६॥
निरखि २ रघुबंशमणि, युगलललनसुखमूल ।
चरणसरोज सुगंधमन, मत्तमधुपइवभूल ७२॥
तब बरबिष्णु समय शुभजानी । जोरि पाणि अस्तुति बरबानी ॥
भये हर्षि प्रभु सन्मुख ठाढ़े । करनलगे मुद मंगल बाढ़े ॥
जयतिनवलसौभग नितनूतन । दंपति एक रूप सतचित घन ॥
नित्य अतर्क्य युगलसुखरासी । प्रीति परस्पर गत उपमासी ॥

एक रूप वय एक एक रति ।बचनविभाव स्वभाव एकमति ॥
सुगत प्रमोद बिलोकि भरेरस । महाभाव प्रगटित सनेहबस ॥
बचन बिनोद मोद मदमाते । केलि तटस्थ कुतूहल राते ॥
दक्ष नवल नायक उन्नति रस । सुवश एकते एक होत बस ॥
दक्षिन दयत वान दयतागति । दक्षिनवान कहत संकितमति ॥
प्रीतम देह प्रिया देही सम । प्रिया देह प्रीतम देही रम ॥
श्रीमिथिलेशललीजयस्वामिनि। प्रभुरघुबंशनाथ जयधनधनि॥
जय सौभग सुख संपति दंपति । नित्यमिलनसंकेत अचलमति॥
महाविभवकामद निकुंजनित। बिहरनि प्रभु दंपति रसेश हित ॥
उज्ज्वलरस असंख्य नागरि नव। मध्ययुगललखि मोदलहोकब॥
यह अभिलाष नाथ नित मेरी। होहिं युगलपद पंकज चेरी ॥
श्रीसाकेत अवध मिथिला पर । लहि निकुंज कैंकर्य रहौं घर ॥
श्रीसाकेत राजमणि नागर ।दंपति दान दानि गुणआगर ॥
मनबांछित प्रभुसों वरपाऊं । त्रिबिधिरूपलहि युगलरिझाऊं॥
नाम महानिधिसब सुखखानी। श्रीसीता श्रीराम स्ववानी ॥
द्वादश बर्ण मंत्र रघुनायक। दंपति रूप अभेद उपायक ॥
जपौंसुमतिरतिगति अनन्यपर।जिमिचातृकजलद्विजचकोररर ॥
यह बरदान नाथ मोहिं दीजै । सख्य शृंगार दास निजकीजे ॥
वत्सलरस जब जस प्रभुजानैं। न्यून विभाव न नाथ प्रमानै ॥
गदगद कंठ जोरि युगपानी । बार बार करि बिनय सुबानी॥
परे दण्ड इव प्रणति सुहाये। पुलकगात लोचन जलछाये॥
तब करुणाकर श्रीरघुनायक । लीनउठाय सुजन सुखदायक॥
तुमपर बिष्णुहमहिं अतिप्यारे। भक्त सुखद प्रभु बचन उचारे ॥

मनभावत वर लेहु सुहावन । त्रिविधिरूपरसरतिमति पावन ॥
तुमहिं अभीष्टअपर तोहितेप्रिय । लेहु सहर्ष सविधि संतत श्रिय ॥
अब बैठो प्रिय श्रम अतिपाये । अतिसुकुमार स्वअंग सुहाये ॥

दो०-सुनिश्रीमुखप्रभु बचनवर, बैठे आयसुपाय ।
पुलकगात लोचनसजल, हर्षनहृदयसमाय ॥
गोलोकेश निहारि तब, प्रभु रुख समयपुनीत ।
करनलगेयुगजोरिकर, उठिवरविनयविनीत ॥

जयसाकेत निकेतनिलयनिधि । परमपरेश स्वरूपयुगलबिधि ॥
हम सबके रक्षक सुखदायक । दंपति पदसरोज सबलायक ॥
जय रघुनाथ अनाथ मानप्रद । युगलरूपपर तम सतश्रुतिबद ॥
जय गोलोक दिव्यपद दानी । दानशील प्रभु बिरदबखानी ॥
मैं पायों गोलोक नित्य पद । जपि प्रभु सीताराम नामसद ॥
गौरश्याम अभिरामनवलरति । पगेप्रेम लम्पट नि ष्ट मति ॥
नित्यबिहार बिनोद तेजनिधि । श्रीसाकेत निकुञ्जसर्वसिधि ॥
अकथ रूप सौभग उदोतअँग । भरे परस्पर चाह चित्र रँग ॥
सरस उमंग अभेद केलि थल । हार जीत बिपरीत द्वैतदल ॥
भूषण बसन दर्प निज २ सजि । अंगदवलयअनूपउभयलजि ॥
मन्दस्मित प्रभु बचन श्रोत्ररस । होत परस्पर श्रवणकथनबस ॥
अलंकार पद पानिप रासी । प्रति अंगनछबिप्रकटविभासी ।
बिलुलितमृदु मरीचिमंगलमय । छिटकि अंगप्रतिअंगरंगमय ॥
यहिबिधिप्रभु अलच्यमुदक्रीड़ा । तव परिकर सशंकयुत ब्रीड़ा ॥
लखि अनुताप भक्त भयहारी । प्रगटियुगलकृतसुजनसुखारी ॥

सदा भक्तवत्सल प्रभु दंपति । मानतभक्तऽर्यकिनिजसंपति ॥
निज अनन्य प्रभुको संततगति । जिनकीनहिंरत अन्यईशमति ॥
नित श्रीसीताराम षड़क्षर । युगल मंत्र बिश्वासभारक्षर ॥
युगलनाम हित श्रीसीतापति । युगलरूपलीलागुणदृढ़मति ॥
श्रीसाकेत अवध मिथिलापुर । कामद महल धाममिथिलाघर ॥
जपि श्रीसीताराम षड़क्षर । अर्पै भोग ध्यान रघुवर घर ॥
युगल ध्यान करि भोगलगावे । सब कैंकर्य युगल प्रभुध्यावे ॥
इमि प्रसाद पावे अनन्य वर । अपर मंत्र मंत्रित तजिशुभतर ।
श्रीसाकेत ईश रघुनायक । सेवनीय प्रभु युगलसुभायक ॥
श्रुति मत प्रकट तदपिनरधीहत । प्रभु पद विमुखईशप्रति २ रत ॥
ते नर महा मूढ़ हत प्रज्ञा । पंडित यदपि सार श्रुतिअज्ञा ॥
ते त्रिपाद पद ते च्युत होते । देखे हम असंख्य जन रोते ॥
बँधे प्रकृति बन्धनके गुणते । रजसततम त्रिदोषशिरधुनते ॥
ताते अति कृपाल रघुनायक । दंपति प्रभु अतर्क्यगुनमायक ॥
अब बरदान होय यहि भांती । सबतजि भजनकरौंदिनराती ॥
युगलनाम रघुनन्दनानितप्रति । जय श्रीसीताराम एक गति ॥
जपौं निरन्तर नाह नेह नित । तजि कलित्र रतिदेहगेहावित ।

दो०--भरे बिलोचन नेहजल, कम्पित बैन अधीर ।
कीन दण्डवतदण्डमिव, पुलकावली शरीर ॥
दम्पति रघुपतियुगलपद, प्रीति अनन्यप्रवीन ।
लहौं नाथ सेवा सुमति, सन्ततरहौं अधीन ॥

तब आनन्द कन्द रघुनन्दन । परमकृपाल भक्त उरचंदन ॥
अतिशीतल सौरभित सुहाये । श्रीमुख बचन प्रकटिसरसाये ॥

तात सदा तुम मंगलरूपा । मम पद प्रीति पुनीत अनूपा ॥
सत्य नित्य गोलोक बिभवपद । तासु ईश तुम प्रियसंततसद ॥
पुनि मम पद सरोजरतिदायक । मतिपुनीततवअकथअमायक ॥
हम प्रसन्न निजनिजरुचिरूरे । तुम ममभक्त भावविधिपूरे ॥
करसरोज करि कृपा उठाये । शीश धारि निजहृदयलगाये ॥
बैठे प्रभु रुख जानि सुखारे । बारबार निज नाथ निहारे ॥

दो०-जानिसुअवसरशम्भुपर, पुलकिप्रफुल्लितगात ।
करनलगेअस्तुतिप्रमुद, प्रेम न हृदय समात ॥

जयति युगल दंपतिरघुनायक । सबके प्रभु इच्छितसुखदायक ॥
नौमिनाथ परतम परेश मनि । एक युगल पर रूपभूपधनि ॥
नौमि निरन्तर प्रीति परस्पर । श्रीमिथिलेश लली श्रीरघुबर ॥
चितवनि चारु परस्पर प्यारी । केलि अनूप रूप बलिहारी ॥
नवलकिशोर निकुंज विहारी । नवल मोद प्रद रुचिअनुहारी ॥
अतिअनुराग सुहाग कोषके । उभय भूप बसु भरण तोषके ॥
अवध राजधानी अनूपके । मंडलीक मणि विश्व भूपके ॥
अमित हिरण्यगर्भनायकपति । दंपति प्रभु पुनि एकरूपगति ॥
बहु बिराट ब्रह्मांड अनेका । सबके प्रभु रघुपतिपति एका ॥
पर ऐश्वर्य केलि साकेता । प्रिय माधुर्य अवध रस जेता ॥
उभय केलि रस एकहिं जानै । प्रसिअगम कोइसुगमप्रमानै ॥
यद्यपि सुगम अवध लीलानित तद्यपि बिनुप्रभुकृपालहियकित ॥
महाशंभु पद सुखदस्वस्वामी । पायों जपि प्रभुनामअनामी ॥
अब जो अगम युगलपदसेवा । पुनिअनन्यगतिप्रीतिअछेवा ॥
अतिशयअगमभक्तितवस्वामी । निजस्वारथतजिप्रभुअनुगामी ॥

ते तव प्रिय सन्तत सेवा रत। लहैंयुगलपद तजिप्रबृद्धिमत॥
नाना पथ मत आप प्रमानै। परा भक्ति रत प्रभुगतिजानै॥
जे अनेक मत वाद मत्तगति। ते न लहैं रघुबीरचरण रति॥
वेद त्रिबर्ग तीन पथ तामस। रजसतश्रम श्रमभूलिनतहँरस॥
जिमिपट तंत्व समाय एक रस। होतबिलगगतकछुककालबस॥
कर्म उपासन ज्ञान वेद मत। पटु कर्तृत्व न भाव भक्तिरत॥
तिन प्रभु लहे न श्रम बहु कीन्हे। पुनि २ जन्म मरण दुखलीन्हे॥
बहु मत तंत्व मिलितपटप्रानी। पहिरैं हठि नूतन सम जानी॥
पहिरि २ उर हर्ष समावैं। ऋतु हिमाद्रि त्रयताप मिटावैं॥
अग्निदाहबपुप्रथमहि दहिये।तिमिपरिणाममुक्तिकिमिलहिये॥
ब्रह्मज्ञान आदिक मत नाना। अपर वेद वित धर्म प्रधाना॥
सब निष्फल ऊसर भुविजैसे। बोये अनबोये हित तैसे॥
जिन रघुवर्य युगलप्रभुध्याये। यथा भाव लहि लाड़ लड़ाये॥
सकृतमनुजबपु जीवजातिलहि। ह्वै अनन्य रघुबीर चरणगहि॥
निज स्वरूप अभिमाननिरंतर। पर स्वरूप सेवा प्रियतत्पर॥
नित्यअभीष्ट युगलततसुखशुचि।त्यागिअनर्थमूलस्वस्सुखरुचि
स्वस्सुख मति कृत झूठकल्पना। उलटि होततत्सुख सुखअपना॥
उज्ज्वल रस स्वस्सुखबश होई। है प्रभु अधम उपासक सोई॥
उज्ज्वलमयस्वस्सुख न बनैहठ। बिनास्वदयतबिकलदयतासठ॥
स्वस्सुख चाह चतुर जिनकेमन। पुनि नव सप्त साजिगौरवतन॥
प्रीतममिलनचाहस्वस्सुखहित। मिलतनदयतदाहप्रगटीचित॥
स्वस्सुख चाह अथाह सोईदुख। लही नस्सुखप्रियवातनाहसुख॥
स्वस्सुख नाह बिनानहिंलहिये। तोस्वस्सुखकों तत्सुख कहिये॥

दयताभोग दयत मुक्ताबिधि। यहनिहुँलोकप्रसिद्धस्वतःसिधि॥
सुख सुखिया सम्बन्ध अनादी। यह जानत अनन्य रसस्वादी॥
तत्सुख स्वस्सुख द्वै रति प्यारी। तिनके प्रभु दम्पतिअधिकारी॥
यह अति गुप्तभेद रसरासी। लहैं कछुक रसराज उपासी॥
तत्सुख सुखित उपासक जेते। जिन्हैं युगल प्रियरघुपति तेते॥
अति विविक्त उज्ज्वलरससुच्छा। स्वस्सुखकहतउलटिपदतुच्छा॥
स्वस्सुखहूँकहँ तत्सुख कहिये। तबतियपतिअनन्यगतिलहिये॥
बत्सलदास्यसख्यरसआदिक। बिनतत्सुखसबविगतस्पृजादिक॥
प्रभु को बशीकरण जो चाहै। तत्सुख मंत्र सिद्धि अवगाहै॥
युगल केलिकल स्वस्सुखमानै। निरखि निहालहोय रसछानै॥
बिन स्वस्सुख तत्सुखनहिंसरसै। यद्यपि लहै तदपिपतितरसै॥
यह रस कोष विविक्त भेदअति। लहै रसज्ञ महलप्रविशितमति॥
यह स्वस्सुख तत्सुख मंजुलरस। रहैं सदा दम्पतिप्रभुयहिबस॥
ताहि भूलि स्वस्सुख न चहैजन। करै समर्पण प्रभुहिततनमन॥
नौमि नित्य दम्पति रस आगर। अवधनिकुञ्ज केलिनवनागर॥
नौमि नगर कौशलमहीपमनि। श्यामगौर अनुरूप भूपधनि॥
शरशायकअसिचर्मशक्तिशुचि। अस्त्र शस्त्र विद्याविनोदरुचि॥
सदा सख्य रस संग रंग भर। उरउमंग गज अश्वकेलिचर॥
कन्दुकादि नाना बिनोद सुख। बनउपबनमिलिसखनपायरुख
सख्य कदम्ब बिहार बिहारी। अमितस्वामिनीसदयनिहारी॥
केलिविसर्जन महल पधारे। यह सुख लहि मम नैनसुखारे॥

दो०--संबिधिनाथ कब होहिंगी, यह लालसाअपार।

जयति युगलरघुबंशमणि, दीजियपरमउदार ॥
उज्ज्वल सख्य अभेदभावना । लहौं सकलतजिअपरकामना ॥
युगल रूप सेवा रसरीती । करौं सबिधि सौंजन पर प्रीती ॥
नाम नेह द्वै रूप उपासी । पर स्वरूप निज रूपप्रकासी ॥
दम्पति रहस निकुंज टहल रस । पानप्रमत्त रहौं सन्तत बस ॥
जाते प्रभु दम्पति प्रसन्न नित । लहौं सुमति सौभगसुतंत्रवि ॥

कवित्त - सम्बत् उनीसशतसाठिमें कुवाँर मास शुकुल परीव बार मंगल विचारेहैं । अवधसुधाममें प्रभातसमय सावधानमणि रस रंग नाम युगल उचारेहैं ॥ राम बिरहागिनि में तीनौं तन जारि दिव्य रूपपाय सीताराम ध्यानउरधारेहैं । स्वामी श्रीराघवेंद्र सखा कामदेंद्रमणि सबलोक त्यागि रामलोक को पधारेहैं ॥

॥ अनन्तश्रीरघुबंशमणियुगलललन

वर्ष ग्रंथिः

दो०–श्रीरघुबंशकुमार, प्रगटे जनसुखदाई ।
श्रीकौशलपुरआज, बाजैबिबिधि बधाई ॥

पद बधाई के ।

क्या २ बधाई बजिरही रघुबंश दुलारे की । कौशलनरेश राजमहल गोपुरके ऊपर स्वर सप्त सुखद सजिरही पुरगरज न प्यारे की ॥ अतिसोहिनी मनमोहिनी रवरंग हजारोंसम तर्ज गर्ज लर्ज लटक चोब नगारेकी । सुनि खुश आवाज प्यारी नाचैं प्रमोदकारी आनन्दसें उमा रमादि देव अगारेकी॥ ग्रह ग्रह अनेक मंगल और रोशनी सुहावे उपमा न नजरि आवै नभ चन्द सितारेकी । महलोंमैं पुरट मुक्तामणि दान मान पावैं दुज वर्ष गांठि कामदेंद्र बंधु हमारेकी ॥ बधाई सबहीको अनुकूल बासन्तिक चर अचर मुदित मन दसों दिशि फूले फूल । सुख सम्पति तिहुँपुर सबके ग्रह तदपि अवधि सुखमूल ॥ प्रगटे श्रीरघुबंशराजमणि मिटे बिश्व प्रति कूल । कोशलपुर प्रति गोपुर चहुँदिशि बाजहिं सुरसम तूल॥ कामदेंद्र मणि मुदित मोदलहि बीते उर भवशूल । अवधपुर नौबति बाजि रही । कौशलपति के सदन सुमङ्गल चहुंदिशि गाजिरही ॥ सुनिसुनि सबिधि सुखद सुन्दर स्वर प्रफुलित मुदित मही । चकित चतुर्दशभुवन ईश सब रस बस राज अही ॥ मनमानी सुख सम्पति तिहुँपुर असको जेहि न लही।

कामदेंद्र धुनि श्रवण परत प्रिय कुगति कुतर्क कवही ॥
अवध में नवल बधाई आज । श्रिग चन्दन चित्रम काम
तरु ग्रह ग्रह मंगल साज ॥ ध्वज पताक तोरण त्रिपादलगि
उड़हिं निशान समाज । राजद्वार गज अश्व जान बहु रत्न
शिविकादि अपार खड़े सविधि सज्जित शत्रुंजय अमित
बीर ।शिरताज ॥ सुछबि अलंकृत अन्तर ग्रह सब मुक्तामणि
नवजाति अमित रंग अनुपम उदोत अति रघुनन्दन प्रिय
काज । हाटक तंतु मिलित मंजुल पट मृदु तर नानाभांति
चहुंदिशि तने बिचित्र चित्र रँग लखि लज्जित सुरराज ॥
चामीकर विरचित परदा चिक मुक्तन लड़ी ललाम बँधे माणि
न घुंडिकन मनोरम प्रति गोपुर इमि भ्राज । मुक्तनकी
रचनालंकृत बहु फरसैं बिछीं बितान तने मयङ्क प्रभानिंदर्क
लगि हाटक दण्डदराज । चम्प तार मन्दार कल्पतरु सुमन-
सुनाना जाति विकसित नव मकरन्द मत्त मृदु चहुंकित
बिछे बिभाज ॥ तासु मध्य सिंहासन सुखप्रद शुचि सुन्दर
अनुरूप कामदेंद्र तेहिपर रघुनन्दन निज पितु अङ्क बिराज ।
वर्षगांठिश्रीरामभद्रकी मङ्गलमय मृदु बजति बधाई । तिमि श्री
भरत लषण रिपु सूदनातिहुं बन्धुनकी सङ्गसुहाई ॥ स्वर्णसूत्र सं
मिलितसुभगपटनिजकरपुनिबिधिलीनबड़ाई । पटमहिमाविल्ले
क्रिचतुराननकृतचातुरीनसम्भवपाई ॥ तिहुँपुरतोषकासिंहासन
प्रियतापरपटपधरायसहाई । तीनहुमातुप्रथमपूजितपटपुनि
पितुअवधराजहरषाई ॥ पुनिश्रीरंगपाटमहिषीयुतपूजितपटकी
तिजगछाई । पुनि समस्तरघुबंशिनकेसँगपूजितपटप्रमुदित

दिनराई॥ पुनित्रिपादपतिविष्णशंभुबिधिपूजतभएइंद्रअहिराई। उमारमादिअपरेदवनितियपूजिसुप्रियपटप्रीतिबढ़ाई॥ यहिप्रकारपटपूजिसविधिश्रिगचन्दनधूपदीपसमुदाई। नीराजनकरिरत्नकोषबहुरिधिसिधिसम्पतिअमितलुटाई॥ पुनिरघुनन्दनयुगललललनपदपूजिग्रंथिप्रारम्भकराई। प्रथमग्रंथिरघुबरकिशोरकीदुतियभरतगुनग्रंथिलगाई॥ तृतियग्रंथिगुनलषनलालकीचौथीशत्रुशालमनभाई। बड़ीमातुकरप्रगटग्रंथिलखिजयति २ धुनितिहुँपुरछाई॥ चारहु ग्रंथि चारि फलकी गति जिन निरखी तिन तेहिछिन पाई। बड़ी मातुसमभाग्य शील सुख को पावै श्रुति बिदित बड़ाई॥ जासुअंक रघुबंशराजमनिराम कुमर बैठे हरषाई। मध्य मातुके अंक मुदितमन जिमि श्री भरतलाल निमिमाई॥ तिमि लै अंक कनिष्ट मातु निज शत्रुशालकी बलि बलि जाई। कामदेंद्रयह धन्य आजदिन मंगल अवध प्रमोद बड़ाई॥ मृदुमंजुमधुर बधाइयां सजनी सुधंगनरंगसैं। क्या बजिरहीं सुखसजिरहीं अवधेश सदन उमंग सैं॥ महाराज श्रीसेविताादि श्रीमनुदेव नृप इक्ष्वाकु जेतिनकी सुकीरति वाद्यरवकिधौं भाग्य विभव प्रसंग सें २॥ पूरिततृपाद विभूति श्रवण विनोद शब्द सुदेशके सुख उदित उत्तर कौशला उपमा अभूत असंग सें॥ ३॥ श्रीपक्तिरथ पितु जयतिजय तिमिमातु पुण्य स्वरूपिणी। जिनलहे राम कुमार सुत प्रिय अधिक गंग तरंग से॥ ४॥ लखि कामदेंद्र प्रमुदित नित नूतन बधाई लालकी चाहत निछावरि करन तन धन धाम नवि अँग अंगसैं॥५॥ रस रंग रवराती बधाई

बजनलागी। लालकी सुनि देव तिय नाचनलगीं उठि मुदित द्रुतगति तालकी । इमि अतिउमंग उदोत अंगनि देवराज समेतते हरि शंभु बिधि नाहि अंग सुधि लहि अवधि अवधि सुभालकी ॥ श्रीरामभद्र प्रतोख हित बरछंदवंद बिधानते नानानवल नूतन विहद गावनलगे श्रुति पालकी । नाशा मनी अद्भुत बनी निज बनी। आगम भावकी ॥ यह रसपियूष प्रमत्त पितु तिमि मातु नित सुखजालकी । कानन कनिक किन्जल्क कठुला कटक किंकिनिरसमई पहुँची मनोहर मंजु पदिक प्रमोदरमनिरशालकी ॥ सुठि बसन भूषनरचित पितुके अंकराजतला।डिले मसि विंदु मिलित कुलाह कलँगी कलित मुक्तनमालकी । मरकत नवल शजीवनैन नि लसत कज्जलकी प्रभा जनुजनकलली सुहागवसुकेकोष युग दुति हालकी ॥ नूपुर जटितमनि पद्मराग मयूष पुंजन से पगे लखि कामदेंद्र निहाल छबि रघुलाल चरण प्रबाल की ॥

पुनःबधाई ।

श्रीअवधेशके द्वार बधाई बाजनलागी गावहिं सुन्दरि सुभग सोहिलो अवधि अधिक अनुरागीं । उमारमादि संग मिलि गावैं रघुबर सुजस सभागीं। ॥ सुनि २ श्रीअवध्याधिपदेवीं तीनो अति सुखपागीं । कामदेंद्र श्रीअवधनाथकी विहद दसोंदिस जागीं ॥ बधाई श्रीमद्रघुवंशेस्वरीजी की श्रीसियाजूकी नवल बधाई आज श्रीमिथिलेश पाट महिषीके सबिधि भए सुखराज । प्रगटीं श्रीअवधेश नृपतिके सुतकी

। बिरद निवाज । सुरपति मुदित निसाननये सुठि दीनी चोबदराज ॥ कामदेंद्र हरिहर प्रमोदयुत गावत सहित समाज । बधाई आज लली की नवल बधाई आज ॥ बधाई मृदु मदमोद भरीं । श्रीमिथिलेश नृपति के द्वारे बाजत सुखद घरीं ॥ मनो नव मेघ सविधि रव गर्जित नवनिधि वर्षि परीं । प्रगटीं लली अनूपम अद्भुत श्रीसियजू सुथरीं ॥ कामदेंद्र रघुकुल की स्वामिनि हुइहैं जानिपरीं ॥

॥ बधाई दुलारी लाड़िली सियाजू ॥

माधव मास सुद्ध नौमी तिथि प्रगटीं प्रमुद दियाजू ॥ मुदित महा मिथिलापति रानी पुलकित पुर हियाजू ॥ निमि कुल शुभकीरति सौभगसी रघुकुल जस कियाजू । कामदेंद्र रघुकुल मनि युतलखि बिधिवत सुखलियाजू ॥

पद झूलन के ।

दोउ झूलो ललन रसराज अवध सुख सावन हो । मृदुमुदमादक जुगुलललन निज निज रतिहो । प्रगटिकरिय प्रिय पान प्रमुद सरसावन हो । सुभग ललितकल केलि कुतूहल पावनहो । यह रस अरुण उदोत चकित चितचावन हो ॥ कौशलराजकुमार सुनागर आगर हो । लली परम सुकुमारन पैग सुहावनहो । दम्पति सौभग सम सनेह सुठि गावन हो । श्रीकामदेंद्र मनभावन नित नव सावन हो ॥ दोउ झूलो ललन चितचोर अवध नवनागरहो । मुदित परमप्रिय पाटल राग सुहागन हो निज निज रुचिरहिंडोर ॥ सजि नव

सप्त बिलोकहिं अमित सहेलिनहो ललीलाल दृगकोर। लालन गमन निहारि निविड घनदामिनिहो भए रग अरुण बहोरि ॥ दीजिये लली निदेश लाल अतिशंकितहो जिमि रस अमित चकोर । प्रभु कर पंकज कर धरि चली सुस्वामिनिहो श्रीकामदेंद्र रसबोरि ॥ क्या बहार रँगदार सावन घन बुन्दरीं कामद उपबन निकुंज प्रफुलित कलकंज पुंज तरु अनेक नवल ललित लतिका फल फुन्दरीं । मध्य मंजु वेदिका प्रवालरंग मैं प्रणीत तापर झूलन सुरंग चित्रित मनि सुन्दरीं ॥ झूलत दोउ ललन संग सजि निचोल अरुए रंग तिमि सुदेश सुन्दर मन्दीर चारु चुन्दरीं । सजि सजि सूहीपु शाक करत नाक छविहिं वाक एकओर सखन भीर एक ओर सुन्दरीं ॥ पाटलमनि मय प्रणीत चौरछत्र करसनीत घुमडहि सौरभ प्रमत्त मिलित वहु मलिंदरीं । श्रीराम कुवँर दम्पति की छबि बिलोकि कामदेंद्र नृत्यत विस्वावस युत कोटि २ किन्नरीं ॥ प्रिय घन घुमडि वरसत आज निरखि श्रीरघुवर्य्य दम्पति लसत सुहृद समाज । बजत मधुर मृदंग समसुठि अमित जंत्र दराज ॥ लेत उपज अलाप मुदित बिलोकि निज शिरताज ॥ लालके गुण गण अनूपम लली उपमा काज ललीके गुण अघट सम्पति कों न पाव सुराज । सुनि सुहृद जन गान इमि मृदुहसत दोउ रघुराज श्रीकामदेंद्र बिनोद यह नित अचल बिरद बिराज ॥ आज नवल रंग झूलनै दोउ लाल पधारिये अरुण रंग मनिमंजु मनोरम निरमित [illegible]लने ॥ प्रफलित पाटल बन पुनीत नव श्रीसरजुवर

फूलने । आप अरुण बरबसन बिभूषण धारियरुचि अनकूलने॥ तिमि रघुबंशलाल पटरानीसम निधोल सुख मूलने । सखा सखी सब अरुण रंग लखि देव चकितभए भूलने । जनु श्रावण निकुंज सर प्रफुलित अरुण कंजनव फूलने ॥ चौरछत्र ब्यजनादि अरुणमणि जटित उदोत अतूलने । श्रीकामदेंद्र झूलनि बिनोद नित बढ़ै सुबचन कुबूलने ॥

ब्याह पद ।

आज रघुबंशमणि लाल मिथिलेश ग्रह ब्याह उत्सुकित साज सबिधि मण्डप चले । सकल रघुबंश उद्भव बिबिधि वृन्द करि राज राजेंद्र अवधेंद्र अनुगत भले २ बरुण बसु धनद बिधि बिष्णु शिव इंद्रसुर सजित कल सैन चहुँदिशि दिगंतनरले ३ कौशलाधीश बर कुमर दूलह निरखि कामदेंद्रादि आनन्द पर सुखपले ॥४॥ दूलह श्रीरघुराज दुलारा दुलहिनि श्रीनिमिराज दुलारी १ रूप अनूप श्याम सुन्दर सुठि गौर प्रभा कल कीरति प्यारी १ राजकुमार पीत अम्बर बर अरुण रङ्ग पट राजकुमारी २ छबि उपमा कबि रबि मयङ्क सम क्यों कहि दीन होय मतिहारी ३ कामदेंद्र सुख सुयश चहूँदिशि मिथिला अवध एक बपुकारी ॥४॥ छबीले बना कौशलराजदुलारे ब्याह बिभूषण बसन कसनि असि लसनि अश्व असवारे १ मंजु मौर मुक्ता मंडित नव कुन्दन किरनि केतारे २ अबहीं निकसिगये यहि मारग जगतरूप उजियारे ३ कामदेंद्र नागर श्रीरघुनन्दन निमिबर महल पधारे ॥ ४ ॥ श्रीरघुबरप्यारे कबै सुधि लयहो । श्रीसाकेत निकुंज मध्यप्रिय दंपति

दरशन दयहो ॥ सख्य शृँगारु समाज राजमणि बचनसुधा रसप्यायहो। विरुदगरीबनिवाज लालदोउदीन जानि अपनयहो। जदपि मलीन तदपि अग्रज तब क्यों कामद तरसैहो ॥

॥ मंजुछन्द ॥

प्रीति बिरोध नहीं काहूसे सदगुरुपद अनुरागे हैं १ श्री रघुकुलमणि लली लालके नाम नेह नित पागेहैं २ सावधान हरिगुरु सेवामें मोह नगर तजि भागेहैं ३ कामदेंद्र जिनकी ऐसी मति ते बर सन्त सभागेहैं ४ गार मार सदगुरुकी सहते नहीं इन्द्रपद चहनाहै। प्रगट देव सदगुरु पूजा तजि असद ओर नहिं गहनाहै॥ श्रीरघुकुलमणि लली लाल पद इस प्रकार से लहना है। कामदेंद्र जिनकी ऐसी मति तिनका नेमानि बहनाहै॥ युगल मन्त्र जिनके श्रीमुखतें मुक्ति प्रभामणि पाये। श्रीरघुबीर नेहनातेके भेद भाव दरशाये॥ उऋण नहीं ऐसे सतगुरसे तनमन धन अरपाये॥ कामदेंद्र सतगुरु कृपाल पद सेवो नित सचु पाये॥

॥ श्रीगुरुपरमाचार्य्यचरणभृङ्गेभ्योनमः ॥

* श्रीबधाई मंजुछंद *

श्रीअवधेश शाहजादे की आजु मुबारिकवादी है। खुश अवाज़ नौबत दराजशाह दिल कुशकुन शादी है॥ बख्त बिलन्द हुई रोशन रौनक अफ़रोज़ा गादी है। श्रीकामदेंद्र मिथिला खुशरू अजखुद आंखुज़ादी है।

हम खादिम श्रीसियाललीके हरदम अवध बिहारी सों

बे परवाह रहैं नित ऐंडे क्या गुफ्तन दरबारी सों। कुँवरि सुहाग महल गोपुरके दरदमान हुशियारीसों॥ श्रीकामदेंद्र श्री रामकुमर को खुश रखना दिलदारी सों॥ श्रीरघुबंश स्वामिनी लालन श्रीसीता निशिबासर। जपों नाम श्री राम मिलित मृदु मधुर सुखद सुखमासर॥ श्रीमद्दाम नामहूंते अति अद्भुत अमित गुणाकर। श्रीकामदेंद्र सिय लली नाम नित मुदित पियों निसिबासर॥ श्रीरघुबंश स्वामिनीजी के खास महल गोपुरसे। हरदम आमदरफ्त रक्खे लाड़िले रख आप सुसरसे॥ किसी दिना मेरे कब्जे में आय जावगेपरसे। श्रीकामदेंद्र श्रीरघुबर किशोर फिरि जाना उठि उस दरसे। युगल ललन रघुबर किशोर तिमि श्रीमिथिलेश दुलारी॥ सुछबि हिंडोर मध्य राजत दोउ पाटल पटल बिहारी। भूषण बसन प्रबाल रङ्ग मैं लखि अद्भुत छबिकारी॥ श्रीकामदेंद्र उज्ज्वल मेचक भये उलटि अरुण अनुहारी श्रीरघुराजकिशोर श्याम सुन्दर सुकुमार सुप्यारे॥ मिलित मुदित मिथिलेश लली दोउ मम आँखयन के तारे। मेरे गोद मोद भरि २ नित बैठे राजदुलारे॥ श्रीकामदेंद्र हर्षितसुखैनलखि अद्भुतरूपउज्यारे॥

श्रीमिथिलेशनन्दिनीजीके द्वार सदा हम रहते हैं। इस घमण्डमें भरे नहीं कुछ श्रीरघुबरसे चहते हैं॥ खुश दीदार अवध लालनका ललकि इसी जां चहतेहैं। श्रीकामदेंद्र आनन्दकन्द का मुदित मंजु कर गहतेहैं॥ युगुल नाम अभिराम कलपतरु जपि अभीष्ट फल पाते हैं। श्रीयुत सीताराम बरण बर पंच बिमल मन ध्याते हैं॥ बिनु श्रीसीताराम नाम

जपिजपि निशदिवस बितातेहैं । कामदेंद्र शिव उक्त बचन यहते नहिं प्रभुपद पातेहैं ॥ श्यामरूपमें पर्गी गौर प्रभु श्याम गौर तन ध्यातेहैं । श्याम गौर अन्योन्य भिन्न नहिं होत बेद बुध गातेहैं ॥ यह रहस्य पूरे सतगुरुसे कोइ बिरले जन पातेहैं । श्रीकामदेंद्र नित गन्ध पुष्पसम सीताराम सुहातेहैं ॥ लली लाल रघुबर किशोर दोउ आज अनूपम राजैहैं । सरयूमध्य हिंडोर मधुर कल अद्भुत खम्भ दराजैंहैं ॥ आप अरुण बर बसन बिभूषण तिमि सुन्दर शिरताजैंहैं । श्रीकामदेंद्र भू व्योम अनल जल अरुण सु युगल समाजैंहैं ॥ श्रीसिता श्रीराम उभय प्रभु दीनदयाल हमारेहैं । सबसे दीन निषाद उपल कपि पतित निशाचर भारेहैं ॥ ताहूमेंकृतसद्म सद्यपराधी तदपि कृपाल उधोरे हैं । कामदेंद्र यह विरद परस्पर संतत दीन पियारे हैं ॥ श्रीसीताबर नाम कामतरु फल अभीष्ट निर्धन के तजि श्रीराम नाम अमृत कित पियत ओस कनकनके । झूठी आस पास बधि पूजत सेइ देव बन बनके ॥ श्रीकामदेंद्र का कहा मानि नर छांड़ि मोह भल मनके ॥

पुनः फुटकरपद ।

सुरतरुडरवा पर हिंडोरवा हर्षि झुलावहिं राजकिशोरवा ॥ चहुं दिशि राजकिशोरी छबि नव अतिरव गावहिं करि सुठि सोरवा । मध्यमुदितरघुबीर सियायुतझुकिझूलतझूलनीचतत्रोरवा ॥ पाटल रँगन मेह उमंगन बर्षत नटत कुहुँकि मृदु मोरवा । श्रीकाम देंद्र श्रीजनकसुता प्रिय झूलहु नितनव भांति करोरवा ॥

झूलत अनूप झूलनि सुखैन बतरात परस्पर मधुरबैन। मिथिलेश कुमरि तब बचन रम्य निश्चित मयंक मुखते अगम्य, सौरभ उदोत राजीव रासिसम सुनतरहूं सुख सबिधि दैन॥ अति सरस सुधासम सानुकूल प्रभु सुबादि सुन सुगत भूल इमि क्यों न बदिये मम प्राणनाथ यह बिरुद बिदित राजीव नैन॥ श्री महरानी सुनैना की दुलारी, नवल रघुबंशमणि की प्राणप्यारी। हजूरी हम ललीके लाल जाने नहीं उनकी कभी कुछ आनिमानै भरे सेखी से बोलैं ए दुलारे॥ हमारी लाड़ली खुद कुल उज्यारी। तमन्ना कुछ नहीं रखते लला से वह देवें भी तो कह देवैं बलासे हमारी शाहजादी के बराबर लियाकत वो, शराकत क्या तुम्हारी॥ मेरा लघु बंधु श्री-राघव दुलारा मगरमैं लाड़िली खादिम तिहारा, इन्हीं कदमों से है मेरा गुजारा रहेवे अपने घर कौशल हजारी। ये श्री कामदेंद्र मणिकी आरजूपै हुकुम होवे मोहर दसखत अनूपै॥ नवल सौभाग्य संपति की सभा का रहूं दरबान दम्पति रुख निहारी॥

नवेलेलालकी दुलही हो।

निमिकुल कमल प्रभाकर स्वामिनि रघुकुल सुख उलही हो। अवध ललन नवनेह ग्रंथिकी कलितकला खुलहीहो॥ निजरुचि रुचिर प्रीति पालनलहि ललन ललकि भुलहीहो। श्रीकामदेंद्र सुकुमार लाड़िली मम शिरकी कुलहीहो॥ राजी रहो रघुराज लाड़िले हमको नहीं कुछ चहना है। आप स्वशील भरत अतिसाधू शत्रुशाल रिपुदहना है॥ लषन

लाले । निसदिन तव सेवक उनसे कहीं क्या लहना है बढ़ा सुहाग जनक तनयनको जिनकी कृपा निबहना है ॥ श्री कामदेंद्र चहिबो हुजूरसे मही छाछिका महनाहै । श्रीसरकार

श्रीरामकुमरजूसों जी नाता श्रीमहाराज साहब श्रीकामदेंद्रमणि श्रीराघवेंद्र सखार्य श्रीपरमरसिक चार्य कृपालजूका ।

अवधधराज पुत्रन प्रमोद मय मुदित सदा सुखपाते हैं ।
श्रीसीतापति पद सरोज बिमुखन घर कभी न जाते हैं ॥
बिधि निषेध मतवाद छांड़िके परा भक्ति मदमाते हैं ।
श्रीकामदेंद्र श्रीरामकुँवर संग सख्य नेह के नाते हैं ॥

पदफुटकर ।

हमारी अलबेली राजकुमारी । रघुकुलबधू श्रीरामपटरानी निमि कुलकी सरदारी । निरखि चकित छबिनाह नेहभरि वारि बिपद निसवारी अचलसुहाग एकरस दंपति गुणगावत श्रुतिचारी ॥ श्रीकामदेंद्र जीवत सिया स्वामिनि तवपद कमल निहारी ॥ महाराज कौशलाधीशवर कुँवरकृपाल सुनीजै । विद्यमान रघुकुलमणि स्वामिनि युगलललन चित दीजै । मेरे धन बल वाह आप दोउ ईश महीश गुनीजै ॥ श्रीकामदेंद्र की सुरति करिय बलिजाऊं बिलम्ब न कीजै ॥ सरयू तट वर बाग बहारैं झूलत श्रीसियावर सुखसझानि पद्म प्रत्युह प्रमोद अपारैं सुरंग चीर पट अरुण सुअंगानि भूषण सकल सुदेस सवारैं ॥ सुरतरु द्रुम नानाबिधि चहुँदिशि कुसुम कलित सुमन अनु- सारैं । श्रीकामदेंद्र अलिअवलि अनेकन झूमत झुकत रुकत

गुजारैं ॥ दोहा ॥ श्रीसीता श्रीस्वामिनी जिनसेई भरि भाय । ताहि मिलैं श्रीराम प्रभु इमि श्रुति कहै सुनाय ॥ श्रीसीतापति प्रभु बिना को पालै हठि दीन, जैसै जल बिनु चीर गति नहिं पालत बिधि मीन ॥ देखो सीताराम बिन अपर नामकी रीति । मृतक संग नहिं लगत यदि करो जन्म भरि प्रीति ॥

श्रीमन्मारुतनन्दनायनमः ।

॥ * अथोपदेश: * ॥

तहां प्रथम याजीवको उत्तमसंस्कार उदयते सामान्य शास्त्र वा सतसंगते सामान्य ज्ञान उदयहोत तब जन्म मरणादिक दुखजानिपरत विशेषज्ञानको सतसंग सर्वसंशय निवर्तकेअर्थ

प्रथमप्रष्न—या जीवको जन्म मरण बारम्बार ताको कारण कहा है । उत्तर मोह ॥

प्रष्न—मोहको स्वरूप का है ।

उ०-जो सत्य आप अपना ताको बिस्मरण अरु असत्य आप अपना ताको माननि ।

प्रष्न—सत्य आप अपना का है । औ असत्य का है ।

उ०-देहको आप मानत देह संबन्धी गृह कुटुम्बादि को अपना मानत सो मोह प्रभाव है ।

प्रश्न-मोहको कारण कहा है ।

उत्तर—त्रिगुण रज सत्वतममयी सनातन माया ।

प्रश्न—माया को नियंताको है ।

उत्तर-परब्रह्म श्रीसीताराम ।

प्रश्न-सो माया कृत मोह कैसे निवर्त होइ ।

उत्तर-जिनकी माया है तिनके शरण होइकै भक्ति करै ।

प्रश्न—शरण कैसे होइ ।

उत्तर-जे श्रीसीताराम तत्व के वेत्ता भलीप्रकारहैं ते मुमुक्षु जीवको ज्ञान विज्ञान को प्राप्त करिके उचित संस्कार करि अपने समाश्रय करि शरणागति देत हैं ।

प्रश्न--ज्ञान का कहा है, विज्ञान का कहावै, उचित संस्कार का सो कहिये । उत्तर-अथ क्रम करिवे उत्तर ।

प्रथमज्ञान ।

जो सांख्य करिके जड़ चैतन्य को बिभाग जानव सो ज्ञान सो विस्तार करिके कहत हैं ।

प्रथम पंचतत्व ।

पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश ये पांच एक एक तत्व ते द्वै २ इन्द्री ऐसे दस तामे पांच ज्ञान इन्द्री पांच कर्मेन्द्री कर्ण नेत्र नासिका जिह्वा त्वचा येते ज्ञानेन्द्रियाणि हस्त चरण गुदा शिष्न मुख येतें कर्म इन्द्रियाणि शब्दस्पर्श रस रूप गन्ध येते पंच विषय मन बुद्धि चित्त अहंकार इत्यन्तःकरण चतुष्टय एतेचतुर्विंशति तत्वात्मक स्थूल शरीर पंच प्राण मनबुद्धि दश इंद्रिय सहित एतत्सप्तदश तत्वात्मक सूक्ष्म शरीर कारण शरीर विद्या अविद्या वासनामय ऐसेत्रीणिशरीराणि तिनतेभिन्न नह्रस्वनदीर्घनस्थूल न सूक्ष्म न स्याम न गौर न स्त्री न पुरुष या प्रकार अलक्ष्य स्वयं प्रकाश सच्चिदानन्द स्वरूप आत्मा ताको बुद्धि करि धारणा मनकरि मननकरन निदध्यास चित्तकरि निरंतर स्मरण अहंकार करि दृढ़ावेश अहमात्माइति ।

प्रश्न--तहां शङ्का अन्तःकरण चतुष्टय जोहै सोऊ जड़है ।

उत्तर-सो सही परन्तु आरूढ़ शाखान्याय है कैसे जैसे कोऊ बृक्षकी सम्पूर्ण शाखा छेदन करणाहै तब एक शाखा पर चढ़ि छेदन करत तैसे जिज्ञासुः अन्तःकरण चतुष्टय बिषे ज्ञान धारण करि आत्मा अध्यास करत जब सिद्ध दशा

होत तब वाहूकी लीनताहै तब न ज्ञान है न ज्ञानी है अरु आत्मा एहू बचन नहीं केवल अनिर्बचनीयता दशाके विषे श्रीसीतारामतत्वका अधिकारहै।

प्र०--पुनःशङ्का कहतहैं कि अन्तःकरण लीन भयो तब निदध्यासादिक कैसे सम्भवतहै।

उत्तर--या शङ्का संभवित नहीं काहेते आत्मा स्वयं प्रकाश है जैसे नक्षत्र शशि दीपक मशाल इन सबनको प्रकाश सूर्य विषे गौणहै जो गौणबस्तु ते कार्यहोय ताकी मुख्यविषे शङ्का असम्भवहै ताते श्रीसीताराम स्वरूपानुभव केवल आत्मविषय है ताते शुद्ध ज्ञान करि अन्तःकरण चतुष्टयादि सर्वप्रकृति कार्यलीन भये पश्चात् शुद्धात्मा शेष रहत तब अधिकारहै।

प्रश्न--या दशा प्राप्तिकी का परीक्षाहै।

उत्तर-स्वपर स्वरूपानुसन्धान यावत ताते परम बैराग्य प्रेमापराभक्ति को उदय निरन्तर तल्लग्न चित्तवृत्तिः शील सन्तोष दया मैत्री आदिक दिव्य गुणनको उदय शुद्ध विज्ञान जानिये।

उचितसंस्कार।

उपदेशिक महान सीतारामजीकेभक्त तिनकरिकै ऊर्द्ध पुंड्रादि श्रीरामायुध तप्त धारण करि।

अरु अन्तःसंस्कार।

श्रद्धा बिश्वास नेष्ठा रुचि ये द्विविधि वाह्यांतर संस्कार भये पश्चाद्भाव भावना सम्बन्ध उपदेश आचार्य करै।

या सम्प्रदायहै।

यह सर्व उपदेश शिष्य अपनी ओरते आधीन होइकै अतिदीनता जो करै तब आचार्य उपदेश करै अरु जो आचार्य अपनी ओरते धनादिक आशा करिकै वा गुरुपना

केलिकरिकै येबातैंकरतफिरै तौमहादोषहै ताते जोआचार्य शिष्य के बिना श्रद्धा प्रीति अपनीओरते करत तहां न आचार्यनको सिद्धहोइ न जिनशिष्यनको उपदेशकरै तिनको सिद्धहोय अरु यह तत्व सहज नहीं है अतिदूरि है कहे सुनेते नेष्ठाबिना श्रीगुरु प्रसन्नता बिना कदाचितिसिद्ध नहीं होय यह सत्य सत्य सत्य जानिये अरु पंच संस्कार बिना अपर जो कछु मरजाद बड़ेन की ताको उल्लंघनकरै तौ प्राप्तीमें बाधकहै ताते आचार्यनके ग्रन्थनको अनुरोध लैके भाव भावना सबै करै बिलच्चण कछु करै तौ सम्भवित करै असम्भवित न करै अरु अपराध नाना प्रकारके प्रकृति बशते होत सहजही ताते डरतरहै जब परम निर्मल ज्ञान होइ तब अपने विषे अपराध जानि परै अपराध बड़ो सबते यही है जो आचार्य्य सब जीवनके हित कर्त्ता तिनके शिक्षा बचनन की अवज्ञा अपने अज्ञानते सो महापातक शीघ्र नहीं मिटत ताते बहुत डरै यहि प्रकारते जब करै तब भाव भावना सबै फुरै भावसंबंध धारणा ॥ श्लोक ॥ ज्ञानस्यचपराकाष्ठाब्रह्मतत्वावबोधनम् । तत्वबोधस्यसासीमा यत्तदानंदनिर्भरः ॥ आनन्दनिर्भरस्यापि सीमाश्रीमद्रघूत्तमे । संबंधभावनोत्पन्ना दृढाप्रीतिस्तुताहृशी ॥ संबंधश्रीमिथिला श्रीअवधनित्यपार्माथिक अखंडएकरस अनुरागादिक दिब्यगुण सुखमामाधूर्य्यानन्द संयुक्त दोऊ समाज तिनविषे जीव आचार्य्यदत्त संबंध चिंतवन करै आवेशपर्य्यंतसिद्धि ।

प्रश्न—का चिंतवन ।

उत्तर—अमुकमे पिता अमुकमे माता अमुकमे भ्राता अमुकमे भगनी याही प्रकार सासुर पक्ष के संबंध चिंतवन करे संबंधानुसार भावना करै तब नित्य परिकरमे युगल सर करिके समीप में प्राप्तहोय ।

श्रीसीताशमभद्रकेलिकादंबिनी का-

शुद्धाशुद्धपत्र ।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
उरम	उरमे	३	५
कसंग	के संग	६	७
लाड़िले	लाड़िली	१०	१८
लाड़िली	लाड़िले	१०	१९
कन्दूक	कन्दुक	१०	२०
कामदेंदु	कामदेंद्र	१५	१७
स्वण	स्वर्ण	१८	१५
सेलैं	खेलैं	२७	१६
सुखंत	सखेन	२८	८
गात	गति	२९	३
ईशाद्धव	ईशोद्भव	३१	[illegible]
नन्दिनिनि	नंदिनि	३५	१०
प्रभ	प्रभु	३९	२
सिंमासन	सिंहासन	४९	१
पय	पथ	५०	१९
उच्चसुर	उच्चसुरन	५४	११
गामिन	गामिनि	५४	[illegible]
यत	यत्र	५५	[illegible]
दश	दिशि	५६	[illegible]
सज्रित	सज्जित	५७	२६
जटिन	जटित	६४	४
याजन	योजन	६४	८
संपति	संपतिहि	६५	१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कोठा	कंठा	६५	६
अल	अमल	६५	१६
शुशि	शुचि	६६	१४
प्रमाती	प्रभाती	६६	२१
माण	मणि	६७	४
रहत	रहित	७०	५
प्यार	प्यारे	७१	१
प्रभ	प्रभु	७१	८
कुसु	कुसुम	७६	५
स्वतन्न	स्वतन्त्र	७६	१७
बनानि	बदानि	७८	७
निश्वर	निश्चर	८२	११
मुद्र	मुद्रा	८५	२०
भाति	पति	८६	२०
चतर्व्यूह	चतुर्व्यूह	८८	१५
मायक	गायक	८८	१४
बि	बित	१००	६
कबही	बही	१०२	१
रक्ष	रथ		८
बिलेकि	बिलोकि	,,	१६
सहाई	सुहाई	,,	२१
कीति	कीरति	,,	२३
बिष्ण	बिष्णु	१०३	१
द	पद	१०८	१५
आखुजारी	आशाहबजादी	१०८	२१
बिपद	पियत	११२	११
निसबारी	नितबारी	,,	१२
कारि	कार	११६	२६